इतिहास(प्राचीन, मध्यकालीन व आधुनिक)
भारत का संविधान व राजव्यवस्था
अर्थव्यवस्था
भुगोल
सामान्य विज्ञान
समसामयिकी (करेंट अफेयर्स)

इतिहास

प्राचीन इतिहास

भारत का इतिहास और संस्कृति गतिशील है और यह मानव सभ्यता की शुरूआत तक जाती है। यह सिंधु घाटी की रहस्यमयी संस्कृति से शुरू होती है और भारत के दक्षिणी इलाकों में किसान समुदाय तक जाती है। भारत के इति हास में भारत के आस पास स्थित अनेक संस्कृतियों से लोगों का निरंतर समेकन होता रहा है। उपलब्ध साक्ष्य सुझाते हैं कि लोहे, तांबे और अन्य धातुओं के उपयोग काफी शुरूआती समय में भी भारतीय उप महाद्वीप में प्रचलित थे, जो दुनिया के इस हिस्से द्वारा की गई प्रगति का संकेत है। चौंथी सहस्राब्दि बी. सी. के अंत तक भारत एक अत्यंत विकसित सभ्यता के क्षेत्र के रूप में उभर चुका था।

सिंधु घाटी की सभ्यता

भारत का इतिहास सिंधु घाटी की सभ्यता के जन्म के साथ आरंभ हुआ, और अधिक बारीकी से कहा जाए तो हड़प्पा सभ्यता के समय इसकी शुरूआत मानी जाती है। यह दक्षिण एशिया के पश्चिमी हिस्से में लगभग 2500 बीसी में फली फूली, जिसे आज पाकिस्तान और पश्चिमी भारत कहा जाता है। सिंधु घाटी मिश्र, मेसोपोटामिया, भारत और चीन की चार प्राचीन शहरी सबसे बड़ी सभ्यताओं का

घर थी। इस सभ्यता के बारे में 1920 तक कुछ भी ज्ञात नहीं था, जब भारतीय पुरातात्विक विभाग ने सिंधु घाटी की खुदाई का कार्य आरंभ किया, जिसमें दो पुराने शहरों अर्थात मोहन जोदाड़ो और हड़प्पा के भग्नावशेष निकल कर आए। भवनों के टूटे हुए हिस्से और अन्य वस्तुएं जैसे कि घरेलू सामान, युद्ध के हथियार, सोने और चांदी के आभूषण, मुहर, खिलौने, बर्तन आदि दर्शाते हैं कि इस क्षेत्र में लगभग पांच हजार साल पहले एक अत्यंत उच्च विकसित सभ्यता फली फूली।

सिंधु घाटी की सभ्यता मूलत: एक शहरी सभ्यता थी और यहां रहने वाले लोग एक सुयोजनाबद्ध और सुनिर्मित कस्बों में रहा करते थे, जो व्यापार के केन्द्र भी थे। मोहन जोदाड़ो और हड़प्पा के भग्नावशेष दर्शाते हैं कि ये भव्य व्यापारिक शहर वैज्ञानिक दृष्टि से बनाए गए थे और इनकी देखभाल अच्छी तरह की जाती थी। यहां चौड़ी सड़कें और एक सुविकसित निकास प्रणाली थी। घर पकाई गई ईंटों से बने होते थे और इनमें दो या दो से अधिक मंजिलें होती थी।

उच्च विकसित सभ्यता हड़प्पा में अनाज, गेहूं और जौ उगाने की कला ज्ञात थी, जिससे वे अपना मोटा भोजन तैयार करते थे। उन्होंने सब्जियों और फल तथा मांस, सुअर और अण्डे का सेवन भी किया। साक्ष्य सुझाव देते हैं कि ये ऊनी तथा सूती कपड़े पहनते थे। वर्ष 1500 से बी सी तक हड़प्पन सभ्यता का अंत हो गया। सिंधु घाटी की सभ्यता के नष्ट हो जाने के प्रति प्रचलित अनेक कारणों में शामिल है आर्यों द्वारा आक्रमण, लगातार बाढ़ और अन्य प्राकृतिक विपदाओं का आना जैसे कि भूकंप आदि।

वैदिक सभ्यता

प्राचीन भारत के इतिहास में वैदिक सभ्यता सबसे प्रारंभिक सभ्यता है जिसका संबंध आर्यों के आगमन से है। इसका नामकरण हिन्दुओं के प्रारम्भिक साहित्य वेदों के नाम पर किया गया है। वैदिक सभ्यता सरस्वती नदी के किनारे के क्षेत्र जिसमें आधुनिक भारत के पंजाब और हरियाणा राज्य आते हैं, में विकसित हुई। वैदिक आर्यों और हिन्दुओं का पर्यायवाची है, यह वेदों से निकले धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों का दूसरा नाम है। बड़े पैमाने पर स्वीकार दृष्टिकोणों के अनुसार आर्यों का एक वर्ग भारतीय उप महाद्वीप की सीमाओं पर ईसा पूर्व 2000 के आसपास पहुंचा और पहले पंजाब में बस गया, और यही ऋगवेद के स्त्रोतों की रचना की गई।

आर्य जन जनजातियों में रहते थे और संस्कृत भाषा का उपयोग करते थे, जो भाषाओं के भारतीय - यूरोपीय समूह के थे। क्रमश: आर्य स्थानीय लोगों के साथ मिल जुल गए और आर्य जनजातियों तथा मूल अधिवासियों के बीच एक ऐतिहासिक संश्लेषण हुआ। यह संश्लेषण आगे चलकर हिन्दुत्व कहलाया। इस अवधि के दो महान ग्रंथ रामायण और महाभारत थे।

बौद्ध युग

भगवान गौतम बुद्ध के जीवनकाल में, ईसा पूर्व 7 वीं और शुरूआती 6 वीं शताब्दि के दौरान सोलह बड़ी शक्तियां (महाजनपद) विद्यमान थे। अति महत्वपूर्ण गणराज्यों में कपिलवस्तु के शाक्य और वैशाली के लिच्छवी गणराज्य थे। गणराज्यों के अलावा राजतंत्रीय राज्य भी थे, जिनमें से कौशाम्बी (वत्स), मगध, कोशल, और अवन्ति महत्वपूर्ण थे। इन राज्यों का शासन ऐसे शक्तिशाली व्यक्तियों के पास था, जिन्होंने राज्य विस्तार और पड़ोसी राज्यों को अपने में मिलाने की नीति अपना रखी थी। तथापि गणराज्यात्मक राज्यों के तब भी स्पष्ट संकेत थे जब राजाओं के अधीन राज्यों का विस्तार हो रहा था।

बुद्ध का जन्म ईसा पूर्व 560 में हुआ और उनका देहान्त ईसा पूर्व 480 में 80 वर्ष की आयु में हुआ। उनका जन्म

स्थान नेपाल में हिमालय पर्वत श्रंखला के पलपा गिरि की तलहटी में बसे कपिलवस्तु नगर का लुम्बिनी नामक निकुंज था। बुद्ध, जिनका वास्तविक नाम सिद्धार्थ गौतम था, ने बुद्ध धर्म की स्थापना की जो पूर्वी एशिया के अधिकांश हिस्सों में एक महान संस्कृति के रूप में विकसित हुआ।

सिकंदर का आक्रमण

ईसा पूर्व 326 में सिकंदर सिंधु नदी को पार करके तक्षशिला की ओर बढ़ा व भारत पर आक्रमण किया। तब उसने झेलम व चिनाब नदियों के मध्य अवस्थित राज्य के राजा पौरस को चुनौती दी। यद्यपि भारतीयों ने हाथियों, जिन्हें मेसीडोनिया वासियों ने पहले कभी नहीं देखा था, को साथ लेकर युद्ध किया, परन्तु भयंकर युद्ध के बाद भारतीय हार गए। सिकंदर ने पौरस को गिरफ्तार कर लिया, तथा जैसे उसने अन्य स्थानीय राजाओं को परास्त किया था, की भांति उसे अपने क्षेत्र पर राज्य करने की अनुमति दे दी।

दक्षिण में हैडासयस व सिंधु नदियों की ओर अपनी यात्रा के दौरान, सिकंदर ने दार्शनिकों, ब्राह्मणों, जो कि अपनी बुद्धिमानी के लिए प्रसिद्ध थे, की तलाश की और उनसे दार्शनिक मुद्दों पर बहस की। वह अपनी बुद्धिमतापूर्ण चतुराई व निर्भय विजेता के रूप में सदियों तक भारत में किवदंती बना रहा।

उग्र भारतीय लड़ाके कबीलों में से एक मालियों के गांव में सिकन्दर की सेना एकत्रित हुई। इस हमले में सिकन्दर कई बार जख्मी हुआ। जब एक तीर उसके सीने के कवच को पार करते हुए उसकी पसलियों में जा घुसा, तब वह बहुत गंभीर रूप से जख्मी हुआ। मेसेडोनियन अधिकारियों ने उसे बड़ी मुश्किल से बचाकर गांव से निकाला।

सिकन्दर व उसकी सेना जुलाई 325 ईसा पूर्व में सिंधु नदी के मुहाने पर पहुंची, तथा घर की ओर जाने के लिए पश्चिम की ओर मुड़ी।

मौर्य साम्राज्य

मौर्य साम्राज्य की अवधि (ईसा पूर्व 322 से ईसा पूर्व 185 तक) ने भारतीय इतिहास में एक युग का सूत्रपात किया। कहा जाता है कि यह वह अवधि थी जब कालक्रम स्पष्ट हुआ। यह वह समय था जब, राजनीति, कला, और वाणिज्य ने भारत को एक स्वर्णिम ऊंचाई पर पहुंचा दिया। यह खंडों में विभाजित राज्यों के एकीकरण का समय था। इससे भी आगे इस अवधि के दौरान बाहरी दुनिया के साथ प्रभावशाली ढंग से भारत के संपर्क स्थापित हुए।

सिकन्दर की मृत्यु के बाद उत्पन्न भ्रम की स्थिति ने राज्यों को यूनानियों की दासता से मुक्त कराने और इस प्रकार पंजाब व सिंध प्रांतों पर कब्जा करने का चन्द्रगुप्त को अवसर प्रदान किया। उसने बाद में कौटिल्य की सहायता से मगध में नन्द के राज्य को समाप्त कर दिया और ईसा पूर्व और 322 में प्रतापी मौर्य राज्य की स्थापना की। चन्द्रगुप्त जिसने 324 से 301 ईसा पूर्व तक शासन किया, ने मुक्तिदाता की उपाधि प्राप्त की व भारत के पहले सम्राट की उपाधि प्राप्त की।

वृद्धावस्था आने पर चन्द्रगुप्त की रुचि धर्म की ओर हुई तथा ईसा पूर्व 301 में उसने अपनी गद्दी अपने पुत्र बिंदुसार के लिए छोड़ दी। अपने 28 वर्ष के शासनकाल में बिंदुसार ने दक्षिण के ऊचांई वाले क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की तथा 273 ईसा पूर्व में अपनी राजगद्दी अपने पुत्र अशोक को सौंप दी। अशोक न केवल मौर्य साम्राज्य का अत्यधिक प्रसिद्ध सम्राट हुआ, परन्तु उसे भारत व विश्व के महानतम सम्राटों में से एक माना जाता है।

उसका साम्राज्य हिन्दु कुश से बंगाल तक के पूर्वी भूभाग में फैला हुआ था व अफगानिस्तान, बलूचिस्तान व पूरे भारत में फैला हुआ था, केवल सुदूर दक्षिण का कुछ क्षेत्र छूटा था। नेपाल की घाटी व कश्मीर भी उसके साम्राज्य में शामिल थे।

अशोक के साम्राज्य की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी कलिंग विजय (आधुनिक ओडिशा), जो उसके जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव लाने वाली साबित हुई। कलिंग युद्ध में भयानक नरसंहार व विनाश हुआ। युद्ध भूमि के कष्टों व अत्याचारों ने अशोक के हृदय को विदीर्ण कर दिया। उसने भविष्य में और कोई युद्ध न करने का प्रण कर लिया। उसने सांसरिक विजय के अत्याचारों तथा सदाचार व आध्यात्मिकता की सफलता को समझा। वह बुद्ध के उपदेशों के प्रति आकर्षित हुआ तथा उसने अपने जीवन को, मनुष्य के हृदय को कर्तव्य परायणता व धर्म परायणता से जीतने में लगा दिया।

मौर्य साम्राज्य का अंत

अशोक के उत्तराधिकारी कमज़ोर शासक हुए, जिससे प्रान्तों को अपनी स्वतंत्रता का दावा करने का साहस हुआ। इतने बड़े साम्राज्य का प्रशासन चलाने के कठिन कार्य का संपादन कमज़ोर शासकों द्वारा नहीं हो सका। उत्तराधिकारियों के बीच आपसी लड़ाइयों ने भी मौर्य साम्राज्य के अवनति में योगदान किया।

ईसवी सन् की प्रथम शताब्दि के प्रारम्भ में कुशाणों ने भारत के उत्तर पश्चिम मोर्चे में अपना साम्राज्य स्थापित किया। कुशाण सम्राटों में सबसे अधिक प्रसिद्ध सम्राट कनिष्क (125 ई. से 162 ई. तक), जो कि कुशाण साम्राज्य का तीसरा सम्राट था। कुशाण शासन ईस्वी की तीसरी शताब्दि के मध्य तक चला। इस साम्राज्य की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ कला के गांधार घराने का विकास व बुद्ध मत का आगे एशिया के सुदूर क्षेत्रों में विस्तार करना रही।

गुप्त साम्राज्य

कुशाणों के बाद गुप्त साम्राज्य अति महत्वपूर्ण साम्राज्य था। गुप्त अवधि को भारतीय इतिहास का स्वर्णिम युग कहा जाता है। गुप्त साम्राज्य का पहला प्रसिद्ध सम्राट घटोत्कच का पुत्र चन्द्रगुप्त था। उसने कुमार देवी से विवाह किया जो कि लिच्छिवियों के प्रमुख की पुत्री थी। चन्द्रगुप्त के जीवन में यह विवाह परिवर्तन लाने वाला था। उसे लिच्छिवियों से पाटलीपुत्र दहेज में प्राप्त हुआ। पाटलीपुत्र से उसने अपने साम्राज्य की आधार शिला रखी व लिच्छिवियों की मदद से बहुत से पड़ोसी राज्यों को जीतना शुरू कर दिया। उसने मगध (बिहार), प्रयाग व साकेत (पूर्वी उत्तर प्रदेश) पर शासन किया। उसका साम्राज्य गंगा नदी से इलाहाबाद तक फैला हुआ था। चन्द्रगुप्त को महाराजाधिराज की उपाधि से विभूषित किया गया था और उसने लगभग पन्द्रह वर्ष तक शासन किया।

चन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी 330 ई0 में समुन्द्रगुप्त हुआ जिसने लगभग 50 वर्ष तक शासन किया। वह बहुत प्रतिभा सम्पन्न योद्धा था और बताया जाता है कि उसने पूरे दक्षिण में सैन्य अभियान का नेतृत्व किया तथा विन्ध्य क्षेत्र के बनवासी कबीलों को परास्त किया।

समुन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त हुआ, जिसे विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता है। उसने मालवा, गुजरात व काठियावाड़ के बड़े भूभागों पर विजय प्राप्त की। इससे उन्हे असाधारण धन प्राप्त हुआ और इससे गुप्त राज्य की समृद्धि में वृद्धि हुई। इस अवधि के दौरान गुप्त राजाओं ने पश्चिमी देशों के साथ समुद्री व्यापार प्रारम्भ किया। बहुत संभव है कि उसके शासनकाल में संस्कृत के

महानतम कवि व नाटककार कालीदास व बहुत से दूसरे वैज्ञानिक व विद्वान फले-फूले।

गुप्त शासन की अवनति

ईसा की 5वीं शताब्दि के अन्त व छठवीं शताब्दि में उत्तरी भारत में गुप्त शासन की अवनति से बहुत छोटे स्वतंत्र राज्यों में वृद्धि हुई व विदेशी हूणों के आक्रमणों को भी आकर्षित किया। हूणों का नेता तोरामोरा था। वह गुप्त साम्राज्य के बड़े हिस्सों को हड़पने में सफल रहा। उसका पुत्र मिहिराकुल बहुत निर्दय व बर्बर तथा सबसे बुरा ज्ञात तानाशाह था। दो स्थानीय शक्तिशाली राजकुमारों मालवा के यशोधर्मन और मगध के बालादित्य ने उसकी शक्ति को कुचला तथा भारत में उसके साम्राज्य को समाप्त किया।

हर्षवर्धन

7वीं सदी के प्रारम्भ होने पर, हर्षवर्धन (606-647 इसवी में) ने अपने भाई राज्यवर्धन की मृत्यु होने पर थानेश्वर व कन्नौज की राजगद्दी संभाली। 612 इसवी तक उत्तर में अपना साम्राज्य सुदृढ़ कर लिया।

620 इसवी में हर्षवर्धन ने दक्षिण में चालुक्य साम्राज्य, जिस पर उस समय पुलकेसन द्वितीय का शासन था, पर आक्रमण कर दिया परन्तु चालुक्य ने बहुत जबरदस्त प्रतिरोध किया तथा हर्षवर्धन की हार हो गई। हर्षवर्धन की धार्मिक सहष्णुता, प्रशासनिक दक्षता व राजनयिक संबंध बनाने की योग्यता जगजाहिर है। उसने चीन के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए व अपने राजदूत वहां भेजे, जिन्होने चीनी राजाओं के साथ विचारों का आदान-प्रदान किया तथा एक दूसरे के संबंध में अपनी जानकारी का विकास किया।

चीनी यात्री ह्वेनसांग, जो उसके शासनकाल में भारत आया था ने, हर्षवर्धन के शासन के समय सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक स्थितियों का सजीव वर्णन किया है व हर्षवर्धन की प्रशंसा की है। हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद भारत एक बार फिर केंद्रीय सर्वोच्च शक्ति से वंचित हो गया।

बादामी के चालुक्य

6ठवीं और 8ठवीं इसवी के दौरान दक्षिण भारत में चालुक्य बड़े शक्तिशाली थे। इस साम्राज्य का प्रथम शासक पुलकेसन, 540 इसवी मे शासनारूढ़ हुआ और कई शानदार विजय हासिल कर उसने शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना किया। उसके पुत्रों कीर्तिवर्मन व मंगलेसा ने कोंकण के मौर्यन सहित अपने पड़ोसियों के साथ कई युद्ध करके सफलताएं अर्जित की व अपने राज्य का और विस्तार किया।

कीर्तिवर्मन का पुत्र पुलकेसन द्वितीय, चालुक्य साम्राज्य के महान शासकों में से एक था, उसने लगभग 34 वर्षों तक राज्य किया। अपने लम्बे शासनकाल में उसने महाराष्ट्र में अपनी स्थिति सुदृढ़ की व दक्षिण के बड़े भूभाग को जीत लिया, उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि हर्षवर्धन के विरूद्ध रक्षात्मक युद्ध लड़ना थी।

तथापि 642 इसवी में पल्लव राजा ने पुलकेसन को परास्त कर मार डाला। उसका पुत्र विक्रमादित्य, जो कि अपने पिता के समान महान शासक था, गद्दी पर बैठा। उसने दक्षिण के अपने शत्रुओं के विरूद्ध पुन: संघर्ष प्रारंभ किया। उसने चालुक्यों के पुराने वैभव को काफी हद तक पुन: प्राप्त किया। यहां तक कि उसका परपोता विक्रमादित्य द्वितीय भी महान योद्धा था। 753 इसवी में विक्रमादित्य व उसके पुत्र का दंती दुर्गा नाम के एक सरदार ने तख्ता पलट दिया। उसने महाराष्ट्र व कर्नाटक में एक और महान साम्राज्य की स्थापना की जो राष्ट्र कूट कहलाया।

कांची के पल्लव

छठवीं सदी की अंतिम चौथाई में पल्लव राजा सिंहविष्णु शक्तिशाली हुआ तथा कृष्णा व कावेरी नदियों के बीच के क्षेत्र को जीत लिया। उसका पुत्र व उत्तराधिकारी महेन्द्रवर्मन प्रतिभाशाली व्यक्ति था, जो दुर्भाग्य से चालुक्य राजा पुलकेसन द्वितीय के हाथों परास्त होकर अपने राज्य के उत्तरी भाग को खो बैठा। परन्तु उसके पुत्र नरसिंह वर्मन प्रथम ने चालुक्य शक्ति का दमन किया। पल्लव राज्य नरसिंह वर्मन द्वितीय के शासनकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा। वह अपनी स्थापत्य कला की उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध था, उसने बहुत से मन्दिरों का निर्माण करवाया तथा उसके समय में कला व साहित्य फला-फूला। संस्कृत का महान विद्वान दानदिन उस के राजदरबार में था। तथापि उसकी मृत्यु के बाद पल्लव साम्राज्य की अवनति होती गई। समय के साथ-साथ यह मात्र स्थानीय कबीले की शक्ति के रूप में रह गया। आखिरकार चोल राजा ने 9वीं इसवी. के समापन के आस-पास पल्लव राजा अपराजित को परास्त कर उसका साम्राज्य हथिया लिया।

भारत के प्राचीन इतिहास ने, कई साम्राज्यों, जिन्होंने अपनी ऐसी बपौती पीछे छोड़ी है, जो भारत के स्वर्णिम इतिहास में अभी भी गूंज रही है, का उत्थान व पतन देखा है। 9वीं इसवी. के समाप्त होते-होते भारत का मध्यकालीन इतिहास पाला, सेना, प्रतिहार और राष्ट्र कूट आदि - आदि उत्थान से प्रारंभ होता है।

मध्यकालीन इतिहास

आने वाला समय जो इस्लामिक प्रभाव और भारत पर शासन के साथ सशक्त रूप से संबंध रखता है, मध्य कालीन भारतीय इतिहास तथाकथित स्वदेशी शासकों के अधीन लगभग तीन शताब्दियों तक चलता रहा, जिसमें चालुक्य, पल्व, पाण्डया, राष्ट्रकूट शामिल हैं, मुस्लिम शासक और अंतत: मुगल साम्राज्य। नौवी शताब्दी के मध्य में उभरने वाला सबसे महत्वपूर्ण राजवंश चोल राजवंश था।

पाल

आठवीं और दसवीं शताब्दी ए.डी. के बीच अनेक शक्तिशाली शासकों ने भारत के पूर्वी और उत्तरी भागों पर प्रभुत्व बनाए रखा। पाल राजा धर्मपाल, जो गोपाल के पुत्र थे, में आठवीं शताब्दी ए.डी. से नौवी शताब्दी ए.डी. के अंत तक शासन किया। धर्मपाल द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना इसी अवधि में की गई।

सेन

पाल वंश के पतन के बाद सेन राजवंश ने बंगाल में शासन स्थापित किया। इस राजवंश के स्थापक सामंत सेन थे। इस राजवंश के महानतम शासक विजय सेन थे। उन्होंने पूरे बंगाल पर कब्जा किया और उनके बाद उनके पुत्र बल्लाल सेन ने राज किया। उनका शासन शांतिपूर्ण रहा किन्तु इसने अपने विचारधाराओं को समूचा बनाए रखा। वे एक महान विद्वान थे तथा उन्होंने ज्योतिष विज्ञान पर एक पुस्तक सहित चार पुस्तके लिखी। इस राजवंश के

अंतिम शासक लक्ष्मण सेन थे, जिनके कार्यकाल में मुस्लिमों ने बंगाल पर शासन किया और फिर साम्राज्य समाप्त हो गया।

प्रतिहार

प्रतिहार राजवंश के महानतम शासक मिहिर भोज थे। उन्होंने 836 में कन्नौज (कान्यकुब्ज) की खोज की और लगभग एक शताब्दी तक प्रतिहारों की राजधानी बनाया। उन्होंने भोजपाल (वर्तमान भोपाल) शहर का निर्माण किया। राजा भोज और उनके अन्य सहवर्ती गुजर राजाओं को पश्चिम की ओर से अरब जनों के अनेक आक्रमणों का सामना करना पड़ा और पराजित होना पड़ा।

वर्ष 915 - 918 ए.डी. के बीच कन्नौज पर राष्ट्रकूट राजा ने आक्रमण किया। जिसने शहर को विरान बना दिया और प्रतिहार साम्राज्य की जड़ें कमजोर दी। वर्ष 1018 में कन्नौज ने राज्यपाल प्रतिहार का शासन देखा, जिसे गजनी के महमूद ने लूटा। पूरा साम्राज्य स्वतंत्रता राजपूत राज्यों में टूट गया।

राष्ट्रकूट

इस राजवंश ने कर्नाटक पर राज्य किया और यह कई कारणों से उल्लेखनीय है। उन्होंने किसी अन्य राजवंश की तुलना में एक बड़े हिस्से पर राज किया। वे कला और साहित्व के महान संरक्षक थे। अनेक राष्टकूट राजाओं द्वारा शिक्षा और साहित्य को दिया गया प्रोत्साहन अनोखा है और उनके द्वारा धार्मिक सहनशीलता का उदाहरण अनुकरणीय है।

दक्षिण का चोल राजवंश

यह भारतीय महाद्वीप के एक बड़े हिस्से को शामिल करते हुए नौवीं शताब्दी ए.डी. के मध्य में उभरा साथ ही यह श्रीलंका तथा मालदीव में भी फैला था।

इस राजवंश से उभरने वाला प्रथम महत्वपूर्ण शासक राजराजा चोल 1 और उनके पुत्र तथा उत्तरवर्ती राजेन्द्र चोल थे। राजराजा ने अपने पिता की जोड़ने की नीति को आगे बढ़ाया। उसने बंगाल, ओडिशा और मध्य प्रदेश के दूरदराज के इलाकों पर सशस्त्र चढ़ाई की।

राजेन्द्र I, राजाधिराज और राजेन्द्र II के उत्तरवर्ती निडर शासक थे जो चालुक्य राजाओं से आगे चलकर वीरतापूर्वक लड़े किन्तु चोल राजवंश के पतन को रोक नहीं पाए। आगे चलकर चोल राजा कमजोर और अक्षम शासक सिद्ध हुए। इस प्रकार चोल साम्राज्य आगे लगभग डेढ़ शताब्दी तक आगे चला और अंतत: चौदहवीं शताब्दी ए.डी. की शुरूआत में मलिक कफूर के आक्रमण पर समाप्त हो गया।

दक्षिण एशिया में इस्लाम का उदय

पैगम्बर मुहम्मद की मृत्यु के बाद प्रथम शताब्दी में दक्षिण एशिया के अंदर इस्लाम का आरंभिक प्रवेश हुआ। उमायद खलीफा ने डमस्कस में बलूचिस्तान और सिंध पर 711 में मुहम्मद बिन कासिन के नेतृत्व में चढ़ाई की। उन्होंने सिंध और मुलतान पर कब्जा कर लिया। उनकी मौत के 300 साल बाद सुल्तान मेहमूद गजनी, जो एक खूंख्वार नेता थे, ने राजपूत राजशाहियों के विरुद्ध तथा धनवान हिन्दू मंदिरों पर छापामारी की एक श्रृंखला आरंभ की तथा भावी चढ़ाइयों के लिए पंजाब में अपना एक आधार स्थापित किया। वर्ष 1024 में सुल्तान ने अरब सागर के साथ काठियावाड़ के दक्षिणी तट पर अपना अंतिम प्रसिद्ध खोज का दौर शुरु किया, जहां उसने सोमनाथ

शहर पर हमला किया और साथ ही अनेक प्रतिष्ठित हिंदू मंदिरों पर आक्रमण किया।

भारत में मुस्लिम आक्रमण

मोहम्मद गोरी ने मुल्तान और पंजाब पर विजय पाने के बाद 1175 ए.डी. में भारत पर आक्रमण किया, वह दिल्ली की ओर आगे बढ़ा। उत्तरी भारत के बहादुर राजपूत राजाओं ने पृथ्वी राज चौहान के नेतृत्व में 1191 ए.डी. में तराइन के प्रथम युद्ध में पराजित किया। एक साल चले युद्ध के पश्चात मोहम्मद गोरी अपनी पराजय का बदला लेने दोबारा आया। वर्ष 1192 ए.डी. के दौरान तराइन में एक अत्यंत भयानक युद्ध लड़ा गया, जिसमें राजपूत पराजित हुए और पृथ्वी राज चौहान को पकड़ कर मौत के घाट उतार दिया गया। तराइन का दूसरा युद्ध एक निर्णायक युद्ध सिद्ध हुआ और इसमें उत्तरी भारत में मुस्लिम शासन की आधारशिला रखी।

दिल्ली की सल्तनत

भारत के इतिहास में 1206 ए.डी. और 1526 ए.डी. के बीच की अवधि दिल्ली का सल्तनत कार्यकाल कही जाती है। इस अवधि के दौरान 300 वर्षों से अधिक समय में दिल्ली पर पांच राजवंशों ने शासन किया। ये थे गुलाम राजवंश (1206-90), खिलजी राजवंश (1290-1320), तुगलक राजवंश (1320-1413), सायीद राजवंश (1414-51), और लोदी राजवंश (1451-1526)।

गुलाम राजवंश

इस्लाम में समानता की संकल्पना और मुस्लिम परम्पराएं दक्षिण एशिया के इतिहास में अपने चरम बिन्दु पर पहुंच गई, जब गुलामों ने सुल्तान का दर्जा हासिल किया। गुलाम राजवंश ने लगभग 84 वर्षों तक इस उप महाद्वीप पर शासन किया। यह प्रथम मुस्लिम राजवंश था जिसने भारत पर शासन किया। मोहम्मद गोरी का एक गुलाम कुतुब उद दीन ऐबक अपने मालिक की मृत्यु के बाद शासक बना और गुलाम राजवंश की स्थापना की। वह एक महान निर्माता था जिसने दिल्ली में कुतुब मीनार के नाम से विख्यात आश्चर्यजनक 238 फीट ऊंचे पत्थर के स्तंभ का निर्माण कराया।

गुलाम राजवंश का अगला महत्वपूर्ण राजा शम्स उद दीन इलतुतमश था, जो कुतुब उद दीन ऐबक का गुलाम था। इलतुतमश ने 1211 से 1236 के बीच लगभग 26 वर्ष तक राज किया और वह मजबूत आधार पर दिल्ली की सल्तनत स्थापित करने के लिए उत्तरदायी था। इलतुतमश की सक्षम बेटी, रजिया बेगम अपनी और अंतिम मुस्लिम महिला थी जिसने दिल्ली के तख्त पर राज किया। वह बहादुरी से लड़ी किन्तु अंत में पराजित होने पर उसे मार डाला गया।

अंत में इलतुतमश के सबसे छोटे बेटे नसीर उद दीन मेहमूद को 1245 में सुल्तान बनाया गया। जबकि मेहमूद ने लगभग 20 वर्ष तक भारत पर शासन किया। किन्तु अपने पूरे कार्यकाल में उसकी मुख्य शक्ति उसके प्रधानमंत्री बलबन के हाथों में रही। मेहमूद की मौत होने पर बलबन ने सिंहासन पर कब्ज़ा किया और दिल्ली पर राज किया। वर्ष 1266 से 1287 तक बलबन ने अपने कार्यकाल में साम्राज्य का प्रशासनिक ढांचा सुगठित किया तथा इलतुतमश द्वारा शुरू किए गए कार्यों को पूरा किया।

खिलजी राजवंश

बलवन की मौत के बाद सल्तनत कमजोर हो गई और यहां कई बगावतें हुईं। यही वह समय था जब राजाओं ने जलाल उद दीन खिलजी को राजगद्दी पर बिठाया। इससे

खिलजी राजवंश की स्थापना आरंभ हुई। इस राजवंश का राजकाज 1290 ए.डी. में शुरू हुआ। अला उद दीन खिलजी जो जलाल उद दीन खिलजी का भतीजा था, ने षड़यंत्र किया और सुल्तान जलाल उद दीन को मार कर 1296 में स्वयं सुल्तान बन बैठा। अला उद दीन खिलजी प्रथम मुस्लिम शासक था जिसके राज्य ने पूरे भारत का लगभग सारा हिस्सा दक्षिण के सिरे तक शामिल था। उसने कई लड़ाइयां लड़ी, गुजरात, रणथम्भौर, चित्तौड़, मलवा और दक्षिण पर विजय पाई। उसके 20 वर्ष के शासन काल में कई बार मंगोलों ने देश पर आक्रमण किया किन्तु उन्हें सफलतापूर्वक पीछे खदेड़ दिया गया। इन आक्रमणों से अला उद दीन खिलजी ने स्वयं को तैयार रखने का सबक लिया और अपनी सशस्त्र सेनाओं को संपुष्ट तथा संगठित किया। वर्ष 1316 ए.डी. में अला उद दीन की मौत हो गई और उसकी मौत के साथ खिलजी राजवंश समाप्त हो गया।

तुगलक राजवंश

गयासुद्दीन तुगलक, जो अला उद दीन खिलजी के कार्यकाल में पंजाब का राज्यपाल था, 1320 ए.डी. में सिंहासन पर बैठा और तुगलक राजवंश की स्थापना की। उसने वारंगल पर विजय पाई और बंगाल में बगावत की। मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने पिता का स्थान लिया और अपने राज्य को भारत से आगे मध्य एशिया तक आगे बढ़ाया। मंगोल ने तुगलक के शासन काल में भारत पर आक्रमण किया और उन्हें भी इस बार हराया गया।

मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी राजधानी को दक्षिण में सबसे पहले दिल्ली से हटाकर देवगिरी में स्थापित किया। जबकि इसे दो वर्ष में वापस लाया गया। उसने एक बड़े साम्राज्य को विरासत में पाया था किन्तु वह कई प्रांतों को अपने नियंत्रण में नहीं रख सका, विशेष रूप से दक्षिण और बंगाल को। उसकी मौत 1351 ए.डी. में हुई और उसके चचेरे भाई फिरोज़ तुगलक ने उसका स्थान लिया।

फिरोज तुगलक ने साम्राज्य की सीमाएं आगे बढ़ाने में बहुत अधिक योगदान नहीं दिया, जो उसे विरासत में मिली थी। उसने अपनी शक्ति का अधिकांश भाग लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में लगाया। वर्ष 1338 ने उसकी मौत के बाद तुगलक राजवंश लगभग समाप्त हो गया। यद्यपि तुगलक शासन 1412 तक चलता रहा फिर भी 1398 में तैमूर द्वारा दिल्ली पर आक्रमण को तुगलक साम्राज्य का अंत कहा जा सकता है।

तैमूर का आक्रमण

तुगलक राजवंश के अंतिम राजा के कार्याकाल के दौरान शक्तिशाली राजा तैमूर या टेमरलेन ने 1398 ए.डी. में भारत पर आक्रमण किया। उसने सिंधु नदी को पार किया और मुल्तान पर कब्ज़ा किया तथा बहुत अधिक प्रतिरोध का सामना न करते हुए दिल्ली तक चला आया।

BANK EXAMS Today

सायीद राजवंश

इसके बाद खिज़ार खान द्वारा सायीद राजवंश की स्थापना की गई। सायीद ने लगभग 1414 ए.डी. से 1450 ए.डी. तक शासन किया। खिज़ार खान ने लगभग 37 वर्ष तक राज्य किया। सायीद राजवंश में अंतिम मोहम्मद बिन फरीद थे। उनके कार्यकाल में भ्रम और बगावत की स्थिति बनी हुई। यह साम्राज्य उनकी मृत्यु के बाद 1451 ए.डी. में समाप्त हो गया।

लोदी राजवंश

बुहलुल खान लोदी (1451-1489 ए. डी.)

वे लोदी राजवंश के प्रथम राजा और संस्थापक थे। दिल्ली की सलतनत को उनकी पुरानी भव्यता में वापस लाने के

लिए विचार से उन्होंने जौनपुर के शक्तिशाली राजवंश के साथ अनेक क्षेत्रों पर विजय पाई। बुहलुल खान ने ग्वालियर, जौनपुर और उत्तर प्रदेश में अपना क्षेत्र विस्तारित किया।

सिकंदर खान लोदी (1489-1517 ए. डी.)

बुहलुल खान की मृत्यु के बाद उनके दूसरे पुत्र निज़ाम शाह राजा घोषित किए गए और 1489 में उन्हें सुल्तान सिकंदर शाह का खिताब दिया गया। उन्होंने अपने राज्य को मजबूत बनाने के सभी प्रयास किए और अपना राज्य पंजाब से बिहार तक विस्तारित किया। वे बहुत अच्छे प्रशासक और कलाओं तथा लिपि के संरक्षक थे। उनकी मृत्यु 1517 ए.डी. में हुई।

इब्राहिम खान लोदी (1489-1517 ए. डी.)

सिकंदर की मृत्यु के बाद उनके पुत्र इब्राहिम को गद्दी पर बिठाया गया। इब्राहिम लोदी एक सक्षम शासक सिद्ध नहीं हुए। वे राजाओं के साथ अधिक से अधिक सख्त होते गए। वे उनका अपमान करते थे और इस प्रकार इन अपमानों का बदला लेने के लिए दौलतखान लोदी, लाहौर के राज्यपाल और सुल्तान इब्राहिम लोदी के एक चाचा, अलाम खान ने काबुल के शासक, बाबर को भारत पर कब्ज़ा करने का आमंत्रण दिया। इब्राहिम लोदी को बाबर की सेना ने 1526 ए. डी. में पानीपत के युद्ध में मार गिराया। इस प्रकार दिल्ली की सल्तनत अंतत: समाप्त हो गई और भारत में मुगल शासन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

विजयनगर साम्राज्य

जब मुहम्मद तुगलक दक्षिण में अपनी शक्ति खो रहा था तब दो हिन्दु राजकुमार हरिहर और बूक्का ने कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के बीच 1336 में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। जल्दी ही उन्होंने उत्तर दिशा में कृष्णा नदी तथा दक्षिण में कावेरी नदी के बीच इस पूरे क्षेत्र पर अपना राज्य स्थापित कर लिया। विजयनगर साम्राज्य की बढ़ती ताकत से इन कई शक्तियों के बीच टकराव हुआ और उन्होंने बहमनी साम्राज्य के साथ बार बार लड़ाइयां लड़ी।

विजयनगर साम्राज्य के सबसे प्रसिद्ध राजा कृष्ण देव राय थे। विजयनगर का राजवंश उनके कार्यकाल में भव्यता के शिखर पर पहुंच गया। वे उन सभी लड़ाइयों में सफल रहे जो उन्होंने लड़ी। उन्होंने ओडिशा के राजा को पराजित किया और विजयवाड़ा तथा राज महेन्द्री को जोड़ा।

कृष्ण देव राय ने पश्चिमी देशों के साथ व्यापार को प्रोत्साहन दिया। उनके पुर्तगालियों के साथ अच्छे संबंध थे, जिनका व्यापार उन दिनों भारत के पश्चिमी तट पर व्यापारिक केन्द्रों के रूप में स्थापित हो चुका था। वे न केवल एक महान योद्धा थे बल्कि वे कला के पारखी और अधिगम्यता के महान संरक्षक रहे। उनके कार्यकाल में तेलगु साहित्य काफी फला फुला। उनके तथा उनके उत्तरवर्तियों द्वारा चित्रकला, शिल्पकला, नृत्य और संगीत को काफी बढ़ावा दिया गया। उन्होंने अपने व्यक्तिगत आकर्षण, दयालुता और आदर्श प्रशासन द्वारा लोगों को प्रश्रय दिया।

विजयनगर साम्राज्य का पतन 1529 में कृष्ण देव राय की मृत्यु के साथ शुरू हुआ। यह साम्राज्य 1565 में पूरी तरह समाप्त हो गया जब आदिलशाही, निजामशाही, कुतुब शाही और बरीद शाही के संयुक्त प्रयासों द्वारा तालीकोटा में रामराय को पराजित किया गया। इसके बाद यह साम्राज्य छोटे छोटे राज्यों में टूट गया।

बहमनी राज्य

बहमनी का मुस्लिम राज्य दक्षिण के महान व्यक्तियों द्वारा स्थापित किया गया, जिन्होंने सुल्तान मुहम्मद तुगलक की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध बकावत की। वर्ष 1347 में हसन अब्दुल मुजफ्फर अल उद्दीन बहमन शाह के नाम से राजा बना और उसने बहमनी राजवंश की स्थापना की। यह राजवंश लगभग 175 वर्ष तक चला और इसमें 18 शासक हुए। अपनी भव्यता की ऊंचाई पर बहमनी राज्य उत्तर में कृष्णा सें लेकर नर्मदा तक विस्तारित हुआ और बंगाल की खाड़ी के तट से लेकर पूर्व - पश्चिम दिशा में अरब सागर तक फैला। बहमनी के शासक कभी कभार पड़ोसी हिन्दू राज्य विजयनगर से युद्ध करते थे।

बहमनी राज्य के सर्वाधिक विशिष्ट व्यक्तित्व महमूद गवन थे, जो दो दशक से अधिक समय के लिए अमीर उल अलमारा के प्रधान राज्यमंत्री रहे। उन्होंने कई लड़ाइयां लड़ी, अनेक राजाओं को पराजित किया तथा कई क्षेत्रों को बहमनी राज्य में जोड़ा। राज्य के अंदर उन्होंने प्रशासन में सुधार किया, वित्तीय व्यवस्था को संगठित किया, जनशिक्षा को प्रोत्साहन दिया, राजस्व प्रणाली में सुधार किया, सेना को अनुशासित किया एवं भ्रष्टाचार को समाप्त कर दिया। चरित और ईमानदारी के धनी उन्होंने अपनी उच्च प्रतिष्ठा को विशिष्ट व्यक्तियों के दक्षिणी समूह से ऊंचा बनाए रखा, विशेष रूप से निज़ाम उल मुल, और उनकी प्रणाली से उनका निष्पादन हुआ। इसके साथ बहमनी साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया जो उसके अंतिम राजा कली मुल्लाह की मृत्यु से 1527 में समाप्त हो गया। इसके साथ बहमनी साम्राज्य पांच क्षेत्रीय स्वतंत्र भागों में टूट गया - अहमद नगर, बीजापुर, बरार, बिदार और गोलकोंडा।

भक्ति आंदोलन

मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव था सामाजिक - धार्मिक सुधारकों की धारा द्वारा समाज में लाई गई मौन क्रांति, एक ऐसी क्रांति जिसे भक्ति अभियान के नाम से जाना जाता है। यह अभियान हिन्दुओं, मुस्लिमों और सिक्खों द्वारा भारतीय उप महाद्वीप में भगवान की पूजा के साथ जुड़े रीति रिवाजों के लिए उत्तरदायी था। उदाहरण के लिए, हिन्दू मंदिरों में कीर्तन, दरगाह में कव्वाली (मुस्लिमों द्वारा) और गुरुद्वारे में गुरबानी का गायन, ये सभी मध्यकालीन इतिहास में (800 - 1700) भारतीय भक्ति आंदोलन से उत्पन्न हुए हैं। इस हिन्दू क्रांतिकारी अभियान के नेता थे शंकराचार्य, जो एक महान विचारक और जाने माने दार्शनिक रहे। इस अभियान को चैतन्य महाप्रभु, नामदेव, तुकाराम, जयदेव ने और अधिक मुखरता प्रदान की। इस अभियान की प्रमुख उपलब्धि मूर्ति पूजा को समाप्त करना रहा।

भक्ति आंदोलन के नेता रामानंद ने राम को भगवान के रूप में लेकर इसे केन्द्रित किया। उनके बारे में बहुत कम जानकारी है, परन्तु ऐसा माना जाता है कि वे 15वीं शताब्दी के प्रथमार्ध में रहे। उन्होंने सिखाया कि भगवान राम सर्वोच्च भगवान हैं और केवल उनके प्रति प्रेम और समर्पण के माध्यम से तथा उनके पवित्र नाम को बार - बार उच्चारित करने से ही मुक्ति पाई जाती है।

चैतन्य महाप्रमु एक पवित्र हिन्दू भिक्षु और सामाजिक सुधार थे तथा वे सोलहवीं शताब्दी के दौरान बंगाल में हुए। भगवान के प्रति प्रेम भाव रखने के प्रबल समर्थक, भक्ति योग के प्रवर्तक, चैतन्य ने ईश्वर की आराधना श्रीकृष्ण के रूप में की।

श्री रामनुज आचार्य भारतीय दर्शनशास्त्री थे और उन्हें सर्वाधिक महत्वपूर्ण वैष्णव संत के रूप में मान्यता दी गई है। रामानंद ने उत्तर भारत में जो किया वही रामानुज ने दक्षिण भारत में किया। उन्होंने रुढिवादी कुविचार की बढ़ती औपचारिकता के विरुद्ध आवाज उठाई और प्रेम तथा समर्पण की नींव पर आधारित वैष्णव विचाराधारा के नए सम्प्रदायक की स्थापना की। उनका सर्वाधिक असाधारण

योगदान अपने मानने वालों के बीच जाति के भेदभाव को समाप् करना।

बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के अनुयायियों में भगत नामदेव और संत कबीर दास शामिल हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भगवान की स्तुति के भक्ति गीतों पर बल दिया।

प्रथम सिक्ख गुरु, और सिक्ख धर्म के प्रवर्तक, गुरु नामक जी भी निर्गुण भक्ति संत थे और समाज सुधारक थे। उन्होंने सभी प्रकार के जाति भेद और धार्मिक शत्रुता तथा रीति रिवाजों का विरोध किया। उन्होंने ईश्वर के एक रूप माना तथा हिन्दू और मुस्लिम धर्म की औपचारिकताओं तथा रीति रिवाजों की आलोचना की। गुरु नामक का सिद्धांत सभी लोगों के लिए था। उन्होंने हर प्रकार से समानता का समर्थन किया।

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में भी अनेक धार्मिक सुधारकों का उत्थान हुआ। वैष्णव सम्प्रदाय के राम के अनुयायी तथा कृष्ण के अनुयायी अनेक छोटे वर्गों और पंथों में बंट गए। राम के अनुयायियों में प्रमुख संत कवि तुलसीदास थे। वे अत्यंत विद्वान थे और उन्होंने भारतीय दर्शन तथा साहित्य का गहरा अध्ययन किया। उनकी महान कृति 'राम चरित मानस' जिसे जन साधारण द्वारा तुलसीकृत रामायण कहा जाता है, हिन्दू श्रृद्धालुओं के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। उन्होंने लोगों के बीच श्री राम की छवि सर्वव्यापी, सर्व शक्तिमान, दुनिया के स्वामी और परब्रह्म के साकार रूप से बनाई।

कृष्ण के अनुयायियों ने 1585 ए. डी में हरिवंश के अंतर्गत राधा बल्लभी पंथ की स्थापना की। सूर दास ने ब्रज भाषा में ''सूर सरागर'' की रचना की, जो श्री कृष्ण के मोहक रूप तथा उनकी प्रेमिका राधा की कथाओं से परिपूर्ण है।

सूफीवाद

पद सूफी, वली, दरवेश और फकीर का उपयोग मुस्लिम संतों के लिए किया जाता है, जिन्होंने अपनी पूर्वाभासी शक्तियों के विकास हेतु वैराग्य अपनाकर, सम्पूर्णता की ओर जाकर, त्याग और आत्म अस्वीकार के माध्यम से प्रयास किया। बारहवीं शताब्दी ए.डी. तक, सूफीवाद इस्लामी सामाजिक जीवन के एक सार्वभौमिक पक्ष का प्रतीक बन गया, क्योंकि यह पूरे इस्लामिक समुदाय में अपना प्रभाव विस्तारित कर चुका था।

सूफीवाद इस्लाम धर्म के अंदरुनी या गूढ़ पक्ष को या मुस्लिम धर्म के रहस्यमयी आयाम का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि, सूफी संतों ने सभी धार्मिक और सामुदायिक भेदभावों से आगे बढ़कर विशाल पर मानवता के हित को प्रोत्साहन देने के लिए कार्य किया। सूफी सन्त दार्शनिकों का एक ऐसा वर्ग था जो अपनी धार्मिक विचारधारा के लिए उल्लेखनीय रहा। सूफियों ने ईश्वर को सर्वोच्च सुंदर माना है और ऐसा माना जाता है कि सभी को इसकी प्रशंसा करनी चाहिए, उसकी याद में खुशी महसूस करनी चाहिए और केवल उसी पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उन्होंने विश्वास किया कि ईश्वर ''माशूक'' और सूफी ''आशिक'' हैं।

सूफीवाद ने स्वयं को विभिन्न 'सिलसिलों' या क्रमों में बांटा। सर्वाधिक चार लोकप्रिय वर्ग हैं चिश्ती, सुहारावार्डिस, कादिरियाह और नक्शबंदी।

सूफीवाद ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में जडें जमा लीं और जन समूह पर गहरा सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रभाव डाला। इसने हर प्रकार के धार्मिक औपचारिक वाद, रुढिवादिता, आडंबर और पाखंड के विरुद्ध आवाज़ उठाई तथा एक ऐसे वैश्विक वर्ग के सृजन का प्रयास किया जहां आध्यात्मिक पवित्रता ही एकमात्र और अंतिम लक्ष्य है। एक ऐसे समय जब राजनैतिक शक्ति का संघर्ष पागलपन के

रूप में प्रचलित था, सूफी संतों ने लोगों को नैतिक बाध्यता का पाठ पढ़ाया। संघर्ष और तनाव से टूटी दुनिया के लिए उन्होंने शांति और सौहार्द लाने का प्रयास किया। सूफीवाद का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने अपनी प्रेम की भावना को विकसित कर हिन्दू - मुस्लिम पूर्वाग्रहों के भेद मिटाने में सहायता दी और इन दोनों धार्मिक समुदायों के बीच भाईचारे की भावना उपत्न्न की।

मुगल राजवंश

भारत में मुगल राजवंश महानतम शासकों में से एक था। मुगल शासकों ने हज़ारों लाखों लोगों पर शासन किया। भारत एक नियम के तहत एकत्र हो गया और यहां विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक और राजनैतिक समय अवधि मुगल शासन के दौरान देखी गई। पूरे भारत में अनेक मुस्लिम और हिन्दु राजवंश टूटे, और उसके बाद मुगल राजवंश के संस्थापक यहां आए। कुछ ऐसे लोग हुए हैं जैसे कि बाबर, जो महान एशियाई विजेता तैमूर लंग का पोता था और गंगा नदी की घाटी के उत्तरी क्षेत्र से आए विजेता चंगेज़खान, जिसने खैबर पर कब्जा करने का निर्णय लिया और अंतत: पूरे भारत पर कब्ज़ा कर लिया।

बाबर (1526-1530): यह तैमूर लंग और चंगेज़खान का प्रपौत्र था जो भारत में प्रथम मुगल शासक थे। उसने पानीपत के प्रथम युद्ध में 1526 के दौरान लोधी वंश के साथ संघर्ष कर उन्हें पराजित किया और इस प्रकार अंत में मुगल राजवंश की स्थापना हुई। बाबर ने 1530 तक शासन किया और उसके बाद उसका बेटा हुमायूं गद्दी पर बैठा।

हुमायूं (1530-1540 और 1555-1556): बाबर का सबसे बड़ा था जिसने अपने पिता के बाद राज्य संभाला और मुगल राजवंश का द्वितीय शासक बना। उसने लगभग 1 दशक तक भारत पर शासन किया किन्तु फिर उसे अफगानी शासक शेर शाह सूरी ने पराजित किया। हुमायूं अपनी पराजय के बाद लगभग 15 वर्ष तक भटकता रहा। इस बीच शेर शाह मौत हो गई और हुमायूं उसके उत्तरवर्ती सिकंदर सूरी को पराजित करने में सक्षम रहा तथा दोबारा हिन्दुस्तान का राज्य प्राप्त कर सका। जबकि इसके कुछ ही समय बाद केवल 48 वर्ष की उम्र में 1556 में उसकी मौत हो गई।

शेर शाह सूरी (1540-1545): एक अफगान नेता था जिसने 1540 में हुमायूं को पराजित कर मुगल शासन पर विजय पाई। शेर शाह ने अधिक से अधिक 5 वर्ष तक दिल्ली के तख्त पर राज किया और वह इस उप महाद्वीप में अपने अधिकार क्षेत्र को स्थापित नहीं कर सका। एक राजा के तौर पर उसके खाते में अनेक उपलब्धियों का श्रेय जाता है। उसने एक दक्ष लोक प्रशासन की स्थापना की। उसने भूमि के माप के आधार पर राजस्व संग्रह की एक प्रणाली स्थापित की। उसके राज्य में आम आदमी को न्याय मिला। अनेक लोक कार्य उसके अल्प अवधि के शासन कार्य में कराए गए जैसे कि पेड़ लगाना, यात्रियों के लिए कुएं और सरायों का निर्माण कराया गया, सड़कें बनाई गई, उसी के शासन काल में दिल्ली से काबुल तक ग्रांड ट्रंक रोड बनाई गई। मुद्रा को बदल कर छोटी रकम के चांदी के सिक्के बनवाए गए, जिन्हें दाम कहते थे। यद्यपि शेर शाह तख्त पर बैठने के बाद अधिक समय जीवित नहीं रहा और 5 वर्ष के शासन काल बाद 1545 में उसकी मौत हो गई।

अकबर (1556-1605): हुमायूं के उत्तराधिकारी, अकबर का जन्म निर्वासन के दौरान हुआ था और वह केवल 13 वर्ष का था जब उसके पिता की मौत हो गई। अकबर को इतिहास में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। वह एक मात्र ऐसा शासक था जिसमें मुगल साम्राज्य की नींव का संपुष्ट बनाया। लगातार विजय पाने के बाद उसने भारत के अधिकांश भाग को अपने अधीन कर लिया। जो हिस्से उसके शासन में शामिल नहीं थे उन्हें सहायक भाग घोषित किया गया। उसने राजपूतों के प्रति भी उदारवादी नीति अपनाई और इस प्रकार उनसे खतरे को कम किया। अकबर न केवल एक महान विजेता था बल्कि वह एक सक्षम

संगठनकर्ता एवं एक महान प्रशासक भी था। उसने ऐसा संस्थानों की स्थापना की जो एक प्रशासनिक प्रणाली की नींव सिद्ध हुए, जिन्हें ब्रिटिश कालीन भारत में भी प्रचालित किया गया था। अकबर के शासन काल में गैर मुस्लिमों के प्रति उसकी उदारवादी नीतियों, उसके धार्मिक नवाचार, भूमि राजस्व प्रणाली और उसकी प्रसिद्ध मनसबदारी प्रथा के कारण उसकी स्थिति भिन्न है। अकबर की मनसबदारी प्रथा मुगल सैन्य संगठन और नागरिक प्रशासन का आधार बनी।

अकबर की मृत्यु उसके तख्त पर आरोहण के लगभग 50 साल बाद 1605 में हुई और उसे सिकंदरा में आगरा के बाहर दफनाया गया। तब उसके बेटे जहांगीर ने तख्त को संभाला।

जहांगीर: अकबर के स्थान पर उसके बेटे सलीम ने तख्तोताज़ को संभाला, जिसने जहांगीर की उपाधि पाई, जिसका अर्थ होता है दुनिया का विजेता। उसने मेहर उन निसा से निकाह किया, जिसे उसने नूरजहां (दुनिया की रोशनी) का खिताब दिया। वह उसे बेताहाशा प्रेम करता था और उसने प्रशासन की पूरी बागडोर नूरजहां को सौंप दी। उसने कांगड़ा और किश्वर के अतिरिक्त अपने राज्य का विस्तार किया तथा मुगल साम्राज्य में बंगाल को भी शामिल कर दिया। जहांगीर के अंदर अपने पिता अकबर जैसी राजनैतिक उद्यमशीलता की कमी थी। किन्तु वह एक ईमानदार और सहनशील शासक था। उसने समाज में सुधार करने का प्रयास किया और वह हिन्दुओं, ईसाइयों तथा ज्यूस के प्रति उदार था। जबकि सिक्खों के साथ उसके संबंध तनावपूर्ण थे और दस सिक्ख गुरूओं में से पांचवें गुरू अर्जुन देव को जहांगीर के आदेश पर मौत के घाट उतार दिया गया था, जिन पर जहांगीर के बगावती बेटे खुसरू की सहायता करने का अरोप था। जहांगीर के शासन काल में कला, साहित्य और वास्तुकला फली फूली और श्री नगर में बनाया गया मुगल गार्डन उसकी कलात्मक अभिरुचि का एक स्थायी प्रमाण है। उसकी मृत्यु 1627 में हुई।

शाहजहां: जहांगीर के बाद उसके द्वितीय पुत्र खुर्रम ने 1628 में तख्त संभाला। खुर्रम ने शाहजहां का नाम ग्रह किया जिसका अर्थ होता है दुनिया का राजा। उसने उत्तर दिशा में कंधार तक अपना राज्य विस्तारित किया और दक्षिण भारत का अधिकांश हिस्सा जीत लिया। मुगल शासन शाहजहां के कार्यकाल में अपने सर्वोच्च बिन्दु पर था। ऐसा अतुलनीय समृद्धि और शांति के लगभग 100 वर्षों तक हुआ। इसके परिणाम स्वरूप इस अवधि में दुनिया को मुगल शासन की कलाओं और संस्कृति के अनोखे विकास को देखने का अवसर मिला। शाहजहां को वास्तुकार राजा कहा जाता है। लाल किला और जामा मस्जिद, दिल्ली में स्थित ये दोनों इमारतें सिविल अभियांत्रिकी तथा कला की उपलब्धि के रूप में खड़ी हैं। इन सब के अलावा शाहजहां को आज ताज महल के लिए याद किया जाता है, जो उसने आगरा में यमुना नदी के किनारे अपनी प्रिय पत्नी मुमताज महल के लिए सफेद संगमरमर से बनवाया था।

औरंगज़ेब: औरंगज़ेब ने 1658 में तख्त संभाला और 1707 तक राज्य किया। इस प्रकार औरंगज़ेब ने 50 वर्ष तक राज्य किया। जो अकबर के बराबर लम्बा कार्यकाल था। परन्तु दुर्भाग्य से उसने अपने पांचों बेटों को शाही दरबार से दूर रखा और इसका नतीजा यह हुआ कि उनमें से किसी को भी सरकार चलाने की कला का प्रशिक्षण नहीं मिला। इससे मुगलों को आगे चल कर हानि उठानी पड़ी। अपने 50 वर्ष के शासन काल में औरंगजेब ने इस पूरे उप महाद्वीप को एक साथ एक शासन लाने की आकांक्षा को पूरा करने का प्रयास किया। यह उसी के कार्यकाल में हुआ जब मुगल शासन अपने क्षेत्र में सर्वोच्च बिन्दु तक पहुंचा। उसने वर्षों तक कठिन परिश्रम किया किन्तु अंत में उसका स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया। उसने 1707 में 90 वर्ष की आयु पर मृत्यु के समय कोई संपत्ति नहीं छोड़ी। उसकी मौत के साथ विघटनकारी ताकतें उठ खड़ी हुईं और शक्तिशाली मुगल साम्राज्य का पतन शुरू हो गया।

सिक्ख शक्ति का उदय

सिक्ख धर्म की स्थापना सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में गुरूनानक देव द्वारा की गई थी। गुरू नानक का जन्म 15 अप्रैल 1469 को पश्चिमी पंजाब के एक गांव तलवंडी में हुआ था। एक बालक के रूप में उन्हें दुनियावी चीज़ों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। तेरह वर्ष की उम्र में उन्हें ज्ञान प्राप्ति हुई। इसके बाद उन्होंने देश के लगभग सभी भागों में यात्रा की और मक्का तथा बगदाद भी गए और अपना संदेश सभी को दिया। उनकी मृत्यु पर उन्हें 9 अन्य गुरूओं ने अपनाया।

गुरू अंगद देव जी (1504-1552) तेरह वर्ष (1539-1552) के लिए गुरू रहे। उन्होंने गुरूमुखी की नई लिपि का सृजन किया और सिक्खों को एक लिखित भाषा प्रदान की। उनकी मृत्यु के बाद गुरू अमरदास जी (1479-1574) ने उनका उत्तराधिकार लिया। उन्होंने अत्यंत समर्पण दर्शाया और सिक्ख धर्म के अविभाज्य भाग्य के रूप में लंगर किया। गुरू रामदास जी ने चौथे गुरू का पद संभाला, उन्होंने श्लोक बनाए, जिन्हें आगे चलकर पवित्र लेखनों में शामिल किया गया। गुरू अर्जन देव जी सिक्ख धर्म के पांचवें गुरू बने। उन्होंने विश्व प्रसिद्ध हरमंदिर साहिब का निर्माण कराया जो अमृतसर में स्थित स्वर्ण मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने पवित्र ग्रंथ साहिब का संकलन किया, जो सिक्ख धर्म की एक पवित्र धार्मिक पुस्तक है। गुरू अर्जन देव ने 1606 में शरीर छोड़ा और उनके बाद श्री हर गोविंद आए, जिन्होंने स्थायी सेना बनाए रखी और सांकेतिक रूप से वे दो तलवारें धारण करते थे, जो आध्यात्मिकता और मानसिक शक्ति की प्रतीक है।

गुरू श्री हर राय सांतवें गुरू थे जिनका जन्म 1630 में हुआ और उन्होंने अपना अधिकांश जीवन ध्यान और गुरू नानक की बताई गई बातों के प्रचार में लगाया। उनकी मृत्यु 1661 में हुई और उनके बाद उनके द्वितीय पुत्र हर किशन ने गुरू का पद संभाला। गुरू श्री हर किशन जी को 1661 में ज्ञान प्राप्ति हुई। उन्होंने अपना जीवन दिल्ली के माहमारी से पीडित लोगों की सेवा और सुश्रुसा में लगाया। जिस स्थान पर उन्होंने अपने जीवन की अंतिम सांस ली उसे दिल्ली में गुरूद्वारा बंगला साहिब कहा जाता है। श्री गुरू तेग बहादुर 1664 में गुरू बने। जब कश्मीर के मुगल राज्यपाल ने हिन्दुओं को बल पूर्वक धर्म परिवर्तन कराने के लिए दबाव डाला तब गुरू तेग बहादुर ने इसके प्रति संघर्ष करने का निर्णय लिया। गुरूद्वारा सीसगंज, दिल्ली उसी स्थान पर है जहां गुरू साहिब ने अंतिम सांसें ली और गुरू द्वारा रकाबगंज में उनका अंतिम संस्कार किया गया। दसवें गुरू, गुरू गोविंद सिंह का जन्म 1666 में हुआ और वे अपने पिता गुरू तेग बहादुर की मृत्यु के बाद गुरू बने। गुरू गोविंद सिंह ने अपनी मृत्यु के समय गुरू ग्रंथ साहिब को सिक्ख धर्म का उच्चतम प्रमुख कहा और इस प्रकार एक धार्मिक गुरू को मनोनीत करने की लंबी परम्परा का अंत हुआ।

छत्रपति शिवाजी महाराज

छत्रपति शिवाजी महाराज (1630-1680) महाराष्ट्र के महानायक थे, जिन्होंने मुगलों के सामने सबसे पहले गंभीर चुनौती रखी और अंतत: उनके भारत के साम्राज्य को प्रभावित किया।

वे अजेय योद्धा और एक प्रशंसा करने योग्य सेनानायक थे। उन्होंने एक मजबूत सेना और नौ सेना तैयार की। उन्होंने 18 साल की अल्पावस्था में यह संघर्ष करने की भावना सबसे पहले प्रदर्शित की, जब उन्होंने महाराष्ट्र के अनेक किलों पर फतह प्राप्त की। उन्होंने अनेक किलों का निर्माण और सुधार भी कराया तथा जासूसी की एक उच्च दक्ष प्रणाली का रखरखाव किया। गुरिल्ला युद्ध का उपयोग उनकी युद्ध तकनीकी की एक अनोखी और प्रमुख विशेषता थी।

यह शिवाजी की बुद्धिमानी थी कि उन्होंने बिखरे हुए लोगों को संगठित किया और एक राष्ट्र के निर्माण हेतु उनके बीच मेल कराया, जो उनकी शक्ति और सफलता के नेतृत्व से संभव हुआ। शिवाजी नागरिकों, आम जनता की ओर मुड़े और उन्हें एक उत्कृष्ट संघर्ष साधन के रूप में परिवर्तित किया और जिसे दक्षिण के सुल्तानों और मुगलों के खिलाफ उन्होंने प्रभावी रूप से उपयोग किया।

शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित राज्य '**हिंदवी स्वराज**' के नाम से जाना जाता है, जो समय के दौरान आगे बढ़ा और भारत के शक्तिशाली राज्य के रूप में विकसित हुआ। शिवाजी महाराज की मृत्यु 1680 में 50 वर्ष की आयु में रायगढ़ नामक स्थान पर हुई। उनकी समय से पहले मृत्यु के कारण महाराष्ट्र के इतिहास में एक गंभीर कमी पैदा हुई।

शिवाजी अपने सिद्धांतों में एक असाधारण व्यक्ति थे और उन्होंने एक स्वतंत्र राज्य से अपना जीवन तराशा, शक्तिशाली मुगल साम्राज्य को चुनौती दी और अपने पीछे एक ऐसी विरासत छोड़ी जो भावी पीढियों के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत सिद्ध हुई।

मुगल शासन काल का पतन

मुगल शासन काल का विघटन 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद आरंभ हो गया था। उनके पुत्र और उत्तराधिकारी, बहादुर शाह जफर पहले ही बूढ़े हो गए थे, जब वे सिहांसन पर बैठे और उन्हें एक के बार एक बगावतों का सामना करना पड़ा। उस समय साम्राज्य के सामने मराठों और ब्रिटिश की ओर से चुनौतियां मिल रही थी। करो में स्फीति और धार्मिक असहनशीलता के कारण मुगल शासन की पकड़ कमजोर हो गई थी। मुगल साम्राज्य अनेक स्वतंत्र या अर्ध स्वतंत्र राज्यों में टूट गया। इरान के नादिरशाह ने 1739 में दिल्ली पर आक्रमण किया और मुगलों की शक्ति की टूटन को जाहिर कर दिया। यह साम्राज्य तेजी से इस सीमा तक टूट गया कि अब यह केवल दिल्ली के आस पास का एक छोटा सा जिला रह गया। फिर भी उन्होंने 1850 तक भारत के कम से कम कुछ हिस्सों में अपना राज्य बनाए रखा, जबकि उन्हें पहले के दिनों के समान प्रतिष्ठा और प्राधिकार फिर कभी नहीं मिला। राजशाही साम्राज्य बहादुर शाह द्वितीय के बाद समाप्त हो गया, जो सिपाहियों की बगावत में सहायता देने के संदेह पर ब्रिटिश राज द्वारा रंगून निर्वासित कर दिए गए थे। वहां 1862 में उनकी मृत्यु हो गई।

इससे भारतीय इतिहास का मध्य कालीन युग समाप्त हुआ और धीरे धीरे ब्रिटिश राज ने राष्ट्र पर अपनी पकड़ बढ़ाई और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का जन्म हुआ।

आधुनिक इतिहास

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857-1947)

पुराने समय में जब पूरी दुनिया के लोग भारत आने के लिए उत्सुक रहा करते थे। यहां आर्य वर्ग के लोग मध्य यूरोप से आए और भारत में ही बस गए। उनके बाद मुगल आए और वे भी भारत में स्थायी रूप से बस गए। चंगेज़खान, एक मंगोलियाई था जिसने भारत पर कई बार आक्रमण किया और लूट पाट की। अलेक्ज़ेडर महान भी भारत पर विजय पाने के लिए आया किन्तु पोरस के साथ युद्ध में पराजित होकर वापस चला गया। हेन सांग नामक एक चीनी नागरिक यहां ज्ञान की तलाश में आया और

उसने नालंदा तथा तक्षशिला विश्वविद्यालयों में भ्रमण किया जो प्राचीन भारतीय विश्वविद्यालय हैं। कोलम्बस भारत आना चाहता था किन्तु उसने अमेरिका के तटों पर उतरना पसंद किया। पुर्तगाल से वास्को डिगामा व्यापार करने अपने देश की वस्तुएं लेकर यहां आया जो भारतीय मसाले ले जाना चाहता था। यहां फ्रांसीसी लोग भी आए और भारत में अपनी कॉलोनियां बनाई।

अंत में ब्रिटिश लोग आए और उन्होंने लगभग 200 साल तक भारत पर शासन किया। वर्ष 1757 ने प्लासी के युद्ध के बाद ब्रिटिश जनों ने भारत पर राजनैतिक अधिकार प्राप्त कर लिया। और उनका प्रभुत्व लॉर्ड डलहौजी के कार्य काल में यहां स्थापित हो गया जो 1848 में गवर्नर जनरल बने। उन्होंने पंजाब, पेशावर और भारत के उत्तर पश्चिम से पठान जनजातियों को संयुक्त किया। और वर्ष 1856 तक ब्रिटिश अधिकार और उनके प्राधिकारी यहां पूरी मजबूती से स्थापित हो गए। जबकि ब्रिटिश साम्राज्य में 19वीं शताब्दी के मध्य में अपनी नई ऊंचाइयां हासिल की, असंतुष्ट स्थानीय शासकों, मजदूरों, बुद्धिजीवियों तथा सामान्य नागरिकों ने सैनिकों की तरह आवाज़ उठाई जो उन विभिन्न राज्यों की सेनाओं के समाप्त हो जाने से बेरोजगार हो गए थे, जिन्हें ब्रिटिश जनों ने संयुक्त किया था और यह असंतोष बढ़ता गया। जल्दी ही यह एक बगावत के रूप में फूटा जिसने 1857 के विद्रोह का आकार लिया।

1857 में भारतीय विद्रोह

भारत पर विजय, जिसे प्लासी के संग्राम (1757) से आरंभ हुआ माना जा सकता है, व्यावहारिक रूप से 1856 में डलहौजी के कार्यकाल का अंत था। किसी भी अर्थ में यह सुचारु रूप से चलने वाला मामला नहीं था, क्योंकि लोगों के बढ़ते असंतोष से इस अवधि के दौरान अनेक स्थानीय प्रांतियां होती रहीं। यद्यपि 1857 का विद्रोह, जो मेरठ में सैन्य कर्मियों की बगावत से शुरू हुआ, जल्दी ही आगे फैल गया और इससे ब्रिटिश शासन को एक गंभीर चुनौती मिली। जबकि ब्रिटिश शासन इसे एक वर्ष के अंदर ही दबाने में सफल रहा, यह निश्चित रूप से एक ऐसी लोकप्रिय क्रांति थी जिसमें भारतीय शासक, जनसमूह और नागरिक सेना शामिल थी, जिसने इतने उत्साह से इसमें भाग लिया कि इसे भारतीय स्वतंत्रता का पहला संग्राम कहा जा सकता है।

ब्रिटिश द्वारा जमीनदारी प्रथा को शुरू करना, जिसमें मजदूरों को भारी करों के दबाव से कुचल डाला गया था, इससे जमीन के मालिकों का एक नया वर्ग बना। दस्तकारों को ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के आगमन से नष्ट कर दिया गया। धर्म और जाति प्रथा, जिसने पारम्परिक भारतीय समाज की सुदृढ़ नींव बनाई थी अब ब्रिटिश प्रशासन के कारण खतरे में थी। भारतीय सैनिक और साथ ही प्रशासन में कार्यरत नागरिक वरिष्ठ पदों पर पदोन्नत नहीं किए गए, क्योंकि ये यूरोपियन लोगों के लिए आरक्षित थे। इस प्रकार चारों दिशाओं में ब्रिटिश शासन के खिलाफ असंतोष और बगावत की भावना फैल गई, जो मेरठ में सिपाहियों के द्वारा किए गए इस बगावत के स्वर में सुनाई दी जब उन्हें ऐसी कारतूस मुंह से खोलने के लिए कहा गया जिन पर गाय और सुअर की चर्बी लगी हुई थी, इससे उनकी धार्मिक भावनाएं आहत हुईं। हिन्दु तथा मुस्लिम दोनों ही सैनिकों ने इन कारतूसों का उपयोग करने से मना कर दिया, जिन्हें 9 मई 1857 को अपने साथी सैनिकों द्वारा क्रांति करने के लिए गिरफ्तार कर लिया गया।

बगावती सेना ने जल्दी ही दिल्ली पर कब्जा कर लिया और यह क्रांति एक बड़े क्षेत्र में फैल गई और देश के लगभग सभी भागों में इसे हाथों हाथ लिया गया। इसमें सबसे भयानक युद्ध दिल्ली, अवध, रोहिलखण्ड, बुंदेल खण्ड, इलाहबाद, आगरा, मेरठ और पश्चिमी बिहार में लड़ा गया।

विद्रोही सेनाओं में बिहार में कंवर सिंह के तथा दिल्ली में बख्तखान के नेतृत्व में ब्रिटिश शासन को एक करारी चोट दी। कानपुर में नाना साहेब ने पेशावर के रूप में उद्घघोषणा की और तात्या टोपे ने उनकी सेनाओं का नेतृत्व किया जो एक निर्भीक नेता थे। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने ब्रिटिश के साथ एक शानदार युद्ध लड़ा और अपनी सेनाओं का नेतृत्व किया। भारत के हिन्दु, मुस्लिक, सिक्ख और अन्य सभी वीर पुत्र कंधे से कंधा मिलाकर लड़े और ब्रिटिश राज को उखाड़ने का संकल्प लिया। इस क्रांति को ब्रिटिश राज द्वारा एक वर्ष के अंदर नियंत्रित कर लिया गया जो 10 मई 1857 को मेरठ में शुरू हुई और 20 जून 1858 को ग्वालियर में समाप्त हुई।

ईस्ट इन्डिया कम्पनी का अंत

1857 के विद्रोह की असफलता के परिणामस्वरूप, भारत में ईस्ट इन्डिया कंपनी के शासन का अंत भी दिखाई देने लगा तथा भारत के प्रति ब्रिटिश शासन की नीतियों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, जिसके अंतर्गत भारतीय राजाओं, सरदारों और जमींदारों को अपनी ओर मिलाकर ब्रिटिश शासन को सुदृढ़ करने के प्रयास किए गए। रानी विक्टोरिया के दिनांक 1 नवम्बर 1858 की घोषणा के अनुसार यह उद्घोषित किया गया कि इसके बाद भारत का शासन ब्रिटिश राजा के द्वारा व उनके वास्ते सेक्रेटरी आफ स्टेट द्वारा चलाया जाएगा। गवर्नर जनरल को वायसराय की पदवी दी गई, जिसका अर्थ था कि वह राजा का प्रतिनिधि था। रानी विक्टोरिया जिसका अर्थ था कि वह सम्राज्ञी की पदवी धारण करें और इस प्रकार ब्रिटिश सरकार ने भारतीय राज्य के आंतरिक मामलों में दखल करने की असीमित शक्तियां धारण कर लीं। संक्षेप में भारतीय राज्य सहित भारत पर ब्रिटिश सर्वोच्चता सुदृढ़ रूप से स्थापित कर दी गई। अंग्रेजों ने वफादार राजाओं, जमींदारों और स्थानीय सरदारों को अपनी सहायता दी जबकि, शिक्षित लोगों व आम जन समूह (जनता) की अनदेखी की। उन्होंने अन्य स्वार्थियों जैसे ब्रिटिश व्यापारियों, उद्योगपतियों, बागान मालिकों और सिविल सेवा के कार्मिकों (सर्वेन्ट्स) को बढ़ावा दिया। इस प्रकार भारत के लोगों को शासन चलाने अथवा नीतियां बनाने में कोई अधिकार नहीं था। परिणाम स्वरूप ब्रिटिश शासन से लोगों को घृणा बढ़ती गई, जिसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को जन्म दिया।

स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व राजा राम मोहन राय, बंकिम चन्द्र और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे सुधारवादियों के हाथों में चला गया। इस दौरान राष्ट्रीय एकता की मनोवैज्ञानिक संकल्पना भी, एक सामान्य विदेशी अत्याचारी/तानाशाह के विरूद्ध संघर्ष की आग को धीरे-धीरे आगे बढ़ाती रही।

राजा राम मोहन राय (1772-1833) ने समाज को उसकी बुरी प्रथाओं से मुक्त करने के उद्देश्य से 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। उन्होंने सती, बाल विवाह व परदा पद्धति जैसी बुरी प्रथाओं को समाप्त करने के लिए काम किया, विधवा विवाह स्त्री शिक्षा और भारत में अंग्रेजी पद्धति से शिक्षा दिए जाने का समर्थन किया। इन्हीं प्रयासों के कारण ब्रिटिश शासन द्वारा सती होने को एक कानूनी अपराध घोषित किया गया।

स्वामी विवेकानन्द (1863-1902) जो रामकृष्ण परमहंस के शिष्य/अनुयायी थे, ने 1897 में वेलूर में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। उन्होंने वेदांतिक दर्शन की सर्वोच्चता का समर्थन किया। 1893 में शिकागो (यू एस ए) की विश्व धर्म कांफ्रेस में उनके भाषण ने, पहली बार पश्चिमी लोगों को, हिंदू धर्म की महानता को समझने पर मज़बूर किया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई एन सी) का गठन

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की नींव, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी द्वारा 1876 में कलकत्ता में भारत एसोसिएशन के गठन के साथ रखी गई। एसोसिएशन का उद्देश्य शिक्षित मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व करना, भारतीय समाज को संगठित कार्यवाही के लिए प्रेरित करना था। एक प्रकार से भारतीय एसोसिएशन, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जिसकी स्थापना सेवा निवृत्त ब्रिटिश अधिकारी ए.ओ.ह्यूम की सहायता की गई थी, की पूर्वगामी थी। 1895 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई एन सी) के जन्म से नव शिक्षित मध्यम वर्ग के राजनीति में आने के लक्ष्ण दिखाई देने लगे तथा इससे भारतीय राजनीति का स्वरूप ही बदल गया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन दिसम्बर 1885 में बम्बई में वोमेश चन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ तथा इसमें अन्यों के साथ-साथ भाग लिया।

सदी के बदलने के समय, बाल गंगाधर तिलक और अरविंद घोष जैसे नेताओं द्वारा चलाए गए "स्वदेशी आंदोलन" के मार्फत् स्वतंत्रता आंदोलन सामान्य अशिक्षित लोगों तक पहंचा। 1906 में कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन जिसकी अध्यक्षता दादा भाई नौरोजी ने की थी, ने "स्वराज्य" प्राप्त करने का नारा दिया अर्थात् एक प्रकार का ऐसा स्वशासन जा ब्रिटिश नियंत्रण में चुने हुए व्यक्तियों द्वारा चलाया जाने वाला शासन हो, जैसा कनाडा व आस्ट्रेलिया में, जो ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन थे, में प्रचलित था।

बीच, 1909 में ब्रिटिश सरकार ने, भारत सरकार के ढांचे में कुछ सुधार लाने की घोषणा की, जिसे मोरले-मिन्टो सुधारों के नाम से जाना जाता है। परन्तु इन सुधारों से निराशा ही प्राप्त हुई क्योंकि इसमें प्रतिनिधि सरकार की स्थापना की दिशा में बढ़ने का कोई प्रयास दिखाई नहीं दिया। मुसलमानों को विशेष प्रतिनिधित्व दिए जाने के प्रावधान को हिंदु-मुसलमान एकता जिस पर राष्ट्रीय आंदोलन टिका हुआ था, के लिए खतरे के रूप में देखा गया अत: मुसलमानों के नेता मोहम्मद अली जिन्ना समेत सभी नेताओं द्वारा इन सुधारों का ज़ोरदार विरोध किया गया। इसके बाद सम्राट जार्ज पंचम ने दिल्ली में दो घोषणाएं की, प्रथम बंगाल विभाजन जो 1905 में किया गया था को निरस्त किया गया, द्वितीय, यह घोषणा की गई कि भारत की राजधानी कलकत्ता से हटाकर दिल्ली लाई जाएगी।

वर्ष 1909 में घोषित सुधारों से असंतुष्ट होकर स्वराज आन्दोलन के संघर्ष को और तेज कर दिया गया। जहां एक ओर बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिन चन्द्र पाल जैसे महान नेताओं ने ब्रिटिश राज के खिलाफ एक तरह से लगभग युद्ध ही शुरू कर दिया तो दूसरी ओर क्रांतिकारियों ने हिंसात्मक गतिविधियां शुरू कर दीं। पूरे देश में ही एक प्रकार की अस्थिरता की लहर चल पड़ी। लोगों के बीच पहले से ही असंतोष था, इसे और बढ़ाते हुए 1919 में रॉलेट एक्ट अधिनियम पारित किया गया, जिससे सरकार ट्रायल के बिना लोगों को जेल में रख सकती थी। इससे लोगों में स्वदेश की भावना फैली और बड़े-बड़े प्रदर्शन तथा धरने दिए जाने लगे, जिन्हें सरकार ने जलियांवाला बाग नर संहार जैसी अत्याचारी गतिविधियों से दमित करने का प्रयास किया, जहां हजारों बेगुनाह शांति प्रिय व्यक्तियों को जनरल डायर के आदेश पर गोलियों से भून दिया गया।

जलियांवाला बाग नरसंहार

दिनांक 13 अप्रेल 1919 को जलियांवाला बाग में हुआ नरसंहार भारत में ब्रिटिश शासन का एक अति घृणित अमानवीय कार्य था। पंजाब के लोग बैसाखी के शुभ दिन

जलियांवाला बाग, जो स्वर्ण मंदिर के पास है, ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों के खिलाफ अपना शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शित करने के लिए एकत्रित हुए। अचानक जनरल डायर अपने सशस्त्र पुलिस बल के साथ आया और निर्दोष निहत्थे लोगों पर अंधाधुंध गोलियां चलाई, तथा महिलाओं और बच्चों समेंत सैंकड़ों लोगों को मार दिया। इस बर्बर कार्य का बदला लेने के लिए बाद में ऊधम सिंह ने जलियांवाला बाग के कसाई जनरल डायर को मार डाला।

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) के बाद मोहनदास करमचन्द गांधी कांग्रेस के निर्विवाद नेता बने। इस संघर्ष के दौरान महात्मा गांधी ने अहिंसात्मक आंदोलन की नई तरकीब विकसित की, जिसे उसने "सत्याग्रह" कहा, जिसका ढीला-ढाला अनुवाद "नैतिक शासन" है। गांधी जो स्वयं एक श्रद्धावान हिंदु थे, सहिष्णुता, सभी धर्मों में भाई में भाईचारा, अहिंसा व सादा जीवन अपनाने के समर्थक थे। इसके साथ, जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोस जैसे नए नेता भी सामने आए व राष्ट्रीय आंदोलन के लिए संपूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य अपनाने की वकालत की।

असहयोग आंदोलन

सितम्बर 1920 से फरवरी 1922 के बीच महात्मा गांधी तथा भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन चलाया गया, जिसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई जागृति प्रदान की। जलियांवाला बाग नर संहार सहित अनेक घटनाओं के बाद गांधी जी ने अनुभव किया कि ब्रिटिश हाथों में एक उचित न्याय मिलने की कोई संभावना नहीं है इसलिए उन्होंने ब्रिटिश सरकार से राष्ट्र के सहयोग को वापस लेने की योजना बनाई और इस प्रकार असहयोग आंदोलन की शुरूआत की गई और देश में प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रभाव हुआ। यह आंदोलन अत्यंत सफल रहा, क्योंकि इसे लाखों भारतीयों का प्रोत्साहन मिला। इस आंदोलन से ब्रिटिश प्राधिकारी हिल गए।

साइमन कमीशन

असहयोग आंदोलन असफल रहा। इसलिए राजनैतिक गतिविधियों में कुछ कमी आ गई थी। साइमन कमीशन को ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत सरकार की संरचना में सुधार का सुझाव देने के लिए 1927 में भारत भेजा गया। इस कमीशन में कोई भारतीय सदस्य नहीं था और सरकार ने स्वराज के लिए इस मांग को मानने की कोई इच्छा नहीं दर्शाई। अत: इससे पूरे देश में विद्रोह की एक चिंगारी भड़क उठी तथा कांग्रेस के साथ मुस्लिम लीग ने भी लाला लाजपत राय के नेतृत्व में इसका बहिष्कार करने का आव्हान किया। इसमें आने वाली भीड़ पर लाठी बरसाई गई और लाला लाजपत राय, जिन्हें शेर - ए - पंजाब भी कहते हैं, एक उपद्रव से पड़ी चोटों के कारण शहीद हो गए।

नागरिक अवज्ञा आंदोलन

महात्मा गांधी ने नागरिक अवज्ञा आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसकी शुरूआत दिसंबर 1929 में कांग्रेस के सत्र के दौरान की गई थी। इस अभियान का लक्ष्य ब्रिटिश सरकार के आदेशों की संपूर्ण अवज्ञा करना था। इस आंदोलन के दौरान यह निर्णय लिया गया कि भारत 26 जनवरी को पूरे देश में स्वतंत्रता दिवस मनाएगा। अत: 26 जनवरी 1930 को पूरे देश में बैठकें आयोजित की गई और कांग्रेस ने तिरंगा लहराया। ब्रिटिश सरकार ने इस आंदोलन को दबाने की कोशिश की तथा इसके लिए लोगों को निर्दयतापूर्वक गोलियों से भून दिया गया, हजारों लोगों को मार डाला गया। गांधी जी और जवाहर लाल नेहरू के साथ कई हजार लोगों को गिरफ्तार किया गया। परन्तु यह आंदोलन देश के

चारों कोनों में फैल चुका था। इसके बाद ब्रिटिश सरकार द्वारा गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया और गांधी जी ने द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में लंदन में भाग लिया। परन्तु इस सम्मेलन का कोई नतीजा नहीं निकला और नागरिक अवज्ञा आंदोलन पुन: जीवित हो गया।

इस समय, विदेशी निरंकुश शासन के खिलाफ प्रदर्शन स्वरूप दिल्ली में सेंट्रल असेम्बली हॉल (अब लोकसभा) में बम फेंकने के आरोप में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरू को गिरफ्तार किया गया था। 23 मार्च 1931 को उन्हें फांसी की सजा दे दी गई।

भारत छोड़ो आंदोलन

अगस्त 1942 में गांधी जी ने ''भारत छोड़ो आंदोलन'' की शुरूआत की तथा भारत छोड़ कर जाने के लिए अंग्रेजों को मजबूर करने के लिए एक सामूहिक नागरिक अवज्ञा आंदोलन ''करो या मरो'' आरंभ करने का निर्णय लिया। इस आंदोलन के बाद रेलवे स्टेशनों, दूरभाष कार्यालयों, सरकारी भवनों और अन्य स्थानों तथा उप निवेश राज के संस्थानों पर बड़े स्तर पर हिंसा शुरू हो गई। इसमें तोड़ फोड़ की ढेर सारी घटनाएं हुईं और सरकार ने हिंसा की इन गतिविधियों के लिए गांधी जी को उत्तरदायी ठहराया और कहा कि यह कांग्रेस की नीति का एक जानबूझ कर किया गया कृत्य है। जबकि सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, कांग्रेस पर प्रतिबंद लगा दिया गया और आंदोलन को दबाने के लिए सेना को बुला लिया गया।

इस बीच नेता जी सुभाष चंद्र बोस, जो अब भी भूमिगत थे, कलकत्ता में ब्रिटिश नजरबंदी से निकल कर विदेश पहुंच गए और ब्रिटिश राज को भारत से उखाड़ फेंकने के लिए उन्होंने वहां इंडियन नेशनल आर्मी (आईएनए) या आजाद हिंद फौज का गठन किया।

द्वितीय विश्व युद्ध सितम्बर 1939 में शुरू हुआ और भारतीय नेताओं से परामर्श किए बिना भारत की ओर से ब्रिटिश राज के गर्वनर जनरल ने युद्ध की घोषणा कर दी। सुभाष चंद्र बोस ने जापान की सहायता से ब्रिटिश सेनाओं के साथ संघर्ष किया और अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों को ब्रिटिश राज के कब्जे से मुक्त करा लिया तथा वे भारत की पूर्वोत्तर सीमा पर भी प्रवेश कर गए। किन्तु 1945 में जापान ने पराजय पाने के बाद नेता जी एक सुरक्षित स्थान पर आने के लिए हवाई जहाज से चले परन्तु एक दुर्घटनावश उनके हवाई जहाज के साथ एक हादसा हुआ और उनकी मृत्यु हो गई।

""तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा'' - उनके द्वारा दिया गया सर्वाधिक लोकप्रिय नारा था, जिसमें उन्होंने भारत के लोगों को आजादी के इस संघर्ष में भाग लेने का आमंत्रण दिया।

भारत और पाकिस्तान का बंटवारा

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने पर ब्रिटिश प्रधान मंत्री क्लेमेंट रिचर्ड एटली के नेतृत्व में लेबर पार्टी शासन में आई। लेबर पार्टी आजादी के लिए भारतीय नागरिकों के प्रति सहानुभूति की भावना रखती थी। मार्च 1946 में एक केबिनैट कमीशन भारत भेजा गया, जिसके बाद भारतीय राजनैतिक परिदृश्य का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया गया, एक अंतरिम सरकार के निर्माण का प्रस्ताव दिया गया और एक प्रांतीय विधान द्वारा निर्वाचित सदस्यों और भारतीय राज्यों के मनोनीत व्यक्तियों को लेकर संघटक सभा का गठन किया गया। जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व ने एक अंतरिम सरकार का निर्माण किया गया। जबकि मुस्लिम लीग ने संघटक सभा के विचार विमर्श में शामिल होने से मना कर दिया और पाकिस्तान के लिए एक अलग राज्य बनाने में दबाव डाला। लॉर्ड माउंटबेटन, भारत के वाइसराय

ने भारत और पाकिस्तान के रूप में भारत के विभाजन की एक योजना प्रस्तुत की और तब भारतीय नेताओं के सामने इस विभाजन को स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि मुस्लिम लीग अपनी बात पर अड़ी हुई थी।

इस प्रकार 14 अगस्त 1947 की मध्य रात्रि को भारत आजाद हुआ (तब से हर वर्ष भारत में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है)। जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने और 1964 तक उनका कार्यकाल जारी रहा। राष्ट्र की भावनाओं को स्वर देते हुए प्रधानमंत्री, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा,

कई वर्ष पहले हमने नियति के साथ निश्चित किया और अब वह समय आ गया है जब हम अपनी शपथ दोबारा लेंगे, समग्रता से नहीं या पूर्ण रूप से नहीं बल्कि अत्यंत भरपूर रूप से। मध्य रात्रि के घंटे की चोट पर जब दुनिया सो रही होगी हिन्दुस्तान जीवन और आजादी के लिए जाग उठेगा। एक ऐसा क्षण जो इतिहास में दुर्लभ ही आता है, जब हम अपने पुराने कवच से नए जगत में कदम रखेंगे, जब एक युग की समाप्ति होगी और जब राष्ट्र की आत्मा लंबे समय तक दमित रहने के बाद अपनी आवाज पा सकेगा। हम आज दुर्भाग्य का एक युग समाप्त कर रहे हैं और भारत अपनी दोबारा खोज आरंभ कर रहा है।

पहले, संघटक सभा का गठन भारतीय संविधान को रूपरेखा देना के लिए जुलाई 1946 में किया गया था और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को इसका राष्ट्रपति निर्वाचित किया गया था। भारतीय संविधान, जिसे 26 नवम्बर 1949 को संघटक सभा द्वारा अपनाया गया था। 26 जनवरी 1950 को यह संविधान प्रभावी हुआ और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को भारत का प्रथम राष्ट्रपति चुना गया।

भारत का संविधान व राजव्यवस्था

भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ था। इसका निर्माण 'संविधान सभा' के द्वारा किया था, इसकी पहली बैठक 9 दिसम्बर, 1946 को हुई थी। संविधान सभा ने 26 नवम्बर, 1949 को संविधान को अंगीकार कर लिया था। संविधान सभा की पहली बैठक अविभाजित भारत के लिए बुलाई गई थी। 4 अगस्त, 1947 को संविधान सभा की बैठक पुनः हुई और उसके अध्यक्ष सच्चिदानन्द सिन्हा नियुक्त हुए थे। सिन्हा के निधन के बाद डॉ. राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष बने। फ़रवरी, 1948 में संविधान का मसौदा प्रकाशित हुआ। 26 नवम्बर, 1949 को संविधान अन्तिम रूप में स्वीकृत हुआ और 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ।

भारत के संविधान की 12 अनुसूचियाँ

1) प्रथम अनुसूची :- इसके अंतर्गत भारत के 29 राज्य तथा 7 केंद्र शासित प्रदेशो का उल्लेख किया गया है|

2) दूसरी अनुसूची :- इसमें भारतीय संघ के पदाधिकारियों को मिलने वाले वेतन, भत्ते तथा पेंशन का उल्लेख है|

3) तीसरी अनुसूची :- इसमें भारत के विभिन्न पदाधिकारियों की शपथ का उल्लेख है|

4) चौथी अनुसूची :- इसके अंतर्गत राज्यों का राज्यसभा में प्रतिनिधित्व का विवरण मिलता है|

5) पाँचवी अनुसूची :- इसमें अनुसूचित क्षेत्रों तथा अनुसूचित जनजाति के प्रशासन व नियंत्रण के बारे में उल्लेख मिलता है|

6) छटवी अनुसूची :- इसमें असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम राज्यों के जनजाति क्षेत्रों के प्रशासन के बारे में उपबंध हैं|

7) सातवी अनुसूची :- इसके अंतर्गत केंद्र व राज्यों के बीच शक्तियों का बटवारा किया गया है| इस अनुसूची में 3 सूचियों है :-

i) संघ सूची :- इसके अंतर्गत 98 विषय है| इन विषयों पर कानून बनाने का अधिकार केवल केंद्र को है|

ii) राज्य सूची :- इस सूची में 62 विषय है| जिन पर कानून बनाने का अधिकार केवल राज्य को है| लेकिन राष्ट्रहित से सम्बन्धित मामलो में केंद्र भी कानून बना सकता है|

iii) समवर्ती सूची :- इसके अंतर्गत 52 विषय है| इन पर केंद्र व राज्य दोनों कानून बना सकते है|परन्तु कानून के विषय समान होने पर केंद्र सरकार द्वारा बनाया गया कानून मान्य होता है|राज्य द्वारा बनाया गया कनून केंद्र द्वारा बनाने के बाद समाप्त हो जाता है|

8) आठवी अनुसूची :- इसमें भारतीय संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं का उल्लेख किया गया है| मूल संविधान में 14 मान्यता प्राप्त भाषाए थी|

सन 2004 में चार नई भाषाए मैथली, संथाली, डोगरी और बोडो को इसमें शामिल किया गया|

9) नौंवी अनुसूची :- यह अनुसूची प्रथम संविधान संसोधन अधिनियम 1951 द्वारा जोड़ी गयी थी| इस अनुसूची में सम्मिलित विषयों को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती| लेकिन यदि कोई विषय मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करे तो उच्चतम न्यायालय इस कानून की समीक्षा कर सकता है|

अभी तक नौंवी अनुसूची में 283 अधिनियम है, जिनमे राज्य सरकार द्वारा सम्पति अधिकरण का उल्लेख प्रमुख है|

10) दसवी अनुसूची :- इसे 52वें संविधान संशोधन अधिनियम 1985 द्वारा मूल संविधान में जोड़ा गया| इस अनुसूची में दल-बदल सम्बन्धित कानूनों का उल्लेख किया गया है|

11) ग्यारहवी अनुसूची :- यह अनुसूची 73वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 द्वारा मूल संविधान में जोड़ा गया| यह अनुसूची पंचायती राज से सम्बन्धित है, जिसमे पंचायती राज से सम्बन्धित 29 विषय है|

12) बारहवी अनुसूची :- यह अनुसूची 74वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 द्वारा मूल संविधान में जोड़ा गया| इसमें शहरी क्षेत्रों के स्थानीय स्वशासन संस्थानों से सम्बन्धित 18 विषय है|

BANK EXAMS Today

मौलिक कर्तव्य, मौलिक अधिकार, नागरिकता

1. नागरिकता सम्बन्धि प्रावधान भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में है ? - अनुच्छेद 5.11 में
2.भारतीय संविधान कौन-सी नागरिकता प्रदान करता है ? - एकल नागरिकता
3.भारतीय संविधान में शामिल एकल नागरिकता किस देश के संविधान से प्रेरित है ? - इंग्लैण्ड के
4.किस अनुच्छेद के अन्तर्गत संसद को नागरिकता के सम्बन्ध में कानून बनाने का अधिकार प्रदान किया गया है ? - अनुच्छेद 11 में
5.संविधान द्वारा प्रदत्त नागरिकता के सम्बन्ध में संसद ने एक व्यापक नागरिकता अधिनियम कब बनाया ? - 1955 ई. में
6. भारत के नागरिक को कितने प्रकार की नागरिकता प्राप्त है ? - एक

7.जम्मू - कश्मीर के नागरिकों को कितने प्रकार की नागरिकता प्राप्त है ? - दोहरी नागरिकता

8.भारत की नागरिकता किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है ? - जन्म, वंशानुक्रम एवं देशीयकरण से

9. भारतीय संविधान के अनुसार किस तरह भारतीय नागरिकता समाप्त हो सकती है ? - त्यागने, पर्यावसान एवं वंचित किये जाने पर

10.भारत में नागरिकता प्राप्त करने के लिए आवेदन करने से पूर्व किसी व्यक्ति को कितने समय तक भारत में निवास करते हुए होना चाहिए ? - दस वर्ष

11.नागरिकता प्राप्त करने एवं खाने के विषय में विस्तार से चर्चा कहाँ की गई है ? - 1955 के नागरिकता कानून में

12. भारतीय संविधान के किस भाग में मौलिक अधिकार वर्णित है। भाग तीन में

13. मौलिक अधिकारी को सर्वप्रथम किस देश में सवैधानिक मान्यता प्रदान की गई ? - संयुक्त राज्य अमेरिका में

14.भारतीय संविधान के किस अनुच्छेदों मे मौलिक अधिकारों का वर्णन है ? - अनुच्छेद 12 से 35 तक

15.डा. भीमराव अम्बेडकर ने भारतीय संविधान के किस भाग को सर्वाधिक आलोकित भाग कहाँ है ? - भाग तीन को

16.भारतीय संविधान द्वारा भारतीय नागरिकों को कुल कितने मौलिक अधिकार प्रदान किये गये थें ? - सात

17.वर्तमान में भारतीय नागरिकों को कितने मौलिक अधिकार प्राप्त हैं ? - छः

18.भारतीय संविधान में न्यायालय में प्रवर्तनीय है ? - मूल अधिकार

19.कौन मौलिक अधिकारों का निलम्बन कर सकता है ? - राष्ट्रपति

20.मौलिक अधिकारों के बारे में सुनवाई करने का अधिकार किसे प्रदान किया गया है ? - सर्वोच्च न्यायालय को

21.भारतीय संविधान में उद्घोषित मौलिक अधिकारों में संशोधन किसके द्वारा किया जा सकता है ? - संसद द्वारा

22. मूल अधिकारों का संरक्षक किसे माना जाता है ? - उच्चतम न्यायालय को

23. मूल अधिकारों पर आवश्यक प्रतिबंध लगाने का अधिकार किसे है ? - संसद को

24. मौलिक अधिकारों का प्रमुख उद्देश्य क्या है ? - न्यायापालिका की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करना

25. मूल अधिकारों को प्रवर्तित करने की शक्ति किसे प्राप्त है ? - उच्चतम व उच्च न्यायालयों को

26. भारतीय संविधान के किन अनुच्छेदों में समानता का अधिकार दिया गया है? - अनुच्छेदों 14 से 18 तक में

27. विधि के सामने समानता का अधिकार कौन-सा अधिकार है ? - नागरिक अधिकार

28. भारतीय संविधान की अस्पृश्यता उन्मूलन से सम्बन्धित अनुच्छेद है ? - अनुच्छेद 17

29. 1995 में पारित 'अश्पृश्यता अपराध अधिनियम' को वर्तमान में किस नाम से जाना जाता है ? - सिविल अधिकार संरक्षण अधिनियम

30. भारतीय संविधान में स्वतंत्रता का अधिकार किस अनुच्छेंदों में वर्णित है ? - अनुच्छेद 19 से 22 तक में

31. भारत का संविधान स्पष्टतः प्रेस की आजादी की व्यवस्था नही करता है, किन्तु यह आजादी किस अनुच्छेंद में अन्तर्निहित है ? - 19 ;पद्ध । में

32. भारतीय संविधान का अनुच्छेद - 21 किसके विरूद्ध संरक्षण प्रदान करता है ? - कार्यपालिका तथा विधायिका दोनों को

33. भारतीय संविधान का कौन-सा अनुच्छेद व्यक्ति के विदेश यात्रा के अधिकार को संरक्षण प्रदान करता है ? - अनुच्छेद 21

34. भारतीय संविधान के किन अनुच्छेदों में शोषण के विरुद्ध अधिकार वर्णित है ? - अनुच्छेद 23 से 24

35. मौलिक अधिकारों के अन्तर्गत कौन-सा अनुच्छेद बच्चों के शोषण से सम्बन्धित है ? - अनुच्छेद 24

36. किस अनुच्छेद में कहा गया है कि किसी भी व्यक्ति को एक ही अपराध के लिए एक बार से अधिक अभियोजित एवं दंडित नही किया जायेगा ? - अनुच्छेद 20 में

37. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार संविधान के किन अनुच्छेंदो में वर्णित है ? - अनुच्छेंद 25 से 30 तक

38. संविधान के किस अनुच्छेद में सिखों द्वारा कृपाण धारण करना धार्मिक स्वतंत्रता का अंग माना गया है ? - अनुच्छेद 25

39. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेंद मे संवैधानिक उपचारों का अधिकार दिया गया है ? - अनुच्छेद 32 में

40. मौलिक अधिकारों में से किसे डाॅ. बी. आर. अम्बेडकर ने संविधान का हदय एवं आत्मा की संज्ञा दी ? - संवैधानिक उपचारों का अधिकार को

41. मौलिक अधिकारों को लागू करने के लिए किसी न्यायालय द्वारा जारी किया जा सकता है ? - समादेश (रिट)

42. किस याचिका (writ) का शाब्दिक अर्थ होता है, ''हम आदेष देते है'' ? - परमादेष (Mandamus)

43. 44वें संविधान संषोधन विधेयक द्वारा किस मौलिक अधिकार को सामान्य वैधानिक अधिकार बना दिया गया - सम्पत्ति का अधिकार

44. भारत में सम्पत्ति के अधिकार को अब कौन-सा अधिकार माना जाता है ? - कानूनी अधिकार

45. भारत में मत देने का अधिकार होता है ? - एक राजनीतिक अधिकार

46. भारतीय संविधान में मूल कर्तव्यों को शामिल करने का विचार किस देश के संविधान से लिया गया है ? - पूर्व सोवियत संघ से

47. संविधान में मूल कर्तव्य से सम्बन्धित प्रावधान किस समिति की संस्तुतियों के आधार पर सम्मिलित किया गया है ? - स्वर्ण सिंह समिति

48. भारतीय संविधान में मूल कर्तव्य कब समाविष्ट किये गये ? - 1976 ई. में

49. किस संवैधानिक संशोधन अधिनियम द्वारा संविधान मे मूल कर्तव्यों को सम्मिलित किया गया ? - 42वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम, 1976

50. 1976 में 42वे संशोधन द्वारा संविधान में नागरिकों के लिए कितने मौलिक कर्तव्य निश्चित किये गये ? - दस

51. संविधान के किस भाग में मूल कर्तव्यों के अध्याय को जोड़ा गया है ? - भाग प्ट क मंे

52. वर्तमान में संविधान के किस अनुच्छेंद में मौलिक कर्तव्य की चर्चा की गई ? - अनुच्छेंद 51 । में

53. वर्तमान में संविधान में कुल कितने कुल मूल कर्तव्यों का उल्लेख है ? 11

54. भारतीय संविधान में राज्य नीति निर्देषक तत्व ग्रहण किये गये हैं? - आयरलैंड से

55. राज्य के नीति निर्देषक तत्वों का उल्लेख भारतीय संविधान के किस भाग में है ? - भाग पअ में

56. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेंद में राज्य के नीति निर्देषक तत्वों का उल्लेख है ? - अनुच्छेंद 36 से 51

57. संविधान का वह कौन-सा भाग है जो संविधान के निर्माताओं के मस्तिष्क और उद्देष्यों को प्रतिबिम्बित करता है ? - राज्य के नीति निर्देषक तत्व

58. भारतीय संविधान में राज्य के नीति निर्देषक सिद्धांतों को शामिल करने के पीछे मुख्य उद्देष्य क्या था ? - कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना

59. संविधान में राज्य के नीति निर्देषक तत्वों को शामिल करने के पीछे क्या उद्देष्य है ? - सामाजिक आर्थिक लोकतंत्र की स्थापना

60. राज्य की नीति निर्देषक तत्व एक ऐसा चेक है जो बैंक की सुविधानुसार अदा की जायेगी ये कथन है ? - के द्र टी. शाह की

61. भारतीय संविधान का कौन-सा अंग समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने की प्रेरणा देता है - नीति निर्देषक तत्व

62. भारत के संविधान मं अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रोत्साहन

देना सन्निहित है ? - राज्य के नीति निर्देषक तत्व में

63. समान कार्य के लिए समान वेतन भारत के संविधान में सुनिश्चित किया गया ? - राज्य के नीति निर्देशक तत्व

64. भारतीय संविधान के किस भाग में न्यायपालिका तथा कार्यपालिका के प्रार्थक्य प्रावधान है ?- राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत

65. संविधान का कौन-सा अंश भारत के नागरिकों को आर्थिक न्याय प्रदान करने का संकेत करता है - राज्य के नीति निर्देशक तत्व

66. भारत के किस राज्य में समान संहिता लागू है ? - गोवा में

67. राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के अनुसार किस आयु तक के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने की आशा की जाती है ? - 14 वर्ष

68. भारतीय नागरिकों के लिए एक समान सिविल संहिता प्राप्त कराने की बात कही गई है ? - अनुच्छेद 44 में

69. संविधान के किस अनुच्छेद मंे न्यायपालिका का कार्यपालिका से पृथ्क्करण का उल्लेख किया गया है ? - अनुच्छेद 50 मंे

70. राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों में से किस अनुच्छेद का सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के संवर्द्धन से है ? - अनुच्छेद 51 में

71. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद द्वारा निम्न दुर्बल वर्गो को शिक्षा सम्बन्धी सुरक्षा प्रदान की गई है ? - अनुच्छेद 46

72. काम करने के अधिकार को राज्य के नीति निर्देशक तत्वों मे किस अनुच्छेद के अन्तर्गत रखा गया है ? - अनुच्छेद 41 में

'भारत का संविधान' ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली पर आधारित है, किन्तु एक विषय में यह उससे कुछ भिन्न है। ब्रिटेन में संसद सर्वोच्च है। भारत में संसद नहीं; बल्कि संविधान सर्वोच्च है। भारत में न्यायालयों को भारत की संसद द्वारा पास किए गए क़ानून की संवैधानिकता पर निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त है।

संविधान में संशोधन

संविधान में समय-समय संशोधन भी होते रहे हैं। विधायिनी सभा में किसी विधेयक में परिवर्तन, सुधार करने की प्रक्रिया को 'संशोधन' कहा जाता है। सभा या समिति के प्रस्ताव के शोधन की क्रिया के लिए भी इस शब्द का प्रयोग होता है। किसी भी देश का संविधान कितनी ही सावधानी से बनाया जाए, किंतु मनुष्य की कल्पना शक्ति की सीमा बँधी हुई है। भविष्य में आने वाली और बदलने वाली सभी परिस्थितियों की कल्पना वह संविधान के निर्माण काल में नहीं कर सकता। अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों की गुत्थियों के कारण भी संविधान में संशोधन और परिवर्तन करना आवश्यक तथा ज़रूरी हो जाता है।

संशोधन की प्रक्रिया

भारतीय गणतंत्र संविधान के संशोधन का कुछ अंश नमनीय है और कुछ अंश की अनमनीय प्रक्रिया है। इन दोनों विधियों को ग्रहण करने से देश के मौलिक सिद्धांतों का पोषण होगा और संविधान में परिस्थितियों के अनुकूल विकसित होने की प्रेरणाशक्ति भी शामिल होगी :

368. 1[संविधान का संशोधन करने की संसद की शक्ति और उसके लिए प्रक्रिया -- 2[(1) इस संविधान में किसी बात के होते हुए भी, संसद अपनी संविधायी शक्ति का प्रयोग करते हुए इस संविधान के किसी उपबंध का परिवर्धन, परिवर्तन या निरसन के रूप में संशोधन इस अनुच्छेद में अधिकथित प्रक्रिया के अनुसार कर सकेगी।

3[(2)] इस संविधान के संशोधन का आरंभ संसद के किसी सदन में इस प्रयोजन के लिए विधेयक पुरःस्थापित करके ही किया जा सकेगा और जब वह विधेयक प्रत्येक सदन में उस सदन की कुल सदस्य संख्या के बहुमत द्वारा तथा

उस सदन के उपस्थित और मत देने वाले सदस्यों के कम से कम दो-तिहाई बहुमत द्वारा पारित कर दिया जाता है तब 4[वह राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा, जो विधेयक को अपनी अनुमति देगा और तब] संविधान उस विधेयक के निबंधनों के अनुसार संशोधित हो जाएगा :

परंतु यदि ऐसा संशोधन--

(क) अनुच्छेद 54, अनुच्छेद 55, अनुच्छेद 73, अनुच्छेद 162 या अनुच्छेद 241 में, या

(ख) भाग 5 के अध्याय 4, भाग 6 के अध्याय 5 या भाग 11 के अध्याय 1 में, या

(ग) सातवीं अनुसूची की किसी सूची में, या

(घ) संसद में राज्यों के प्रतिनिधित्व में, या

(ङ) इस अनुच्छेद के उपबंधों में,

कोई परिवर्तन करने के लिए है तो ऐसे संशोधन के लिए उपबंध करने वाला विधेयक राष्ट्रपति के समक्ष अनुमति के लिए प्रस्तुत किए जाने से पहले उस संशोधन के लिए 5 *** कम से कम आधे राज्यों के विधान-मंडलों द्वारा पारित इस आशय के संकल्पों द्वारा उन विधान-मंडलों का अनुसमर्थन भी अपेक्षित होगा।

2[(3) अनुच्छेद 13 की कोई बात इस अनुच्छेद के अधीन किए गए किसी संशोधन को लागू नहीं होगी।]

6[(4) इस संविधान का (जिसके अंतर्गत भाग 3 के उपबंध हैं) इस अनुच्छेद के अधीन [संविधान (बयालीसवाँ संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 55 के प्रारंभ से पहले या उसके पश्चात्] किया गया या किया गया तात्पर्यित कोई संशोधन किसी न्यायालय में किसी भी आधार पर प्रश्नगत नहीं किया जाएगा।

(5) शंकाओं को दूर करने के लिए यह घोषित किया जाता है कि इस अनुच्छेद के अधीन इस संविधान के उपबंधों का परिवर्धन, परिवर्तन या निरसन के रूप में संशोधन करने के लिए संसद की संविधायी शक्ति पर किसी प्रकार का निर्बन्धन नहीं होगा।

पहला संशोधन (1951)

इसके माध्यम से स्वतंत्रता, समानता एवं संपत्ति से संबंधित मौलिक अधिकारों को लागू किए जाने संबंधी कुछ व्यवहारिक कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास किया गया l अभिव्यक्ति के मूल अधिकारों पर इसमें उचित प्रतिबंध की व्यवस्था की गई l साथ ही, इस संशोधन द्वारा संविधान में नौंवी अनुसूची को जोड़ा गया, जिसमें उल्लिखित कानूनों को सर्वोच्च न्यायालय के न्यायिक पुनर्विलोकन की शक्तियों के अंतर्गत परीक्षा नहीं की जा सकती है l

दूसरा संशोधन (1952)

दुसरे संसोधन में, अनुच्छेद 81 को हटाया गया जिसमे, लोक सभा प्रतिनिधि के चयन के लिए 7,50,000 की जनसँख्या की अनिवार्यता को हटाया गया था l मूल प्रावधान के अनुसार 7,50,000 की जनसँख्या पर एक लोक सभा में प्रतिनिधित्व चुने की अनिवार्यता थी l इसके बाद लोक सभा की संख्या 500 सदस्यों तक सीमित कर दी गया l

तीसरा संशोधन (1954)

अंतर्गत सातवीं अनुसूची को समवर्ती सूची की 33वीं प्रविष्टी के स्थान पर खाद्यान्न, पशुओं के लिए चारा, कच्चा कपास, जूट आदि को रखा गया, जिसके उत्पादन एवं आपूर्ति को लोकहित में समझने पर सरकार उस पर नियंत्रण लगा सकती है l

चौथा संशोधन (1955)

इसके अंतर्गत व्यक्तिगत संपत्ति को लोकहित में राज्य द्वारा हस्तगत किए जाने की स्थिति में, न्यायालय इसकी क्षतिपूर्ति के संबंध में परीक्षा नहीं कर सकती l

पांचवा संशोधन (1955)

इस संशोधन में अनुच्छेद 3 में संशोधन किया गया, जिसमें राष्ट्रपति को यह शक्ति दी गई कि वह राज्य विधान-मंडलों द्वारा अपने-अपने राज्यों के क्षेत्र, सीमाओं आदि पर प्रभाव डालने वाली प्रस्तावित केंद्रीय विधियों के बारे में अपने विचार भेजने के लिए कोई समय-सीमा निर्धारित कर सकते हैं l

छठा संशोधन (1956)

इस अधिनियम में, संविधान में 7 अनुसूची और संघ सूची में संसोधन किया गया, 92 प्रविष्टि के बाद एक नई राज्य सूची में नई प्रविष्टि को जोड़ा गया, नई प्रविष्टि को 54 के लिए स्थानापन्न थी l इस संशोधन द्वारा सातवीं अनुसूची के संघ सूची में परिवर्तन कर अंतर्राज्यीय बिक्री कर के अंतर्गत कुछ वस्तुओं पर केंद्र को कर लगाने का अधिकार दिया गया है l

सांतवा संशोधन (1956)

इस संशोधन द्वारा भाषीय आधार पर राज्यों का पुनर्गठन किया गया, जिसमें अगली तीन श्रेणियों में राज्यों के वर्गीकरण को समाप्त करते हुए राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में उन्हें विभाजित किया गया. साथ ही, इनके अनुरूप केंद्र एवं राज्य की विधान पालिकाओं में सीटों को पुनर्व्यवस्थित किया गया l

आठवां संशोधन (1959)

इसके अंतर्गत केंद्र एवं राज्यों के निम्न सदनों में अनुसूचित जाती, अनुसूचित जनजाति एवं आंग्ल भारतीय समुदायों के आरक्षण संबंधी प्रावधानों को दस वर्षों अर्थात 1970 तक बढ़ा दिया गया l

नौवीं संशोधन (1960)

इसके द्वारा संविधान की प्रथम अनुसूची में परिवर्तन करके भारत और पाकिस्तान के बीच 1958 की संधि की शर्तों के अनुसार बेरुबारी, खुलना आदि क्षेत्र पाकिस्तान को दे दिए गए l

दसवां संशोधन (1961)

इसके अंतर्गत पूर्व पुर्तगाली अंतः क्षेत्र दादर एवं नगर हवेली को भारत में शामिल कर उन्हें केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा दे दिया गया था l

भारतीय संसद का सिंहावलोकन

संसद (पार्लियामेंट) भारत का सर्वोच्चत विधायी निकाय है। यह द्विसदनीय व्यवस्था है। भारतीय संसद में राष्ट्र पति तथा दो सदन- लोकसभा (लोगों का सदन) एवंराज्यसभा (राज्यों की परिषद) होते हैं। राष्ट्रपति के पास संसद के दोनों में से किसी भी सदन को बुलाने या स्थेगित करने अथवा लोकसभा को भंग करने की शक्ति है। भारतीय संसद का संचालन 'संसद भवन' में होता है। जो कि नई दिल्ली में स्थित है।

लोक सभा में राष्ट्र की जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं जिनकी अधिकतम संख्या 552 है। राज्य सभा एक स्थायी सदन है जिसमें सदस्य संख्या 250 है। राज्या सभा के सदस्यों का निर्वाचन / मनोनयन 6 वर्ष के लिए होता है। जिसके 1/3 सदस्य प्रत्येक 2 वर्ष में सेवानिवृत्त होते है।

संसद भवन का डिजाइन ब्रिटिश आर्किटेक्ट सर एडविन लुटियंस और सर हर्बर्ट बेकर द्वारा 1912-1913 में किया गया था। इसे 1927 में राज्यपरिषद के सदन (house the Council of States), केन्द्रीय विधायिका (the Central Legislative Assembly) और चैम्बर ऑफ़ प्रिंसेस के रूप में खोला गया l

राज्य सभा के सदस्य चुने जाने के लिए अधिकतम आयु सीमा 30 वर्ष है, जबकि लोक सभा के लिए यह आयु सीमा 25 वर्ष है l

संसद के दोनों सदनों को, कुछ मामलों को छोड़कर सभी क्षेत्रों में समान शक्ति यां एवं दर्जा प्राप्त है। कोई भी गैर-वित्तीय विधेयक अधिनियम बनने से पहले दोनों में से प्रत्येक सदन द्वारा पास किया जाना आवश्यतक है। राष्ट्र पति पर महाभियोग चलाने, उपराष्ट्रापति को हटाने, संविधान में संशोधन करने और उच्चपतम न्यातयालय एवं उच्चi न्याषयालयों के न्याायाधीशों को हटाने जैसे महत्वनपूर्ण मामलों में राज्यसभा को लोक सभा के समान शक्तिययां प्राप्ता है। राष्ट्रसपति के अध्यामदेशों, आपात की उदघोषणा और किसी राज्यन में संवैधानिक व्यवस्थार के विफल हो जाने की उदघोषणा और किसी राज्यर में संवैधानिक व्य वस्थाह के विफल हो जाने की उदघोषणा को संसद के दोनों सदनों के समक्ष रखना अनिवार्य है। किसी धन विधेयक और संविधान संशोधन विधेयक को छोड़कर अन्यन किसी भी विधेयक पर दोनों सदनों के बीच असहमति को दोनों सदनों द्वारा संयुक्तस बैठक में दूर किया जाता है। इस बैठक में मामले बहुमत द्वारा तय किए जाते हैं। दोनों सदनों की ऐसी बैठक का पीठासीन अधिकारी लोकसभा का अध्यजक्ष होता है।

संसद का अपना टेलीविज़न प्रसारण केंद है जिसका प्रारंभ 2004 में किया गया; दूरदर्शन राज्य सभा और दूरदर्शन लुक सभा (जो अब लोक सभा के नाम से जाना जाता है)

26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान प्रभावी हुआ, तो संविधान सभा को भारत की अंतरिम संसद बनाया गया l

संसद की कार्रवाही को हिन्दी या अंग्रेजी में संचालित किया जाता है, सदन के पीठासीन अधिकारी किसी भी सदस्य को उसकी मातृभाषा में संवोधित करने के आज्ञा दे सकते है l

राज्य राज्यसभा (राज्य परिषद)

राज्य सभा के विषय में

राज्य सभा संसद का उच्च सदन है

उपराष्ट्रपति इसका अध्यक्ष होता है l उसका उपाध्यक्ष को सदन के सदस्यों के बीच से चुना जाता है l अध्यक्ष में अनुपस्थिति में यही सदन की कार्रवाही का संचालन करता है l राज्य सभा की प्रथम बैठक मई 1952 में आयोजित की गयी l

राज्यसभा की सदस्यता

राजसभा अधिकतम सदस्यों की संख्या 250 है, जिसमें से 238 सदस्य अप्रत्यक्ष रूप से राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों से चुने जाते है और 12 सदस्य राष्ट्रपति के द्वारा मनोनीत किये जाते, जिन्हें कला, साहित्य और विज्ञान और समाज सेवा में क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान मनोनीत किया जाता है l वर्तमान में राज्य सभा की क्षमता 245 है l जिनमें से 233 सदस्यों को राज्य और केन्द्रीय शासित प्रदेशों से चुना गया और जबकि 12 सदस्य मनोनीत किये गे है l राज्य सभा दे सदस्यों का चुना विधान सभा के सदस्य एकल संक्रमणीय मत प्रणाली के आधार पर किया जाता है l

सदस्यों को मनोनीत का प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 80 दिया गया है l

राज्य सभा का कार्यकाल

राज्यसभा एक स्थाई सदन है, ये भंग नहीं की जाती, उसके सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष होता है l इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष के बाद रिटायर हो जाते है l

राज्य सभा के कार्य

यह में स्वतन्त्र बहस के लिए पक्षपातरहित मंच है l इस में धन विधेयक को छोड़ का सभी प्रकार के विधयेक रखे जा सकते हैं l यह राष्ट्रपति के चुनाव और सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के न्यायधिशो को पदच्युत करने ले

लिए होने वाले मतदान में लोक सभा के सामान ही भाग लेती है l

राज्य सभा की विशेष शक्तियां

एक परिसंघीय सदन होने के नाते राज्य सभा को संविधान के अधीन कुछ विशेष शक्तियाँ प्राप्त हैं। राज्यसभा के पास तीन विशेष शक्तियाँ होती है

1. अनु. 249 के अंतर्गत राज्य सूची के विषय पर 1 वर्ष का बिल बनाने का हक

2. अनु. 312 के अंतर्गत नवीन अखिल भारतीय सेवा का गठन 2/3 बहुमत से करना

3. अनु. 67 ब उपराष्ट्रपति को हटाने वाला प्रस्ताव राज्यसभा मे ही लाया जा सकेगा

लोक सभा

लोक सभा, भारतीय संसद का निचला सदन है। भारतीय संसद का ऊपरी सदन राज्य सभा है। लोक सभा सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर लोगों द्वारा प्रत्यक्ष चुनाव द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों से गठित होती है। भारतीय संविधान के अनुसार सदन में सदस्यों की अधिकतम संख्या 552 तक हो सकती है, जिसमें से 530 सदस्य विभिन्न राज्यों का और 20 सदस्य तक केन्द्र शासित प्रदेशों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। सदन में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं होने की स्थिति में भारत का राष्ट्रपति यदि चाहे तो आंग्ल-भारतीय समुदाय के दो प्रतिनिधियों को लोकसभा के लिए मनोनीत कर सकता है।

लोकसभा की कार्यावधि 5 वर्ष है परंतु इसे समय से पूर्व भंग किया जा सकता है

प्रत्येक वर्ष लोक सभा के तीन सत्र होते है :

बजट सत्र: फ़रवरी-मई
मानसून सत्र: जुलाई-सितंबर
शीतकालीन सत्र: नवंबर-दिसंबर

लोक सभा का कार्यकाल

लोकसभा का गठन अपने प्रथम अधिवेशन की तिथि से पाँच वर्ष के लिए होता है, लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर लोकसभा का विघटन राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष के पहले भी किया जा सकता है। लोकसभा के दो बैठकों के बीच का समयान्तराल 6 मास से अधिक नहीं होना चाहिए। विशेष परिस्थिति में लोकसभा की अवधि 1 वर्ष के लिए बढ़ायी जा सकती है। परन्तु लोकसभा की अवधि एक बार में 1 वर्ष से अधिक नहीं बढ़ायी जा सकती और किसी भी स्थिति में आपातकाल की उदघोषणा की समाप्ति के बाद लोकसभा की अवधि 6 माह से अधिक नहीं बढ़ायी जा सकती है l

लोकसभा के कार्य

लोकसभा कार्यकारिणी के कामकाज को नियंत्रित करने के लिए इसे मंत्रियों की के प्रति जवाबदेह बनती है l सभी प्रकार के व्यय की मंजूरी देना लोकसभा का विशेष अधिकार है l किसी प्रकार का कोई भी विधेयक उसमे धन विधेयक भी सम्मिलित है, लोकसभा में रखा जा सकता है l लोक सभा के सदस्य, राज्यसभा के सदस्यों के साथ-साथ राष्ट्रपति के चुनाव और सर्वोच्च न्यायलय और उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को पदच्युत किये जाने के लिए होने वाले चुनाव में मतदान करते है l

संसद के कार्य

संसद संघ और समवर्ती सूची में शामिल विषयों पर कानून बनती है l वह निम्न परिस्थतियों में राज्य सूची पर भी कानून बना सकती है, यदि

यदि सभा इस आशय का प्रस्ताव पारित करे की ऐसा करना राष्ट्रीय हित में है और/या

दो या दो से अधिक राज्य विधायिका इस आशय की संस्तुति संसद से करें

अवशिष्ट सूची में शामिल विषयों पर कानून बनाने का अधिकार संसद को है l

संसद (लोक सभा के माध्यम से) केंद्रीय वित्त पर नियंत्रण रखता है l

संसद (लोक सभा के माध्यम से) कार्यपालिका के कामकाज पर नियंत्रण रखता है l

संविधान में संशोधन संसद के द्वारा ही किया जा सकता है l

संसद को उप-राष्ट्रपति को चुनती और उसके महाभियोग द्वारा उसे पदमुक्त भी कर सकती है l

यह अखिल भारतीय सेवाओं की सृजन संस्तुति, उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों को उचित प्रक्रिया के द्वारा हटा सकती है l

संसदीय अनुमोदन राष्ट्रपति द्वारा लगाये गए आपात की उद्घोषणा की जारी रखने को मंजूरी देती है।

संसद में विधायी प्रक्रियाओं

साधारण विधेयक : वित्त विधेयक के आलावा अन्य सभी विषय से सम्बंधित विध्येकों को साधारण विधेयक कहते हैं l

प्रथम वाचन : साधारण विधेयक किसी भी सदन में प्रस्तुत किया जा सकता है l जब कोई सदस्य किसी विधेयक को सदन में प्रस्तुत करना चाहता है तो पहले सदन को इसकी अग्रिम सूचना देनी होती है l जब सदन इस विधेयक को प्रस्तुत करने की अनुमति दे देता है तो प्रस्तुत करता इस विधेयक का शीर्षक और उद्देश्य बताता है l इस चरण में विधेयक पर किसी भी प्रकार की चर्चा नहीं होती l बाद में इस विधेयक को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाता है l

द्वितीय वाचन : विधेयक के साधारण सिद्धांतो पर चर्चा की जाती है, और विधेयक को उपयुक्त समिति के पास भेज दिया जाता है l इस चरण में किसी भी प्रकार का कोई संसोधन नहीं किया जाता है l

समिति की अवस्था : उपयुक्त समिति विधेयक की समीक्षा करती है और संसोधन का सुझाव देती है l

विचार-विमर्श की अवस्था : समिति अपनी रिपोर्ट सदन को देती है, जहाँ इस पर चर्चा होती है l संसोधन प्रस्तावित किया जाता है, खंड-दर-खंड आधार पर चर्चा होती है l

तृतीय वाचन : इस चरण में विधेयक को स्वीकार या अस्वीकार करने के सम्बन्ध में चर्चा होती है l विधेयक में कोई संसोधन नहीं किया जाता l यदि सदन बहुमत से इसे पारित कर देता है तो विधेयक पारित हो जाता है

धन विधेयक : संविधान के अनुच्छेद 110 मे वर्णित एक या अधिक मामलों से जुड़ा धन विधेयक कहलाता है l ये मामले हैं -किसी कर को लगाना,हटाना, नियमन, धन उधार लेना या कोई वित्तीय जिम्मेदारी जो भारत की संचित निधि से धन की निकासी/जमा करना, संचित निधि से धन का विनियोग, ऐसे व्यय जिन्हें भारत की संचित निधि पर भारित घोषित करना हो, संचित निधि से धन निकालने की स्वीकृति लेना वगैरह l

कोई विधेयक धन विधेयक है या नहीं तो उस पर लोक सभा अध्यक्ष का निर्णय अंतिम होगा. धन विधेयक केवल लोकसभा में प्रस्तावित किए जा सकते हैं l इन्हें पास करने के लिए सदन का सामान्य बहुमत आवश्यक होता है l जब कोई धन बिल लोकसभा पारित करती है तो स्पीकर के प्रमाणन के साथ यह बिल राज्यसभा मे ले जाया जाता है राज्यसभा इस बिल को पारित कर सकती है या 14 दिन के भीतर अपनी सिफारिशों के साथ लोक सभा को लौटा देगी l उस के बाद लोकसभा इन सिफारिशों को मान भी

सकती है और अस्वीकार भी कर सकती है l धन विधेयक को सर्वप्रथम लोक सभा में ही रखा जाता है l

महत्वपूर्ण संसदीय कार्यवाही

नियमापत्ति (Point of Order)

किसी सभा-समिति में बने हुए नियमों या विधानों अथवा परंपराओं या रूढ़ियों के विरुद्ध कोई आचरण, कार्य या व्यवहार होने पर उसके संबंध में की जानेवाली आपत्ति जिसके संबंध में अंतिम निर्णय करने का अधिकार सभापति को होता है l

लेखानुदान

लेखानुदान मांगें (demand for grant) व विनियोग विधेयक सरकार की बजटीय कार्रवाई का एक हिस्सां है l दरअसल सरकार का बजट अप्रैल से मार्च तक के लिए होता है l आमतौर पर फरवरी के अंतिम या मार्च के पहले पखवाड़े में संसद के बजट सत्र में अगले वित्त वर्ष का आम बजट पेश किया जाता है l

कायदे से इस बजट को तीस मार्च तक पारित हो जाना चाहिए ताकि सरकार को अगले वित्त वर्ष के खर्च की अनुमति मिल सके l लेकिन ऐसा होता नहीं क्योंेकि बजट पेश होने के बाद विभिन्नव स्था ई समितियां गृह, रक्षा, कृषि जैसे महत्वलपूर्ण मंत्रालयों के लिए बजटीय प्रस्तावों पर चर्चा करती हैं. इसलिए बजट सत्र के बीच में अवकाश होता है और बजट अप्रैल या मई में जाकर पारित होता है l

लेकिन सरकार इस दौरान कुछ महीने (आमतौर पर तीन माह..अप्रैल,मई, जून) के खर्च की अनुमति संसद से लेखानुदान मांग के रूप में लेती है. इसके लिए जो विधेयक संसद में पेश किया जाता है, उसे तत्संरबंधी विनियोग विधेयक (Appropriation Bill) कहते हैं l लेखानुदान मांगें भी संसद के दोनों सदनों में पारित होनी होती हैं.

गिलोटिन

किसी भी विषय पर चर्चा के लिए सदन में सीमित समय होता है। अलग-अलग मंत्रालयों की सभी अनुदान की मांगे सदन में चर्चा के बाद ही पारित होती हैं। लेकिन जब समयाभाव के कारण लोकसभा अध्यक्ष सभी मंत्रालयों की मांगों को एक साथ सदन में मतदान के लिए रखते हैं तो उसे गिलोटिन कहा जाता है। गिलोटिन होने के बाद सभी मांगे पारित हो जाती हैं, भले ही उन पर अलग-अलग चर्चा हुई हो या नहीं।

भारतीय संविधान पर ब्रिटेन के संविधान का व्यापक प्रभाव है। ब्रिटेन के संविधान का अनुकरण करते हुए भारत में संविधान द्वारा संसदीय शासन की स्थापना की गयी है। जिस तरह ब्रिटेन में शासन की प्रमुख वहाँ की साम्राज्ञी होती है, उसी प्रकार से भारत में राज्य का प्रमुख राष्ट्रपति होता है। ब्रिटेन की साम्राज्ञी की तरह भारत का राष्ट्रपति राज्य का औपचारिक प्रमुख होता है और संघ की वास्तविक शक्ति संघ मन्त्रिमण्डल में निहित होती है। इन दोनों देशों के प्रमुखों में मूलभूत अन्तर यह है कि ब्रिटेन की साम्राज्ञी का पद वंशानुगत होता है, जबकि भारत का राष्ट्रपति एक निर्वाचित मण्डल द्वारा निर्वाचित किया जाता है। इसी अन्तर के कारण भारत को प्रजातांत्रिक गणतन्त्र कहा जाता है। भारत में राष्ट्रपति का पद संविधान के अनुच्छेद 52 द्वारा उपबंधित है।

भारत के राष्ट्रपति

भारत के राष्ट्रपति राष्ट्र प्रमुख और भारत के प्रथम नागरिक हैं, साथ ही भारतीय सशस्त्र सेनाओं के प्रमुख सेनापति भी हैं। राष्ट्रपति के पास पर्याप्त शक्ति होती है पर कुछ अपवादों के अलावा राष्ट्रपति के पद में निहित अधिकांश अधिकार वास्तव में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाले मंत्रिपरिषद के द्वारा उपयोग किए जाते हैं। भारत के राष्ट्रपति नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में रहते हैं, जिसे

रायसीना हिल के नाम से भी जाना जाता है। राष्ट्रपति अधिकतम दो कार्यकाल तक ही पद पर रह सकते हैं। अब तक केवल पहले राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद ने ही इस पद पर दो कार्यकाल पूरा किये हैं। महामहिम प्रतिभा पाटिल भारत की 12वीं तथा इस पद को सुशोभित करने वाली पहली महिला राष्ट्रपति हैं। उन्होंने 25 जुलाई, 2007 को पद व गोपनीयता की शपथ ली थी।

पद की योग्यता

संविधान के अनुच्छेद 58 के अनुसार कोई भी व्यक्ति राष्ट्रपति होने के योग्य तब होगा, जब वह–

भारत का नागरिक हो।

पैंतीस वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।

लोक सभा का सदस्य निर्वाचित किये जाने के योग्य हो, तथा

भारत सरकार के या किसी राज्य सरकार के अधीन अथवा इन दोनों सरकारों में से किसी के नियन्त्रण में किसी स्थानीय या अन्य प्राधिकारी के अधीन लाभ का पद न धारण करता हो। यदि कोई व्यक्ति राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति के पद पर या संघ अथवा किसी राज्य के मंत्रिपरिषद का सदस्य हो, तो यह नहीं माना जाएगा कि वह लाभ के पद पर है।

निर्वाचन

राष्ट्रपति का चुनाव 'अप्रत्यक्ष निर्वाचन' के द्वारा किया जाता है। राष्ट्रपति पद के निर्वाचन में अभ्यर्थी होने के लिए आवश्यक है कि कोई व्यक्ति निर्वाचन के लिए अपना नामांकन करते समय 15,000 रुपये की धरोहर (ज़मानत धनराशि) निर्वाचन अधिकारी के समक्ष जमा करे और उसके नामांकन पत्र का प्रस्ताव कम से कम 50 मतदाताओं के द्वारा किया जाना चाहिए तथा कम से कम 50 मतदाताओं द्वारा उसके नामांकन पत्र का समर्थन भी किया जाना चाहिए।

निर्वाचक मण्डल

अनुच्छेद 54 के अनुसार राष्ट्रपति का निर्वाचन ऐसे निर्वाचक मण्डल के द्वारा किया जाएगा, जिसमें संसद (लोकसभा तथा राज्यसभा) तथा राज्य विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्य शामिल होंगे। राष्ट्रपति के निर्वाचक मण्डल में संसद के मनोनीत सदस्य, राज्य विधान सभाओं के मनोनीत सदस्य तथा राज्य विधान परिषदों के सदस्य (निर्वाचित एवं मनोनीत दोनों) शामिल नहीं किये जाते। संघ राज्य क्षेत्रों की विधानसभाओं के सदस्यों को भी 70वें संविधान संशोधन के पूर्व राष्ट्रपति के निर्वाचक मण्डल में शामिल नहीं किया जाता था। लेकिन 70वें संविधान संशोधन द्वारा यह व्यवस्था कर दी गयी है कि दो संघ राज्य क्षेत्रों, यथा पाण्डिचेरी तथा राष्ट्रीय राजधानी राज्यक्षेत्र दिल्ली की विधानसभाओं के सदस्य राष्ट्रपति के निर्वाचक मण्डल में शामिल किये जायेंगे। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि केवल इन दोनों संघ राज्य क्षेत्रों में ही विधानसभा का गठन हुआ है।

राष्ट्रपति के चुनाव पर प्रभाव

संविधान सभा में राष्ट्रपति के निर्वाचन प्रक्रिया पर विचार करते समय यह ध्यान नहीं दिया गया था कि निर्वाचक मण्डल में से कोई स्थान रिक्त हो तो राष्ट्रपति का चुनाव कैसे होगा? 1957 में जब राष्ट्रपति का चुनाव किया गया तो निर्वाचक मण्डल में कुछ स्थान ख़ाली थे। इसलिए राष्ट्रपति के चुनाव को इस आधार पर चुनौती दी गई की निर्वाचक मण्डल में स्थान रिक्त होने के कारण राष्ट्रपति

का चुनाव अवैध है। बाद में 1961 में ग्याहरवाँ संविधान संशोधन के तहत यह व्यवस्था की गयी कि निर्वाचक मण्डल में स्थान रिक्त होते हुए भी राष्ट्रपति का चुनाव कैसे कराया जा सकता है।

निर्वाचन की पद्धति

राष्ट्रपति के निर्वाचन पद्धति के सम्बन्ध में संविधान के अनुच्छेद 55 में प्रावधान किया गया है, जिसके अनुसार राष्ट्रपति के निर्वाचन में दो सिद्धान्तों को अपनाया जाता है–

समरूपता तथा समतुल्यता

इस सिद्धान्त, जो अनुच्छेद 55 के खण्ड (1) तथा (2) वर्णित हैं, के अनुसार राज्यों के प्रतिनिधित्व के मापमान में एकरूपता तथा सभी राज्यों और संघ के प्रतिनिधित्व में समतुल्यता होगी। इस सिद्धान्त का तात्पर्य यह है कि सभी राज्यों की विधानसभाओं का प्रतिनिधित्व का मान निकालने के लिए एक ही प्रक्रिया अपनायी जाएगी तथा सभी राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों के मत मूल्य का योग संसद के सभी सदस्य के मत मूल्य के योग के समतुल्य अर्थात् समान होगा। राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों के मतमूल्य तथा संसद के सदस्यों के मतमूल्य को निर्धारित करने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनायी जाएगी।

विधानसभा के सदस्य के मत मूल्य का निर्धारण

प्रत्येक राज्य की विधानसभा के सदस्य के मतों की संख्या निकालने के लिए उस राज्य की कुल जनसंख्या (जो पिछली जनगणना के अनुसार निर्धारित है) को राज्य विधानसभा की कुल निर्वाचित सदस्य संख्या से विभाजित करके भागफल को 1000 से विभाजित किया जाता है। इस प्रकार भजनफल को एक सदस्य का मत मूल्य मान लेते हैं। यदि उक्त विभाजन के परिणामस्वरूप शेष संख्या 500 से अधिक आये, तो प्रत्येक सदस्य के मतों की संख्या में एक और जोड़ दिया जाता है। राज्य विधान सभा के सदस्यों का मूल्य निम्न प्रकार निकाला जाता है–

राज्य की विधानसभा के एक सदस्य का मत मूल्य = राज्य की कुल जनसंख्या / राज्य विधानसभा के निर्वाचित X 1 / 1000 सदस्यों की कुल संख्या

संसद सदस्य के मत मूल्य का निर्धारण

संसद सदस्य का मत मूल्य निर्धारित करने के लिए राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों के मत मूल्यों को जोड़कर संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्यों के योग का भाग दिया जाता है। संसद सदस्य का मत मूल्य निम्न प्रकार निकाला जाता है–

संसद सदस्य का मत मूल्य = कुल राज्य विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्यों के मत मूल्यों का योग / संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्यों का योग

इस प्रकार राष्ट्रपति के चुनाव में यह ध्यान रखा जाता है कि सभी राज्य विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्यों के मतों के मूल्य का योग संसद के निर्वाचित सदस्यों के मतों के मूल्य का योग बराबर रहे और सभी राज्यों की विधान सभाओं के निर्वाचित सदस्यों के मत मूल्य का निर्धारण करने के लिए एक समान प्रक्रिया अपनायी जाए। इसे आनुपातिक प्रतिनिधित्व का सिद्धान्त भी कहते हैं।

एकल संक्रमणीय सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का तात्पर्य है कि यदि निर्वाचन में एक से अधिक उम्मीदवार हों, तो मतदाताओं द्वारा मतदान वरीयता क्रम से दिया जाए। इसका आशय यह है कि

मतदाता मतदान पत्र में उम्मीदवारों के नाम या चुनाव चिह्न के समक्ष अपना वरीयता क्रम लिखेगा।

मतगणना

राष्ट्रपति के चुनाव के बाद उसी व्यक्ति को निर्वाचित घोषित किया जाता है, जो डाले गये कुल वैध मतों में से आधे से अधिक मत प्राप्त करे। जब राष्ट्रपति के निर्वाचन के बाद मतों की गणना प्रारम्भ होती है, तो सर्वप्रथम अवैध मतपत्रों को निरस्त करके शेष वैध मत पत्रों का मत मूल्य निकाला जाता है और निकाले गए मत मूल्य में 2 का भाग देकर भागफल में एक जोड़कर निर्वाचित घोषित किये जाने वाले उम्मीदवार का कोटा निकाला जाता है। यदि मतगणना के प्रथम दौर में किसी उम्मीदवार को नियत किये गये कोटा के बराबर मत मूल्य प्राप्त हो जाता है, तो उसे निर्वाचित घोषित कर दिया जाता है। यदि किसी उम्मीदवार को नियम कोटा के बराबर मत मूल्य नहीं प्राप्त होता है, तो मतगणना का दूसरा दौर प्रारम्भ होता है। दूसरे दौर के मतगणना में जिस उम्मीदवार को प्रथम वरीयता का सबसे कम मत मिला होता है, उसको गणना से बाहर करके उसके द्वितीय वरीयता के मत मूल्य को अन्य उम्मीदवारों को स्थानान्तरित कर दिया जाता है। यदि द्वितीय दौर की गणना में भी किसी उम्मीदवार को नियत किये गये कोटा के बराबर मत मूल्य नहीं प्राप्त होता है, तो तीसरे दौर की गणना होती है। तीसरे दौर की गणना में उस उम्मीदवार को गणना से बाहर कर दिया जाता है, जो कि दूसरे दौर की गणना में सबसे कम मूल्य पाता है और इस उम्मीदवार के तृतीय वरीयता मत मूल्य को शेष उम्मीदवारों के पक्ष में स्थानान्तरित कर दिया जाता है। यह प्रक्रिया तब तक अपनायी जाती है, जब तक कि किसी उम्मीदवार को नियत किये गये कोटा के मत मूल्य के बराबर मत मूल्य प्राप्त नहीं हो जाता है।

भारत में राष्ट्रपति का चुनाव

भारत में राष्ट्रपति चुनाव का तरीक़ा

भारत में अब तक 12 व्यक्ति राष्ट्रपति का पद ग्रहण कर चुके हैं, जिनमें से प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 2 बार इस पद को सुशोभित किया है। राष्ट्रपति की पदावधि 5 वर्ष की होती है। लेकिन राजेन्द्र प्रसाद 10 वर्ष से अधिक की अवधि तक राष्ट्रपति का पद धारण किये था। इसका कारण यह था कि 1952 में राष्ट्रपति के प्रथम चुनाव के पूर्व ही 24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा के द्वारा राष्ट्रपति के रूप में डॉ. राजेंद्र प्रसाद का चुनाव कर लिया गया था। संविधान के प्रवर्तन की तिथि अर्थात् 26 जनवरी, 1950 से लेकर 12 मई, 1952 तक राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति के पद पर रहे।

भारत में अब तक 13 बार राष्ट्रपति के चुनाव हुए हैं, जिनमें से एक बार, अर्थात् 1977 में, श्री नीलम संजीव रेड्डी निर्विरोध राष्ट्रपति चुने गये थे। शेष 12 बार राष्ट्रपति पद के चुनाव में एक से अधिक उम्मीदवार थे। अब तक केवल डॉ. राजेंद्र प्रसाद, फ़ख़रुद्दीन अली अहमद, नीलम संजीव रेड्डी तथा ज्ञानी ज़ैल सिंह को छोड़कर अन्य सभी राष्ट्रपति पूर्व में उपराष्ट्रपति के पद को सुशोभित कर चुके थे। डॉ. एस. राधाकृष्णन लगातार दो बार उपराष्ट्रपति तथा एक बार राष्ट्रपति के पद पर आसीन हुए। निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में वी.वी. गिरी ऐसे राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे, जिन्होंने कांग्रेस का स्पष्ट बहुमत होते हुए भी उसके उम्मीदवार को पराजित किया था। अब तक नीलम संजीव रेड्डी एकमात्र ऐसे राष्ट्रपति हुए हैं, जो एक बार चुनाव में पराजित हुए तथा बाद में निर्विरोध निर्वाचित हुए।

19 जुलाई, 2007 को सम्पन्न 13वें राष्ट्रपति के चुनाव के लिए निर्वाचक मण्डल में 4,896 सदस्य थे, जिसमें 776 सांसद और 4,120 विधायक शामिल हैं। इन सबका कुल

मत मूल्य 10,98,882 था। वर्तमान में प्रत्येक सांसद का मत मूल्य 708 है। सांसदों का कुल मत मूल्य 5,49,408 और विधायकों का कुल मत मूल्य 5,49,474 है। राज्यों में उत्तर प्रदेश विधानसभा का मत मूल्य सर्वाधिक 83,824 है। इसके बाद क्रमश: महाराष्ट्र विधानसभा का मत मूल्य 50,400, पश्चिम बंगाल का 44,394, आंध्र प्रदेश का 43,512 और बिहार विधानसभा का मत मूल्य 42,039 है। सिक्किम विधानसभा का मत मूल्य सबसे कम 224 है।

मतदान स्थल

राष्ट्रपति के चुनाव में राज्य विधान सभाओं के सदस्य अपने-अपने राज्यों की राजधानियों में मतदान करते हैं और संसद सदस्य दिल्ली में या अपने राज्य की राजधानी में मतदान कर सकते हैं। यदि कोई संसद सदस्य अपने राज्य की राजधानी में मतदान करना चाहता है तो उसे इसकी सूचना 10 दिन पूर्व ही चुनाव आयोग का देनी चाहिए।

चुनाव का समय

संविधान के अनुच्छेद 62 में केवल यह अपेक्षा की गई है कि राष्ट्रपति का चुनाव निर्धारित समय के अन्दर सम्पन्न करा लिया जाना चाहिए। निर्वाचन की प्रक्रिया को पाँच वर्ष की अवधि समाप्त हो जाने के बाद स्थगित नहीं रखा जा सकता है। राष्ट्रपति का चुनाव कब कराया जाएगा, इसके सम्बन्ध में संविधान में कोई प्रावधान नहीं किया गया है। संविधान में अनुच्छेद 71 (3) में केवल यह प्रावधान किया गया है कि राष्ट्रपति के निर्वाचन से सम्बन्धित या संसक्त किसी विषय का विनियमन संसद विधि द्वारा कर सकेगी। इस शक्ति का प्रयोग करके संसद ने राष्ट्रपतीय तथा उपराष्ट्रपतीय निर्वाचन अधिनियम, 1952 पारित करके यह प्रावधान किया है कि राष्ट्रपति का चुनाव निवर्तमान राष्ट्रपति की पदावधि की समाप्ति के पूर्व ही कराया जाना चाहिए।

किसी राज्य की विधानसभा भंग होने की स्थिति में राष्ट्रपति चुनाव

किसी राज्य की विधानसभा भंग होने की स्थिति में भी राष्ट्रपति का चुनाव सम्पन्न होता है। इस सन्दर्भ में 11वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1961 में यह स्पष्ट किया गया है कि राष्ट्रपति के चुनाव को इस आधार पर चुनौती नहीं दी जा सकती कि निर्वाचक मण्डल में कोई स्थान रिक्त था। सर्वोच्च न्यायालय ने भी यह निर्णय दिया है कि बिना किसी विधानसभा के ही राष्ट्रपति का चुनाव कराया जा सकता है।

महाभियोग की प्रक्रिया

राष्ट्रपति को उसके पद से अनुच्छेद 61 के तहत महाभियोग की प्रक्रिया के द्वारा हटाया जा सकता है। राष्ट्रपति के विरुद्ध महाभियोग की प्रक्रिया तब संचालित की जा सकती है, जब उसने संविधान के प्रावधानों का उल्लंघन किया हो। राष्ट्रपति के विरुद्ध महाभियोग चलाने का संकल्प संसद के किसी भी सदन में पेश किया जा सकता है, लेकिन जिस सदन में महाभियोग का संकल्प पेश किया जाना हो, उसके एक चौथाई सदस्यों के द्वारा हस्ताक्षरित आरोप पत्र राष्ट्रपति को 14 दिन पूर्व दिया जाना आवश्यक है। राष्ट्रपति को आरोप पत्र दिये जाने के 14 दिन बाद ही सदन में महाभियोग का संकल्प पेश किया जा सकता है। जिस सदन में संकल्प पेश किया जाए, उसके सदस्य संख्या के बहुमत तथा उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के दो तिहाई बहुमत से संकल्प पारित किया जाना चाहिए।

जिस सदन में संकल्प पेश किया गया है, उसके द्वारा पारित किये जाने के बाद संकल्प दूसरे सदन को भेजा

जाएगा और दूसरा सदन राष्ट्रपति पर लगाये गये आरोपों की जाँच करेगा। जब दूसरा सदन राष्ट्रपति पर लगाये गये आरोपों की जाँच कर रहा हो, तब राष्ट्रपति या तो स्वयं या तो अपने वकील के माध्यम से लगाये गये आरोपों के सम्बन्ध में अपना पक्ष प्रस्तुत करेगा और स्पष्टीकरण देगा। यदि दूसरा सदन राष्ट्रपति पर लगाये गये आरोपों को सही पाता है तथा अपनी संख्या के बहुमत से तथा उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के दो तिहाई बहुमत पहले सदन द्वारा पारित संकल्प का अनुमोदन कर देता है, तो महाभियोग की कार्रवाई पूर्ण हो जाती है। इस प्रकार राष्ट्रपति अपना पद त्याग करने के लिए बाध्य हो जाता है।

शक्तियाँ तथा अधिकार

भारतीय संविधान द्वारा राष्ट्रपति को निम्नलिखित शक्तियाँ तथा अधिकार प्रदान किये गये हैं–

कार्यपालिका शक्तियाँ

संविधान के अनुच्छेद 73 के अनुसार संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित है और वह अपनी इस शक्ति का प्रयोग अपने अधीनस्थ प्राधिकारियों के माध्यम से करता है। यहाँ अधीनस्थ प्राधिकारी का तात्पर्य केन्द्रीय मंत्रिमण्डल से है। राष्ट्रपति की कार्यपालिका शक्तियों को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–

<u>मंत्रिपरिषद का गठन</u>

अनुच्छेद 74 के अनुसार राष्ट्रपति संघ की कार्यपालिका शक्ति के संचालन में सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद का गठन करता है, जिसका अध्यक्ष प्रधानमंत्री होता है। सामान्यत: राष्ट्रपति ऐसे व्यक्ति को प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त करता है जो कि लोकसभा में बहुमत दल का नेता हो। इस प्रकार नियुक्त किये गये प्रधानमंत्री की सलाह पर वह मंत्रिपरिषद के अन्य सदस्यों की नियुक्ति करता है। साथ ही वह प्रधानमंत्री की सलाह पर मंत्रिपरिषद के किसी सदस्य को बर्ख़ास्त कर सकता है। सामान्यत: यह प्रथा रही है कि प्रधानमंत्री लोकसभा का सदस्य होता है, क्योंकि मंत्रिपरिषद लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होता है, लेकिन राष्ट्रपति को यह अधिकार है कि यदि लोकसभा में बहुमत प्राप्त दल किसी ऐसे व्यक्ति को अपना नेता चुनता है, जो लोकसभा का सदस्य नहीं है या राज्यसभा का सदस्य है, तो राष्ट्रपति ऐसे व्यक्ति को प्रधानमंत्री नियुक्त करता है, लेकिन इस प्रकार नियुक्त किये गये व्यक्ति को 6 माह के अंतर्गत संसद का सदस्य होना पड़ता है। इसी तरह प्रधानमंत्री की सलाह पर राष्ट्रपति ऐसे व्यक्ति को मंत्रिपरिषद में शामिल कर सकता है, जो कि संसद का सदस्य नहीं है। यदि ऐसा व्यक्ति मंत्रिपरिषद में शामिल किया जाता है तो उसे छ: माह के अंतर्गत संसद के किसी सदन का सदस्य बनना पड़ता है। जब कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न हो कि लोकसभा में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत न मिले या लोकसभा में पेश किये गये अविश्वास प्रस्ताव के पारित होने के कारण मंत्रिपरिषद को त्यागपत्र देना पड़े, तो राष्ट्रपति किस व्यक्ति को प्रधानमंत्री नियुक्त करेगा, इस सम्बन्ध में संविधान में कोई प्रावधान नहीं है। यहाँ पर राष्ट्रपति ऐसे व्यक्ति को प्रधानमंत्री नियुक्त कर सकता है, जिसके सम्बन्ध में उसे विश्वास हो कि वह लोकसभा में अपना बहुमत सिद्ध करता है। इस सम्बन्ध में कुछ हद तक राष्ट्रपति को विशेषाधिकार प्राप्त हैं। इसी विशेषाधिकार के प्रयोग में राष्ट्रपति ने 1979 में चरण सिंह को प्रधानमंत्री नियुक्त किया था। चरण सिंह की प्रधानमंत्री पद पर नियुक्ति को इस आधार पर न्यायालय में चुनौती दी गयी थी कि विश्वास मत प्राप्त करने पर ही उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में नियुक्त किया जाना चाहिए था, किन्तु न्यायालन ने अपने निर्णय में कहा कि प्रधानमंत्री की नियुक्ति के सम्बन्ध में यह पूर्ववर्ती शर्त नहीं है कि

लोकसभा में विश्वास मत प्राप्त किया जाय। इसी तरह 1989 में वी. पी. सिंह, 1991 में पी. वी. नरसिंहराव, 1996 में अटल बिहारी वाजपेयी और 1996 में ही एच डी देवगौड़ा तथा 1997 में इन्द्रकुमार गुजराल को प्रधानमंत्री पर पर नियुक्त किया गया था। बाद में 1998 में 12वीं लोकसभा के गठन के बाद राष्ट्रपति ने अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त किया था।

नियुक्ति सम्बन्धी शक्ति

संविधान द्वारा राष्ट्रपति को यह शक्ति दी गई है कि वह संघ से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियाँ करें। राष्ट्रपति इस शक्ति के प्रयोग में कई पदाधिकारियों, जैसे- महान्यायवादी, नियंत्रक-महालेखा परीक्षक, वित्त आयोगों के सदस्यों, संघ लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष तथा अन्य सदस्यों, संयुक्त राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष तथा अन्य सदस्यों, मुख्य निर्वाचन आयुक्त, अन्य निर्वाचन आयुक्तों, उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधाशों, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों, राष्ट्रीय महिला आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्षों तथा सदस्यों, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष तथा सदस्यों, राज्यों के राज्यपालों, संघ राज्यक्षेत्रों के उपराज्यपालों या प्रशासकों की नियुक्ति कर सकता है। राष्ट्रपति ये नियुक्तियाँ मंत्रिपरिषद की सलाह से करता है। वह अपने द्वारा नियुक्त प्राधिकारियों तथा अधिकारियों को पदमुक्त कर सकता है।

आयोगों का गठन

राष्ट्रपति को आयोगों को गठित करने की शक्तियाँ भी प्रदान की गई हैं। यह भारत के राज्य क्षेत्र में सामाजिक और शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग की दशाओं का अन्वेषण करने के लिए आयोग, राजभाषा पर प्रतिवेदन देने के लिए आयोग, अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन पर रिपोर्ट देने के लिए तथा राज्यों में अनुसूचित जनजातियों के कल्याण सम्बन्धी क्रियाकलापों पर रिपोर्ट देने के लिए आयोग का गठन कर सकता है।

सैनिक शक्ति

संघ के रक्षाबलों का समादेश राष्ट्रपति में निहित होता है। वह रक्षा बलों का प्रमुख होता है। राष्ट्रपति अपने में निहित रक्षा बलों का समादेश उस विधि के अनुसार प्रयुक्त करता है, जिसे संसद बनाये। वह रक्षा बलों के प्रमुखों को भी नियुक्त करता है।

राजनयिक शक्तियाँ

अन्य देशों के साथ में भारत का संव्यवहार राष्ट्रपति के नाम से किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में राष्ट्रपति भारत का प्रतिनिधित्व करता है। अन्य देशों में भेजे जाने वाले राजदूत तथा उच्चायुक्त राष्ट्रपति के द्वारा नियुक्त जाते हैं। साथ ही अन्य देशों से भारत में नियुक्ति पर आने वाले राजदूतों व उच्चायुक्तों का स्वागत भी राष्ट्रपति के द्वारा किया जाता है। जब अन्य देश के राजदूत या उच्चायुक्त भारत में नियुक्त होकर आते हैं, तो वे अपना 'प्रत्यय पत्र' राष्ट्रपति के समक्ष पेश करते हैं। समस्त अंतर्राष्ट्रीय क़रार और सन्धियाँ राष्ट्रपति के नाम से की जाती हैं, लेकिन राष्ट्रपति अपनी राजनयिक शक्ति का प्रयोग मंत्रिपरिषद की सलाह पर करता है।

विधायी शक्तियाँ एवं कार्य

संविधान द्वारा राष्ट्रपति को व्यापक विधायी शक्तियाँ प्रदान की गयी हैं, जिन्हें निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है-

संसद से सम्बन्धित शक्ति

राष्ट्रपति संसद का अभिन्न अंग है, क्योंकि संसद का गठन राष्ट्रपति और लोकसभा तथा राज्यसभा से मिलकर होता है। संसद से सम्बन्धित राष्ट्रपति की शक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

1. अनुच्छेद 331 के तहत वह लोकसभा में आंग्ल-भारतीय समुदाय के दो सदस्यों को नामजद कर सकता है, यदि उसके विचार में लोकसभा में उस समूदाय को उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिला है।
2. वह राज्यसभा में 12 सदस्यों को मनोनीत कर सकता है (अनुच्छेद 80, 1)।
3. यदि संसद के किसी सदस्य की अयोग्यता के सम्बन्ध में, दल-बदल के आधार पर के सिवाय, सवाल उत्पन्न होता है, तो उसका निर्णय राष्ट्रपति करेगा, लेकिन राष्ट्रपति ऐसा निर्णय करने के लिए निर्वाचन आयोग की राय लेगा।
4. राष्ट्रपति संसद के सत्र को आहूत करता है, लेकिन संसद के एक सत्र की अन्तित बैठक और आगामी सत्र की प्रथम बैठक के लिए नियत तारीख़ के बीच छ: मास का अन्तर नहीं होना चाहिए।
5. वह सदनों या किसी सदन का सत्रावसान कर सकता है तथा लोकसभा का विघटन कर सकता है।
6. वह संसद के किसी एक सदन में या संसद के संयुक्त अधिवेशन में अभिभाषण कर सकता है।
7. संसद में लम्बित किसी विधेयक के सम्बन्ध में संसद के दोनों सदनों या किसी सदन को संदेश भेज सकता है और उसके संदेश पर यथाशीघ्र विचारण किया जाता है।
8. वह लोकसभा के प्रत्येक साधारण निर्वाचन के पश्चात् प्रथम सत्र के आरम्भ में और प्रत्येक वर्ष के प्रथम सत्र के आरम्भ में संसद के संयुक्त अधिवेशन में अभिभाषण कर सकता है।
9. संसद द्वारा कोई विधेयक पारित किये जाने पर उसे राष्ट्रपति के समक्ष अनुमति के लिए भेजा जाता है। राष्ट्रपति या तो उस पर अपनी अनुमति देता है या विधेयक पर पुन: विचार करने के लिए संसद को वापस भेजता है। यदि संसद द्वारा पुन: विधेयक पारित कर दिया जाता है तो राष्ट्रपति उस पर अपनी अनुमति देने के लिए बाध्य होता है।

विधेयक को पेश करने की सिफ़ारिश करने की शक्ति

निम्नलिखित विधेयक राष्ट्रपति की सिफ़ारिश के बिना संसद में पेश नहीं किये जा सकते-

1. धन विधेयक, लेकिन किसी कर को घटाने या समाप्त करने का प्रावधान करने वाले विधेयक राष्ट्रपति की सिफ़ारिश के बिना संसद में पेश किये जा सकते हैं।
2. राज्य का निर्माण करने या विद्यमान राज्य के क्षेत्र, सीमा या नाम में परिवर्तन करने वाले विधेयक।
3. जिस कराधान में राज्य का हित हो, उस कराधान पर प्रभाव डालने वाले विधेयक।
4. जिस विधेयक को अधिनियमित और प्रवर्तित करने से भारत की संचित निधि से व्यय करना पड़ेगा, सम्बन्धी विधेयक।
5. भूमि अधिग्रहण से सम्बन्धित विधेयक।
6. व्यापार की स्वतंत्रता पर रोक लगाने वाले राज्य का कोई विधेयक।

राज्य विधान मण्डल के द्वारा बनायी जाने वाली विधि के सम्बन्ध में राष्ट्रपति की शक्ति

राज्य विधान मण्डल द्वारा बनायी जाने वाली विधि के सम्बन्ध में राष्ट्रपति को निम्नलिखित शक्तियाँ प्राप्त हैं-

1. यदि राज्य विधान मण्डल कोई ऐसा विधेयक पारित करता है, जिससे उच्च न्यायालय की अधिकारिता प्रभावित होती है, तो राज्यपाल उस

विधेयक पर अनुमति नहीं देगा और उसे राष्ट्रपति की अनुमति के लिए आरक्षित कर देगा।

2. राज्य विधान मण्डल के द्वारा सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए पारित विधेयक को राष्ट्रपति की अनुमति के लिए आरक्षित रखा जाएगा।
3. किसी राज्य के अन्दर या दूसरे राज्यों के साथ व्यापार आदि पर प्रतिबन्ध लगाने वाले विधेयकों को विधानसभा में पेश करने के पहले राष्ट्रपति की अनुमति लेनी होगी।
4. वित्तीय आपात स्थिति के प्रवर्तन की स्थिति में राष्ट्रपति निर्देश दे सकता है कि सभी धन विधेयकों को राज्य विधान सभा में पेश करने के पहले उस पर राष्ट्रपति की अनुमति ली जाए।

अध्यादेश जारी करने की शक्ति

संविधान के अनुच्छेद 123 के तहत राष्ट्रपति को अध्यादेश जारी करने की शक्ति प्रदान की गयी है। राष्ट्रपति द्वारा जारी अध्यादेश का वही प्रभाव होता है, जो संसद द्वारा पारित तथा राष्ट्रपति के द्वारा अनुमोदित अधिनियम को होता है, लेकिन अन्तर यह होता है कि अधिनियम का प्रभाव तब तक स्थायी होता है, जब तक की संसद के द्वारा या राष्ट्रपति के अध्यादेश द्वारा निरस्त न कर दिया जाए, इसके विपरीत अध्यादेश केवल 6 मास तक ही प्रवर्तन में रहता है।

राष्ट्रपति के द्वारा अध्यादेश संसद के विश्रान्तिकाल में उस समय जारी किया जाता है, जब राष्ट्रपति को यह विश्वास हो जाए कि ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गयी है, जिसके अनुसार अविलम्ब कार्रवाई करना आवश्यक है। राष्ट्रपति के द्वारा जारी अध्यादेश का प्रभाव केवल 6 मास तक ही रहता है यदि 6 मास के अन्दर संसद द्वारा अनुमोदित न कर दिया जाए। संसद द्वारा अनुमोदित किये जाने पर वह राष्ट्रपति की अनुमति प्राप्त करने के बाद अधिनियम हो जाता है। यदि संसद के अधिवेशन के प्रारम्भ के बाद पहले जारी किये गये अध्यादेश को संसद द्वारा अनुमोदित किये जाने के लिए 6 मास के अन्दर संसद में पेश नहीं किया जाता है, तो अध्यादेश प्रभावहीन हो जाता है। यदि संसद के एक सदन का सत्र चल रहा है और दूसरे सदन का सत्र स्थगित हो, तब भी अध्यादेश जारी किया जा सकता है, क्योंकि संसद का एक सदन कोई विधेयक पारित कर उसे क़ानून बनाने के लिए सक्षम नहीं है।

नियम बनाने की शक्ति

राष्ट्रपति को निम्नलिखित के सम्बन्ध में क़ानून बनाने की शक्ति है-

1. राष्ट्रपति के नाम से किये जाने वाले और निष्पादित आदेशों तथा अन्य लिखतों को अधिप्रमाणित करने के ढंग के सम्बन्ध में।
2. राज्यसभा के सभापति तथा लोकसभा के अध्यक्ष से परामर्श करके दोनों सदनों की संयुक्त बैठकों से सम्बन्धित और उनमें परस्पर संचार से सम्बन्धित प्रक्रिया के नियम।
3. संघ या राज्य की सेवा करने वाले व्यक्तियों की भर्ती और सेवा की शर्तों को विनियमित करने वाले नियम।
4. संयुक्त लोक सेवा आयोग तथा संघ लोक सेवा आयोग के सदस्यों कर्मचारियों की सेवा शर्तों को विनियमित करने वाले नियम।

राष्ट्रपति की वीटो शक्ति

संविधान द्वारा राष्ट्रपति को स्पष्टत: वीटो की शक्ति प्रदान नहीं की गयी है। लेकिन संविधान के अनुसार किये गये कार्यों तथा स्थापित परम्पराओं के अनुसार यह माना जाता है कि राष्ट्रपति को निम्नलिखित तीन प्रकार की वीटो शक्तियाँ प्राप्त हैं-

पूर्ण वीटो- जब राष्ट्रपति किसी विधेयक को अनुमति नहीं देता है तो यह कहा जाता है कि राष्ट्रपति ने पूर्ण वीटो की

शक्ति का प्रयोग किया है। राष्ट्रपति इस वीटो की शक्ति का प्रयोग गैर सरकारी विधेयक पर अनुमति न प्रदान करके कर सकता है या ऐसे विधेयक पर अनुमति न प्रदान करके कर सकता है जो ऐसी सरकार के द्वारा पारित किया गया हो, जो विधेयक पर अनुमति देने के पूर्व ही त्यागपत्र दे दे और नयी सरकार विधेयक पर अनुमति न देने की सिफ़ारिश करे।

निलम्बनकारी वीटो- जब राष्ट्रपति किसी विधेयक के प्रभाव को निलम्बित रखने के लिए अनुमति देने हेतु अपने पास प्रेषित विधेयक को संसद के पास पुनर्विचार के लिए भेजता है, तो यह कहा जाता है कि उन्होंने निलम्बनकारी वीटो का प्रयोग किया है।

जेबी वीटो- इस पॉकेट वीटो भी कहा जाता है। जब राष्टपति संसद द्वारा पारित करके अनुमति के लिए भेजे गए विधेयक पर न तो अनुमति देता है और न ही उसे पुनर्विचार के लिए वापस भेजता है तो यह कहा जाता है कि राष्ट्रपति ने जेबी या पॉकेट वीटो का प्रयोग किया है। इस वीटो का प्रयोग राष्ट्रपति (ज्ञानी ज़ेल सिंह) ने 1986 में संसद द्वारा पारित भारतीय डाक (संशोधन) अधिनियम के सन्दर्भ में किया है। राष्ट्रपति ने न तो इस पर अपनी अनुमति दी है और न ही इसे संसद के पास पुनर्विचार के लिए भेजा है।

वित्तीय शक्तियाँ

राष्ट्रपति को संविधान द्वारा कई वित्तीय शक्तियाँ प्रदान की गयी हैं। धन विधेयक तथा वित्त विधेयक को तभी लोकसभा में पेश किया जाता है जब राष्ट्रपति उसकी सिफ़ारिश करे। जिस विधेयक को प्रवर्तित किये जान पर भारत की संचित निधि में व्यय करना पड़े, उस विधेयक को संसद द्वारा तभी पारित किया जाएगा, जब राष्ट्रपति उस विधेयक पर विचार-विमर्श करने की सिफ़ारिश संसद से करें। जिस कराधान में राज्य का हित सम्बद्ध है, उस कराधान से सम्बन्धित विधेयक को राष्ट्रपति की अनुमति से ही लोकसभा में पेश किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रपति प्रत्येक वर्ष वित्तमंत्री के माध्यम से वर्ष का बजट लोकसभा में पेश करवाता है तथा प्रत्येक पाँच वर्ष की समाप्ति पर वित्त आयोग का गठन करता है। राष्ट्रपति वित्त आयोग द्वारा की गयी प्रत्येक सिफ़ारिश को, उस पर किये गये स्पष्टीकरण ज्ञापन सहित संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाता है।

न्यायिक शक्तियाँ

संविधान द्वारा राष्ट्रपति को तीन प्रकार की न्यायिक शक्तियाँ प्रदान की गई हैं, जिनका विवरण निम्न प्रकार से है-

न्यायाधीशों की नियुक्ति करने की शक्ति

अनुच्छेद 124 के अनुसार राष्ट्रपति को उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को नियुक्त करने की शक्ति है। उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति करने के लिए राष्ट्रपति उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालय के ऐसे न्यायाधीशों से परामर्श करेगा, जिनसे परामर्श करना वह आवश्यक समझे। मुख्य न्यायाधीश के अतिरिक्त अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति के पूर्व वह मुख्य न्यायाधीश से परामर्श करेगा। लेकिन संविधान में स्पष्ट रूप से यह प्रावधान नहीं किया गया है कि राष्ट्रपति मुख्य न्यायाधीश के परामर्श से बाध्य होंगे या नहीं। लेकिन 6 अक्टूबर, 1993 को दिये गये एक निर्णय में उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि

- उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठतम न्यायाधीश को ही देश का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया जाना चाहिए,
- उच्चतम न्यायालय के अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति के सम्बन्ध में राष्ट्रपति उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की राय मानने के लिए बाध्य है।

राष्ट्रपति उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों तथा अन्य न्यायाधीशों को नियुक्त करता है। उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों को नियुक्त करते समय राष्ट्रपति भारत के मुख्य न्यायाधीश तथा राज्य के राज्यपाल से परामर्श

करता है, जबकि अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति करते समय वह भारत के मुख्य न्यायाधीश, राज्य के राज्यपाल तथा सम्बन्धित उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श करता है। 6 अक्टूबर, 1993 को दिये गये निर्णय के अनुसार राष्ट्रपति ऐसी नियुक्तियाँ करते समय भारत के मुख्य न्यायाधीशों की राय को वरीयता देने के लिए बाध्य है। राष्ट्रपति उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों का एक उच्च न्यायालय से दूसरे उच्च न्यायालय में स्थानान्तरण कर सकता है।

क्षमादान की शक्ति

संविधान के अनुच्छेद 72 के तहत राष्ट्रपति को क्षमा तथा कुछ मामलों में दण्डादेश के निलम्बन, परिहार या लघुकरण की शक्ति प्रदान की गयी है। राष्ट्रपति को निम्नलिखित मामले में क्षमा, तथा दोषसिद्धि के निलम्बन, परिहार या लघुकरण की शक्ति प्राप्त है-

1. सेना न्यायालयों के द्वारा दिये गये दण्ड के मामले में।
2. मृत्यु दण्डादेश के सभी मामलों में।
3. उन सभी मामलों में, जिन्हें दण्ड या दण्डादेश ऐसे विषय सम्बन्धी किसी विधि के विरुद्ध अपराध के लिए दिया गया है, जिस विषय तक संघ की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार है।

क्षमा का तात्पर्य अपराध के दण्ड से मुक्ति प्रदान करना है। प्रतिलम्बन का तात्पर्य विधि द्वारा विहित दण्ड के स्थायी स्थगन से है। परिहार के अंतर्गत दण्ड की प्रकृति में परिवर्तन किए बिना दण्ड की मात्रा को कम किया जाना है। लघुकरण का अर्थ दण्ड की प्रकृति में परिवर्तन करना है। राष्ट्रपति अपनी इस शक्ति का प्रयोग मंत्रिपरिषद की सलाह पर करता है और राष्ट्रपति द्वारा यदि इस शक्ति का प्रयोग किया जाता है तो उसका न्यायिक पुनर्विलोकन न्यायालय द्वारा किया जा सकता है।

उच्चतम न्यायालय से परामर्श लेने का अधिकार

अनुच्छेद 143 के अनुसार जब राष्ट्रपति को ऐसा प्रतीत हो कि विधि या तथ्य का कोई ऐसा प्रश्न उत्पन्न हुआ है या उत्पन्न होने की सम्भावना है, जो ऐसी प्रकृति का और व्यापक महत्त्व का है कि उस पर उच्चतम न्यायालय की राय प्राप्त करना समीचीन है, तब वह उस प्रश्न पर उच्चतम न्यायालय की राय मांग सकता है।

आपातकालीन शक्ति

राष्ट्रपति को निम्नलिखित आपातकालीन शक्तियाँ प्रदान की गयी हैं-

1. राष्ट्रीय आपात घोषित करने की (अनुच्छेद 352)।
2. राज्यों में संवैधानिक तन्त्र की विफलता पर वहाँ आपातकाल घोषित करने की (अनुच्छेद 356)।
3. वित्तीय आपात घोषित करने की (अनुच्छेद 360)।

राष्ट्रपति का विशेषाधिकार

संविधान द्वारा राष्ट्रपति को यह विशेषाधिकार प्रदान किया गया है कि वह अपने पद के किसी कर्तव्य के निर्वहन तथा शक्तियों के प्रयोग में किये जाने वाले किसी कार्य के लिए न्यायालय के प्रति उत्तरदायी नहीं होगा।

संवैधानिक स्थिति

संविधान की भावना तथा संविधान सभा में इसके सदस्यों द्वारा किये गये विचारों के अनुसार राष्ट्रपति राष्ट्र का केवल औपचारिक प्रधान होगा, लेकिन मूल संविधान के अनुच्छेद 74 (1) में यह प्रावधान किया गया था कि राष्ट्रपति को उसके कृत्यों का प्रयोग करने में सहायता और सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद होगी, जिसका प्रधान प्रधानमंत्री होगा। इसका यह अर्थ लगाया जाता था कि राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की सलाह मानने के लिए बाध्य नहीं है और वह अपने विवेक से भी संविधान के प्रावधानों के अनुसार अपने कृत्यों का निर्वहन कर सकता है। इसी प्रावधान के कारण प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल

नेहरू तथा तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के बीच हिन्दू कोड तथा चीन से सम्बन्ध आदि मामलों में काफ़ी मतभेद था, जिससे दोनों के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। इसके बावजूद 1976 तक संविधान के इस प्रावधान को क़ायम रखा गया, परन्तु 42वें संविधान संशोधन के द्वारा अनुच्छेद 74 (1) में संशोधन करके यह व्यवस्था की गयी कि राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की सलाह के अनुसार ही कार्य करेगा और इस प्रकार राष्ट्रपति को मंत्रिपरिषद की सलाह के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य कर दिया गया, किन्तु 44वें संविधान संशोधन द्वारा अनुच्छेद 74 (1) में यह व्यवस्था कर दी गयी कि यदि राष्ट्रपति को मंत्रिपरिषद द्वारा कोई सलाह दी जाती है तो वह मंत्रिपरिषद की दी गयी सलाह पर पुनर्विचार करने के लिए कह सकता है। इस प्रकार मंत्रिपरिषद द्वारा पुनर्विचार के बाद की गयी सलाह पर राष्ट्रपति कार्य करने के लिए बाध्य है।

उपराष्ट्रपति

भारत के राष्ट्रपति के बाद अधिकृत अग्रता-अधिपत्र में सर्वोच्च स्थान उपराष्ट्रपति को प्रदान किया गया है। संविधान के अनुच्छेद-63 के अनुसार भारत की संघीय कार्यपालिका में उपराष्ट्रपति पद की व्यवस्था की गई है। अनुच्छेद-64 के अनुसार उपराष्ट्रपति को राज्यसभा के पदेन सभापति के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। यह अमेरिकी प्रथा का अनुसरण है। उपराष्ट्रपति राज्यसभा के सभापति के रूप में राज्यसभा की कार्यवाहियों का सभापतित्व करता है और लोकसभा में अपने प्रतिरूप अध्यक्ष की भांति ही सभा के सभी मामलों से संबद्ध कार्यों का निर्वहन करता है।

यद्यपि संविधान द्वारा उपराष्ट्रपति को कोई विशेष अधिकार नहीं प्रदान किए गए हैं, लेकिन प्रथा के अनुसार, वह अनेक औपचारिक कृत्य करने लगा है। वह राजदूतों तथा विदेशों के विशिष्ट व्यक्तियों आदि से भेंट करता है। उपराष्ट्रपति का मुख्य कार्य अमेरिका के उपराष्ट्रपति की तरह उच्च सदन की अध्यक्षता करना है।

अनुच्छेद-65 में कहा गया है कि उपराष्ट्रपति निम्न परिस्थितियों में राष्ट्रपति का पद ग्रहण कर सकता है- राष्ट्रपति की मृत्यु, पदत्याग, महाभियोग अथवा अन्य किसी प्रकार से पदच्युत होने तथा रोग या अनुपस्थिति के कारण कार्यभार संचालन में असमर्थ होने पर।

जब उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा या राष्ट्रपति के कृत्यों का निर्वहन करेगा, तब वह राज्यसभा के सभापति के पद के कर्तव्यों का पालन नहीं करेगा।

जब उपराष्ट्रपति राष्ट्रपति के रूप में उसके कार्यों का निर्वहन करेगा, तब उसे राष्ट्रपति की सम्पूर्ण शक्तियां और उन्मुक्तियां उपलब्ध होगी। संविधान की द्वितीय सूची के अनुसार जब कभी उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति का पद ग्रहण करता है तो उसे राष्ट्रपति पद के वेतन भत्ते तथा विशेषाधिकार सभी प्राप्त होते हैं। उपराष्ट्रपति केवल छः महीने तक ही राष्ट्रपति का पद संभाल सकता है।

निर्वाचन प्रक्रिया

उपराष्ट्रपति का निर्वाचन संसद के दोनों सदनों के सदस्यों से मिलकर बन्ने वाले निर्वाचक-मंडल के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा किया जाता है (अनुच्छेद-66)। उपराष्ट्रपति का चुनाव भी अप्रत्यक्ष प्रणाली के आधार पर किया जाता है। संविधान के ग्यारहवें संशोधन (1961) के अनुसार, अब आवश्यक नहीं है। उपराष्ट्रपति के चुनाव संबंधी विवाद सर्वोच्च न्यायालय द्वारा सुलझाये जाते हैं।

योग्यता

उपराष्ट्रपति के रूप में किसी व्यक्ति के निर्वाचन के लिए पात्रता की शर्तें वही हैं, जो राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिए हैं।

भारत का नागरिक

पैंतीस वर्ष से ऊपर की आयु

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल या संघ या किसी राज्य के मंत्री का पद छोड़कर कोई और लाभ का पद धारण नहीं करना चाहिए (अनुच्छेद 66) ।

पदावधि एवं हटाये जाने की स्थिति

उपराष्ट्रपति पद की पदावधि पांच वर्षों की होती है। उपराष्ट्रपति राष्ट्रपति को संबोधित अपने हस्ताक्षर सहित लेख द्वारा अपना पद त्याग सकता है। वह राज्यसभा के ऐसे संकल्प द्वारा हटाया जा सकता है जिसे राज्यसभा के तत्कालीन समस्त सदस्यों के बहुमत से पारित किया गया हो और जिसे लोकसभा की सहमति प्राप्त हो। उसे हटाए जाने के लिए महाभियोग की आवश्यकता नहीं है लेकिन उपराष्ट्रपति को 14 दिन पूर्व नोटिस देना आवश्यक है। जब उपराष्ट्रपति कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करता है तब उसे महाभियोग लगाकर उसी विधि से हटाया जा सकेगा जिस विधि से संविधान में राष्ट्रपति को हटाये जाने की व्यवस्था है।

प्रधानमंत्री

BANK EXAMS

भारतीय संविधान के अनुसार प्रधानमंत्री का पद बहुत ही महत्त्वपूर्ण पद है, क्योंकि प्रधानमंत्री ही संघ कार्यपालिका का प्रमुख होता है। चूंकि भारत में ब्रिटेन के समान संसदीय शासन व्यवस्था कों अंगीकार किया गया है, इसलिए प्रधानमंत्री पद का महत्त्व और अधिक हो गया है। अनुच्छेद 74 के अनुसार प्रधानमंत्री मंत्रिपरिषद का प्रधान होता है। वह राष्ट्रपति के कृत्यों का संचालन करता है।

चयन तथा नियुक्ति

प्रधानमंत्री के चयन तथा नियुक्ति के सम्बन्ध में संविधान के अनुच्छेद 75 में केवल यह प्रावधान किया गया है कि प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति करेगा। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि राष्ट्रपति अपने विवेकाधिकार से प्रधानमंत्री की नियुक्ति कर सकता है। सामान्य प्रथा यह है कि राष्ट्रपति उसी व्यक्ति को प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त कर सकता है जो लोकसभा में बहुमत प्राप्त दल का नेता होता है। जो व्यक्ति लोकसभा में बहुमत प्राप्त दल का नेता चुना जाता है, वह राष्ट्रपति से मिलकर सरकार बनाने का दावा करता है। इसके बाद उस व्यक्ति को प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किया जाता है। यदि सामान्य चुनाव में कोई भी दल बहुमत नहीं प्राप्त करता, तो राष्ट्रपति लोकसभा में सबसे बड़े दल के नेता को या किसी ऐसे व्यक्ति को, जिसे कई दलों का समर्थन प्राप्त हो, को प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त करके उससे यह अपेक्षा करता है कि वह एक मास के अंतर्गत लोकसभा में अपना बहुमत साबित करे। उदाहरणार्थ 1979 में चरण सिंह जिन्हें कई दलों ने समर्थन दिया था, तथा 1989 में वी. पी. सिंह राष्ट्रपति के द्वारा प्रधानमंत्री नियुक्त किये गये थे। इसी प्रकार 1991 में जब लोकसभा के सामान्य चुनाव (मध्यावधि) में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला था, तब लोकसभा में सबसे बड़े देल के नेता पी. वी. नरसिंहराव को राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किया था। यही स्थिति 11वीं लोकसभा और फिर 1998 में गठित 12वीं लोकसभा में भी देखने को मिली, जब राष्ट्रपति ने लोकसभा चुनाव में किसी दल अथवा गठबंधन के बहुमत नहीं मिलने के कारण सबसे बड़ा एवं बड़े गठबंधन के नेता अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

जब कार्यरत मंत्रिपरिषद के विरुद्ध लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पारित हो जाता है, तो मंत्रिपरिषद को त्यागपत्र देना पड़ता है। ऐसी स्थिति में राष्ट्रपति लोकसभा में विपक्ष के नेता को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करता है, लेकिन उसके इन्कार करने पर उस व्यक्ति को, जिसे कई दलों का समर्थन प्राप्त हो, सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करता है और उन्हें निर्देश देता है कि सरकार के गठन के पश्चात् एक मास के अंतर्गत अपना बहुमत सिद्ध करे। 1979 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के त्यागपत्र के बाद राष्ट्रपति ने लोकसभा में विपक्ष के नेता वाई. बी. चाव्हाण को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया था, लेकिन उनके इन्कार करने पर कई दलों से समर्थन प्राप्त करने वाले चरण सिंह को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया गया था।

प्रधानमंत्री पद की योग्यता

प्रधानमंत्री की योग्यता के सम्बन्ध में संविधान में कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं किया गया है, लेकिन इतना अवश्य कहा गया है कि प्रधानमंत्री लोकसभा में बहुमत प्राप्त दल का नेता होगा। लोकसभा में बहुमत प्राप्त दल का नेता होने के लिए आवश्यक है कि नेता लोकसभा का सदस्य हो। इसलिए प्रधानमंत्री को साधारणत: लोकसभा का सदस्य होने की योग्यता रखनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति, जो कि लोकसभा का सदस्य नहीं है, प्रधानमंत्री के पद पर नियुक्त किया जाता है तो उसे छ: मास के अंतर्गत लोकसभा का सदस्य होना पड़ता है। उदाहरणार्थ, 1967 में इंदिरा गांधी (तत्समय राज्यसभा की सदस्य थी) तथा 1991 में जब पी. वी. नरसिंहराव प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त किये गये, तब वे लोकसभा के सदस्य नहीं थे, लेकिन उन्होंने 6 मास के अंतर्गत लोकसभा का चुनाव लड़कर संसद की सदस्यता प्राप्त की थी। प्रधानमंत्री के लिए लोकसभा की सदस्यता अनिवार्य नहीं है। उसे वस्तुत: संसद के दोनों सदनों में से किसी एक सदन अर्थात् लोकसभा या राज्यसभा का सदस्य अनिवार्यत: होना चाहिए। 1997 में प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त इन्द्र कुमार गुजराल तथा बाद में 2004 में नियुक्त प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह राज्यसभा के सदस्य रहे हैं।

संसद के किसी सदन का सदस्य न होने पर भी कोई व्यक्ति प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त हो सकता है। अनुच्छेद 75 (5) के अनुसार यदि कोई व्यक्ति छ: माह के अन्दर संसद के किसी सदन का सदस्य नहीं बन जाता है, तो वह प्रधानमंत्री पद पर बने नहीं रह सकता है। इसका अर्थ है कि बाहरी व्यक्ति भी प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त हो सकता है। लेकिन उसे छ: महीने के भीतर संसद के किसी सदन का सदस्य बन जाना चाहिए। यदि वह इस अवधि के भीतर संसद के किसी सदन का सदस्य नहीं बन पाता है तो उसे अपने पद से इस्तीफ़ा दे देना पड़ेगा। ध्यातव्य है कि 1996 में जब एच. डी. देवगौड़ा प्रधानमंत्री नियुक्त हुए थे तब वे किसी भी सदन के सदस्य नहीं थे। उनकी नियुक्ति को एस. पी. आनन्द ने इस आधार पर न्यायालय में चुनौती दी थी कि इससे अनुच्छेद 14, 21 और 75 का उल्लंघन होता है। लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने इस मामले पर अपना निर्णय सुनाते हुए कहा कि अनुच्छेद 75 (5) के अनुसार यह नियुक्ति विधिमान्य है।

पदावधि

सामान्यतया प्रधानमंत्री अपने पद ग्रहण की तिथि से लोकसभा के अगले चुनाव के बाद मंत्रिमण्डल के गठन तक प्रधानमंत्री पद पर बना रह सकता है, लेकिन इसके पहले भी वह

1. राष्ट्रपति को त्यागपत्र देकर पदमुक्त हो सकता है, या
2. लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पारित होने के कारण पद त्याग करता है, या
3. राष्ट्रपति के द्वारा बर्ख़ास्त किया जा सकता है।

वेतन एवं भत्ते

प्रधानमंत्री को प्रतिमाह 1 लाख 25 हज़ार रुपये वेतन के रूप में मिलते हैं। साथ ही उन्हें मुफ़्त आवास, यात्रा, चिकित्सा, टेलीफ़ोन आदि की सुविधाएँ करायी जाती हैं। भत्ते के रूप में प्रधानमंत्री को निर्वाचन क्षेत्र, आकस्मिक ख़र्च, अन्य ख़र्चे एवं डी.ए. आदि दिया जाता है।

अधिकार एवं कार्य

प्रधानमंत्री के निम्नलिखित कार्य एवं अधिकार हैं–

1. प्रधानमंत्री अपने मंत्रिमण्डल के अन्य सदस्यों को नियुक्त करने, मंत्रिमण्डल से बर्ख़ास्त करने तथा मंत्रिमण्डल से उनके त्यागपत्र को स्वीकार करने की सिफ़ारिश राष्ट्रपति से करता है (अनुच्छेद 75 (1))।
2. वह अपने मंत्रिमण्डल के सदस्यों को विभाग का आबंटन कर सकता है तथा किसी मंत्री को एक

विभाग से दूसरे विभाग में अन्तरित कर सकता है।

3. प्रधानमंत्री मंत्रिमण्डल का प्रधान होता है और उसकी मृत्यु या त्यागपत्र से मंत्रिमण्डल का विघटन हो जाता है।
4. प्रधानमंत्री का यह कर्तव्य है कि वह संघ के कार्यकलाप के प्रशासन सम्बन्धी और विधान विषयक की सूचना राष्ट्रपति को दे और यदि राष्ट्रपति किसी ऐसे विषय पर प्रधानमंत्री से सूचना मांगता है, तो प्रधानमंत्री राष्ट्रपति को सूचना देने के लिए बाध्य है (अनुच्छेद 78)।
5. प्रधानमंत्री मंत्रिमण्डल की बैठक की अध्यक्षता करता है।
6. यदि राष्ट्रपति चाहता है कि किसी बात पर मंत्रिपरिषद विचार करे तो वह प्रधानमंत्री को संसूचना देता है।

उप-प्रधानमंत्री

भारतीय संविधान में उप-प्रधानमंत्री पद की कोई व्यवस्था नहीं है। इसके बावजूद समय-समय पर इस पद की व्यवस्था की जाती रही है। इस पद का अब तक 7 बार सृजन किया गया है। पहली बार इस पद का सृजन प्रथम लोकसभा के दौरान प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा किया गया था। इस प्रकार सरदार बल्लभ भाई पटेल उप-प्रधानमंत्री पद को सुशोभित करने वाले प्रथम व्यक्ति थे।

भारत की न्यायपालिका

भारत सरकार की तीन स्वतंत्र शाखाएं हैं - कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका। भारतीय न्यायिक प्रणाली अंग्रेजों ने औपनिवेशिक शासन के दौरान बनाई थी। इस प्रणाली को आम कानून व्यवस्था के रुप में जाना जाता है जिसमें न्यायाधीश अपने फैसलों, आदेशों और निर्णयों से कानून का विकास करते हैं। विभिन्न तरह की अदालतें देश में कई स्तर की न्यायपालिका बनाती हैं। भारत की शीर्ष अदालत नई दिल्ली स्थित सुप्रीम कोर्ट है और उसके नीचे विभिन्न राज्यों में हाई कोर्ट हैं। हाई कोर्ट के नीचे जिला अदालतें और उसकी अधीनस्थ अदालतें हैं जिन्हें निचली अदालत कहा जाता है।

भारत का सुप्रीम कोर्ट

28 जनवरी 1950 को अस्तित्व में आया और उसके आने पर भारत में औपनिवेशिक शासन के दौरान की सुप्रीम न्यायिक प्रणाली के न्यायिक समिति की प्रिवी कांउसिल और संघीय अदालत खत्म हुए। सुप्रीम कोर्ट में राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त एक मुख्य न्यायाधीश और 30 अन्य न्यायाधीश होते हैं। इन न्यायाधीशों का रिटायरमेंट 65 साल की उम्र में होता है। शीर्ष कोर्ट भारतीय नागरिकों के मौलिक अधिकारों के लिए बड़े पैमाने पर काम करता है। देश की विभिन्न सरकारों के बीच विवाद के कारण यह एक सुप्रीम अधिकारी भी है। इसके पास अपने द्वारा पहले दिए गए किसी भी फैसले या आदेश की समीक्षा का भी अधिकार है, साथ ही यह किसी एक हाई कोर्ट से दूसरी या एक जिला कोर्ट से दूसरी में मामलों को हस्तांतरित भी कर सकता है।

उच्च न्यायालय

राज्य स्तर पर सबसे कड़ी न्यायिक शक्ति देश में हाई कोर्ट के पास होती है। देश में 24 हाई कोर्ट हैं, जिनका क्षेत्राधिकार राज्य, केंद्र शासित प्रदेश या राज्यों के समूह पर होता है। सन् 1862 में स्थापित होने के कारण कलकत्ता हाई कोर्ट देश का सबसे पुराना न्यायालय है। राज्य या राज्यों के समूह की अपीलीय प्राधिकारी होने के नाते हाई कोर्ट के पास शीर्ष कोर्ट की तरह अधिकार और शक्तियां हैं, फर्क यह है कि हाई कोर्ट के क्षेत्राधिकार में अंतर है। संघीय कानून प्रणाली यदि अनुमति दे तो हाई कोर्ट का कुछ मामलों में मूल क्षेत्राधिकार हो सकता है। हाई कोर्ट के तहत सिविल और आपराधिक निचली अदालतें और ट्रिब्यूनल

कार्य करते हैं। सभी हाई कोर्ट भारत की सुप्रीम कोर्ट के तहत आते हैं।

भारत के 24 हाई कोर्ट की सूची इस प्रकार हैः

- हैदराबाद स्थित आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय जो कि आंध्र और तेलंगाना के लिए है।
- इलाहबाद में उत्तर प्रदेश हाई कोर्ट।
- महाराष्ट्र, दादरा और नागर हवेली, गोवा और दमन और दीव का बॉम्बे हाई कोर्ट।
- पश्चित बंगाल और अंडमान और निकोबार का कलकत्ता उच्च न्यायालय।
- छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट
- दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का दिल्ली हाई कोर्ट।
- गुजरात हाई कोर्ट।
- आसाम, नागालैंड, मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश के लिए गुवाहाटी हाई कोर्ट।
- हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट।
- जम्मू-कश्मीर उच्च न्यायालय।
- झारखंड उच्च न्यायालय।
- कर्नाटक उच्च न्यायालय।
- केरल और लक्षद्वीप के लिए केरल हाई कोर्ट।
- तमिलनाडु और पुडुचेरी का मद्रास हाई कोर्ट।
- मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय।
- मेघालय उच्च न्यायालय।
- मणिपुर उच्च न्यायालय।
- उड़ीसा उच्च न्यायालय।
- पटना उच्च न्यायालय।
- पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ का पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय।
- राजस्थान उच्च न्यायालय।
- सिक्किम उच्च न्यायालय।
- उत्तराखंड उच्च न्यायालय।
- त्रिपुरा हाई कोर्ट।

जिला और अधीनस्थ न्यायालय

जिला और अधीनस्थ अदालतें उच्च न्यायालय के तहत आती हैं। इन अदालतों का प्रशासन क्षेत्र भारत में जिला स्तर का होता है। जिला अदालत सभी अधीनस्थ अदालतों के उपर लेकिन उच्च न्यायालय के नीचे होती हैं। जिले का क्षेत्राधिकार जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पास होता है। सिविल मामलों का संचालन करते हुए जिला जज और आपराधिक केसों के न्याय का संचालन करते समय उसे सत्र न्यायाधीश कहा जाता है। राज्य सरकार द्वारा मेट्रोपोलिटन के रुप में मान्यता प्राप्त शहर या इलाके की जिला अदालत में अध्यक्षता करने पर उसे मेट्रोपोलिटन सत्र न्यायाधीश के तौर पर संबोधित किया जाता है। जिला न्यायाधीश हाई कोर्ट के न्यायाधीश के बाद सबसे बड़ा न्यायिक प्राधिकरण रहता है।

जिला अदालतों का भी अधीनस्थ अदालतों पर अधिकार रहता है। निचली अदालतों में सिविल मामलों को देखने के लिए आरोही क्रम में जूनियर सिविल जज कोर्ट, प्रिंसिपल जूनियर सिविल जज कोर्ट, वरिष्ठ सिविल जज कोर्ट देखते हैं। निचली अदालतों में सिविल मामलों को देखने के लिए आरोही क्रम में द्वितीय श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट की कोर्ट, प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट अदालत और मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अदालत होती है।

ट्रिब्यूनल

सामान्य तौर पर ट्रिब्यूनल एक व्यक्ति या संस्था को कहा जाता है, जिसके पास न्यायिक काम करने का अधिकार हो चाहे फिर उसे शीर्षक में ट्रिब्यूनल ना भी कहा जाए। उदाहरण के लिए एक न्यायाधीश वाली अदालत में भी हाजिर होने पर वकील उस जज को ट्रिब्यूनल ही कहेगा।

8 अक्टूबर 2012 को भारत के सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर अपलोड की गई अधिसूचना के मुताबिक 19 ट्रिब्यूनल हैंः

- बिजली के लिए अपीलीय ट्रिब्यूनल

- सशस्त्र सेना ट्रिब्यूनल
- केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग
- केंद्रीय प्रशासनिक आयोग
- कंपनी लाॅ बोर्ड
- भारत का प्रतिस्पर्धा आयोग
- प्रतियोगिता अपीलीय ट्रिब्यूनल
- काॅपीराइट बोर्ड
- सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवा अपीलीय ट्रिब्यूनल
- साइबर अपीलीय ट्रिब्यूनल
- कर्मचारी भविष्य निधि अपीलीय ट्रिब्यूनल
- आयकर अपीलीय ट्रिब्यूनल
- बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण
- बौद्धिक संपदा अपीलीय बोर्ड
- नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल
- भारत का प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड
- टेलीकाॅम निपटान और अपीलीय ट्रिब्यूनल
- दूरसंचार नियामक प्राधिकरण

न्यायाधीशों की नियुक्ति

भारत के संविधान में सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट और जिला कोर्ट में जजों की नियुक्ति को लेकर नियम बनाए गए हैं। सुप्रीम कोर्ट के जज की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा मुख्य न्यायाधीश की सलाह से होती है। उनकी नियुक्ति मुख्य न्यायाधीश और चार वरिष्ठ जजों के समूह के तहत होती है। उसी तरह हाई कोर्ट के लिए राष्ट्रपति मुख्य न्यायाधीश, उस राज्य के राज्यपाल और उस हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की सलाह पर नियुक्ति करता है। जज बनने के लिए किसी व्यक्ति की पात्रता यह है कि उसे भारत का नागरिक होना चाहिये। सुप्रीम कोर्ट का जज बनने के लिए उसका पांच साल अधिवक्ता के तौर पर या किसी हाई कोर्ट में जज के तौर पर दस साल कार्य किया होना आवश्यक है। हाई कोर्ट जज के लिए जरुरी है कि उस व्यक्ति ने किसी हाई कोर्ट में कम से कम दस साल अधिवक्ता के तौर पर कार्य किया हो।

किसी जज को उसके पद से कदाचार के आधार पर राष्ट्रपति के आदेश पर हटाया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट के जज को सिर्फ तब ही हटाया जा सकता है जब नोटिस पर 50 राज्यसभा या 100 लोकसभा सदस्यों के दस्तखत हों।

फास्ट ट्रेक कोर्ट

भारत में फास्ट ट्रेक कोर्ट यानि एफटीसी का लक्ष्य जिला और सैशन अदालतों में केसों के बैकलाॅग दूर करने का है। इन अदालतों के काम करने कर तरीका भी सत्र और ट्रायल कोर्ट जैसा है। शुरुआत मेें फास्ट ट्रेक कोर्ट को लंबे समय से लंबित पड़े मामलों को देखने के लिए बनाया गया था पर बाद में उन्हें विशिष्ट मामले देखने के लिए निर्देशित किया गया जो कि मुख्य तौर पर महिलाओं और बच्चों से जुड़े थे। 11वें वित्त आयोग ने फास्ट ट्रेक कोर्ट की योजना की सिफारिश की थी। इस योजना के तहत सरकार ने 502.90 करोड़ रुपये से 1734 फास्ट ट्रेक कोर्टों की स्थापना की। विधि और न्याय मंत्रालय के मुताबिक 2011 के मार्च अंत तक इन अदालतों ने 32.34 लाख मामलों का निपटारा किया। हालांकि इनकी स्थापना के बाद से कामकाजी अदालतों की संख्या में मामूली कमी आई है।

लोक अदालत

लोक अदालत की अवधारणा वैकल्पिक विवाद समाधान के तौर पर की गई है। यह ग्राम पंचायत और पंच परमेश्वर के गांधीवादी सिद्धांतों पर आधारित है। 'लोक' का मतलब लोग और 'अदालत' यानि कोर्ट है। कई समितियां और अधिकारी लोक अदालत लगाते हैं, जैसे जिला प्राधिकरण, राज्य प्राधिकरण, हाई कोर्ट विधिक सेवा समिति, सुप्रीम कोर्ट लीगल सर्विसेज, और तालुका विधिक सेवा समिति। यह लोक अदालतें विभिन्न मामले अच्छी तरह निपटाती हैं, जैसे मोटर दुर्घटना मुआवजे के मामले, वैवाहिक और पारिवारिक विवाद, भूमि अधिग्रहण के विवाद और विभाजन के दावे

आदि।

कानून को बनाए रखने और चलाने में न्यायपालिका की बहुत अहम भूमिका है। यह सिर्फ न्याय नहीं करती बल्कि नागरिकों के हितों की रक्षा भी करती है। न्यायपालिका कानूनों और अधिनियमों की व्याख्या कर संविधान के रक्षक के तौर पर काम करती है। अदालतें, ट्रिब्यूनल और नियामक, यह सब मिलकर देश के हित में एक एकीकृत प्रणाली बनाते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था

भारत जीडीपी के संदर्भ में विश्व की नवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। यह अपने भौगोलिक आकार के संदर्भ में विश्व में सातवां सबसे बड़ा देश है और जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा देश है । हाल के वर्षों में भारत गरीबी और बेरोजगारी से संबंधित मुद्दों के बावजूद विश्व में सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरा है । महत्वपूर्ण समावेशी विकास प्राप्त करने की दृष्टि से भारत सरकार द्वारा कई गरीबी उन्मूलन और रोजगार उत्पन्न करने वाले कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं ।

इतिहास

भारत एक समय मे सोने की चिडिया कहलाता था। आर्थिक इतिहासकार एंगस मैडिसन के अनुसार पहली सदी से लेकर दसवीं सदी तक भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। पहली सदी में भारत का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) विश्व के कुल जीडीपी का 32.9%% था ; सन् 1000 में यह 28.9% था ; और सन् 1700 में 24.4% था।

ब्रिटिश काल में भारत की अर्थव्यवस्था का जमकर शोषण व दोहन हुआ जिसके फलस्वरूप 1947 में आज़ादी के समय में भारतीय अर्थव्यवस्था अपने सुनहरी इतिहास का एक खंडहर मात्र रह गई।

आज़ादी के बाद से भारत का झुकाव समाजवादी प्रणाली की ओर रहा। सार्वजनिक उद्योगों तथा केंद्रीय आयोजन को बढ़ावा दिया गया। बीसवीं शताब्दी में सोवियत संघ के साथ साथ भारत में भी इस प्रणाली का अंत हो गया। 1991 में भारत को भीषण आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा जिसके फलस्वरूप भारत को अपना सोना तक गिरवी रखना पड़ा। उसके बाद नरसिंह राव की सरकार ने वित्तमंत्री मनमोहन सिंह के निर्देशन में आर्थिक सुधारों की लंबी कवायद शुरु की जिसके बाद धीरे धीरे भारत विदेशी पूँजी निवेश का आकर्षण बना और संराअमेरिका, भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक सहयोगी बना। 1991 के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था में सुदृढ़ता का दौर आरम्भ हुआ। इसके बाद से भारत ने प्रतिवर्ष लगभग 8% से अधिक की वृद्धि दर्ज की। अप्रत्याशित रुप से वर्ष 2003 में भारत ने 8.4 प्रतिशत की विकास दर प्राप्त की जो दुनिया की अर्थव्यवस्था में सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था का एक संकेत समझा गया। यही नहीं 2005-06 और 2007-08 के बीच लगातार तीन वर्षों तक 9 प्रतिशत से अधिक की अभूतपूर्व विकास दर प्राप्त की। कुल मिलाकर 2004-05 से 2011-12 के दौरान भारत की वार्षिक विकास दर औसतन 8.3 प्रतिशत रही किंतु वैश्विक मंदी की मार के चलते 2012-13 और 2013-14 में 4.6 प्रतिशत की औसत पर पहुंच गई। लगातार दो वर्षों तक 5 प्रतिशत से कम की

स.घ.उ. विकास दर, अंतिम बार 25 वर्ष पहले 1986-87 और 1987-88 में देखी गई थी।

ऐतिहासिक रूप से भारत एक बहुत विकसित आर्थिक व्यवस्था थी जिसके विश्व के अन्य भागों के साथ मजबूत व्यापारिक संबंध थे । औपनिवेशिक युग (1773-1947) के दौरान ब्रिटिश भारत से सस्ती दरों पर कच्ची सामग्री खरीदा करते थे और तैयार माल भारतीय बाजारों में सामान्य मूल्य से कहीं अधिक उच्चतर कीमत पर बेचा जाता था जिसके परिणामस्वरूप स्रोतों का द्विमार्गी ह्रास होता था । इस अवधि के दौरान विश्व की आय में भारत का हिस्सा 1700 ए डी के 22.3 प्रतिशत से गिरकर 1952 में 3.8 प्रतिशत रह गया । 1947 में भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अर्थव्यवस्था की पुनर्निर्माण प्रक्रिया प्रारंभ हुई । इस उद्देश्य से विभिन्न नीतियॉ और योजनाएँ बनाई गयीं और पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से कार्यान्वित की गयी ।

1991 में भारत सरकार ने महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार प्रस्तुत किए जो इस दृष्टि से वृहद प्रयास थे जिनमें विदेश व्यापार उदारीकरण, वित्तीय उदारीकरण, कर सुधार और विदेशी निवेश के प्रति आग्रह शामिल था । इन उपायों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने में मदद की तब से भारतीय अर्थव्यवस्था बहुत आगे निकल आई है । सकल स्वदेशी उत्पाद की औसत वृद्धि दर (फैक्टर लागत पर) जो 1951 - 91 के दौरान 4.34 प्रतिशत थी, 1991-2011 के दौरान 6.24 प्रतिशत के रूप में बढ़ गयी ।

कृषि

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है जो न केवल इसलिए कि इससे देश की अधिकांश जनसंख्या को खाद्य की आपूर्ति होती है बल्कि इसलिए भी भारत की आधी से भी अधिक आबादी प्रत्यक्ष रूप से जीविका के लिए कृषि पर निर्भर है ।

विभिन्न नीतिगत उपायों के द्वारा कृषि उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि हुई, जिसके फलस्वरूप एक बड़ी सीमा तक खाद्य सुरक्षा प्राप्त हुई । कृषि में वृद्धि ने अन्य क्षेत्रों में भी अधिकतम रूप से अनुकूल प्रभाव डाला जिसके फलस्वरूप सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में और अधिकांश जनसंख्या तक लाभ पहुँचे । वर्ष 2010 - 11 में 241.6 मिलियन टन का एक रिकार्ड खाद्य उत्पादन हुआ, जिसमें सर्वकालीन उच्चतर रूप में गेहूँ, मोटा अनाज और दालों का उत्पादन हुआ । कृषि क्षेत्र भारत के जीडीपी का लगभग 22 प्रतिशत प्रदान करता है ।

उद्योग

औद्योगिक क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है जोकि विभिन्न सामाजिक, आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक है जैसे कि ऋण के बोझ को कम करना, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश आवक (एफडीआई) का संवर्द्धन करना, आत्मनिर्भर वितरण को बढ़ाना, वर्तमान आर्थिक परिदृय को वैविध्यपूर्ण और आधुनिक बनाना, क्षेत्रीय विकास का संवर्द्धन, गरीबी उन्मूलन, लोगों के जीवन स्तर को उठाना आदि हैं ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार देश में औद्योगिकीकरण के तीव्र संवर्द्धन की दृष्टि से विभिन्न नीतिगत उपाय करती रही है । इस दिशा में प्रमुख कदम के रूप में औद्योगिक नीति संकल्प की उदघोषणा करना है जो 1948 में पारित हुआ और उसके अनुसार 1956 और 1991 में पारित हुआ । 1991 के आर्थिक सुधार आयात

प्रतिबंधों को हटाना, पहले सार्वजनिक क्षेत्रों के लिए आरक्षित, निजी क्षेत्रों में भागेदारी, बाजार सुनिश्चित मुद्रा विनिमय दरों की उदारीकृत शर्तें (एफडीआई की आवक / जावक हेतु आदि के द्वारा महत्वपूर्ण नीतिगत परिवर्तन लाए । इन कदमों ने भारतीय उद्योग को अत्यधिक अपेक्षित तीव्रता प्रदान की ।

आज औद्योगिक क्षेत्र 1991-92 के 22.8 प्रतिशत से बढ़कर कुल जीडीपी का 26 प्रतिशत अंशदान करता है ।

सेवाएँ

आर्थिक उदारीकरण सेवा उद्योग की एक तीव्र बढ़ोतरी के रूप में उभरा है और भारत वर्तमान समय में कृषि आधरित अर्थव्यवस्था से ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के रूप में परिवर्तन को देख रहा है । आज सेवा क्षेत्र जीडीपी के लगभग 55 प्रतिशत (1991-92 के 44 प्रतिशत से बढ़कर) का अंशदान करता है जो कुल रोजगार का लगभग एक तिहाई है और भारत के कुल निर्यातों का एक तिहाई है ।

भारतीय आईटी / साफ्टेवयर क्षेत्र ने एक उल्लेखनीय वैश्विक ब्रांड पहचान प्राप्त की है जिसके लिए निम्नतर लागत, कुशल, शिक्षित और धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलनी वाली जनशक्ति के एक बड़े पुल की उपलब्धता को श्रेय दिया जाना चाहिए । अन्य संभावना वाली और वर्द्धित सेवाओं में व्यवसाय प्रोसिस आउटसोर्सिंग, पर्यटन, यात्रा और परिवहन, कई व्यावसायिक सेवाएँ, आधारभूत ढाँचे से संबंधित सेवाएँ और वित्तीय सेवाएँ शामिल हैं।

बाहय क्षेत्र

1991 से पहले भारत सरकार ने विदेश व्यापार और विदेशी निवेशों पर प्रतिबंधों के माध्यम से वैश्विक प्रतियोगिता से अपने उद्योगों को संरक्षण देने की एक नीति अपनाई थी ।

उदारीकरण के प्रारंभ होने से भारत का बाहय क्षेत्र नाटकीय रूप से परिवर्तित हो गया । विदेश व्यापार उदार और टैरिफ एतर बनाया गया । विदेशी प्रत्यक्ष निवेश सहित विदेशी संस्थागत निवेश कई क्षेत्रों में हाथों - हाथ लिए जा रहे हैं । वित्तीय क्षेत्र जैसे बैंकिंग और बीमा का जोरदार उदय हो रहा है । रूपए मूल्य अन्य मुद्राओं के साथ-साथ जुड़कर बाजार की शक्तियों से बड़े रूप में जुड़ रहे हैं ।

आज भारत में 20 बिलियन अमरीकी डालर (2010 - 11) का विदेशी प्रत्यक्ष निवेश हो रहा है । देश की विदेशी मुद्रा आरक्षित (फारेक्स) 28 अक्टूबर, 2011 को 320 बिलियन अ.डालर है । (31.5.1991 के 1.2 बिलियन अ.डालर की तुलना में)

भारत माल के सर्वोच्च 20 निर्यातकों में से एक है और 2010 में सर्वोच्च 10 सेवा निर्यातकों में से एक है ।

भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में सातवें स्थान पर है, जनसंख्या में इसका दूसरा स्थान है और केवल 2.4% क्षेत्रफल के साथ भारत विश्व की जनसंख्या के 17% भाग को शरण प्रदान करता है।

1991 से भारत में बहुत तेज आर्थिक प्रगति हुई है जब से उदारीकरण और आर्थिक सुधार की नीति लागू की गयी है और भारत विश्व की एक आर्थिक महाशक्ति के रुप में उभरकर आया है। सुधारों से पूर्व मुख्य रुप से भारतीय उद्योगों और व्यापार पर सरकारी नियंत्रण का बोलबाला था और सुधार लागू करने से पूर्व इसका जोरदार विरोध भी हुआ परंतु आर्थिक सुधारों के अच्छे परिणाम सामने आने से विरोध काफी हद तक कम हुआ है। हलाकि मूलभूत ढाँचे में

तेज प्रगति न होने से एक बड़ा तबका अब भी नाखुश है और एक बड़ा हिस्सा इन सुधारों से अभी भी लाभान्वित नहीं हुये हैं।

तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

अप्रैल 2014 में जारी रिपोर्ट में वर्ष 2011 के विश्लेषण में विश्व बैंक ने "क्रयशक्ति समानता" (परचेज़िंग पावर पैरिटी) के आधार पर भारत को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था घोषित किया। बैंक के इंटरनैशनल कंपेरिजन प्रोग्राम (आईसीपी) के 2011 राउंड में अमेरिका और चीन के बाद भारत को स्थान दिया गया है। 2005 में यह 10वें स्थान पर थी। 2003-04 में भारत विश्व में 12वीं सबसे बडी अर्थव्यवस्था थी। संयुक्त राष्ट्र सांख्यिकी प्रभाग (यूएनएसडी) के राष्ट्रीय लेखों के प्रमुख समाहार डाटाबेस, दिसम्बर 2013 के आधार पर की गई देशों की रैंकिंग के अनुसार वर्तमान मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद के अनुसार भारत की रैंकिंग 10 और प्रति व्यक्ति सकल आय के अनुसार भारत विश्व में 161वें स्थान पर है।सन 2003 में प्रति व्यक्ति आय के लिहाज से विश्व बैंक के अनुसार भारत का 143 वाँ स्थान था।

भारत बहुत से उत्पादों के सबसे बड़े उत्पादको में से है। इनमें प्राथमिक और विनिर्मित दोनों ही आते हैं। भारत दूध का सबसे बडा उत्पादक है ओर गेह, चावल, चाय चीनी, और मसालों के उत्पादन में अग्रणियों मे से एक है यह लौह अयस्क, वाक्साईट, कोयला और टाईटेनियम के समृद्ध भंडार हैं।

यहाँ प्रतिभाशाली जनशक्ति का सबसे बडा पूल है। लगभग 2 करोड भारतीय विदेशों में काम कर रहे है। और वे विश्व अर्थव्यवस्था में योगदान दे रहे हैं। भारत विश्व में साफ्टवेयर इंजीनियरों के सबसे बडे आपूर्ति कर्त्ताओं में से एक है और सिलिकॉन वैली में सयुंक्त राज्य अमेरिका में लगभग 30 % उद्यमी पूंजीपति भारतीय मूल के है।

भारत में सूचीबद्ध कंपनियों की संख्या अमेरिका के पश्चात दूसरे नम्बर पर है। लघु पैमाने का उद्योग क्षेत्र, जोकि प्रसार शील भारतीय उद्योग की रीड की हड्डी है, के अन्तर्गत लगभग 95% औद्योगिक इकाईयां आती है। विनिर्माण क्षेत्र के उत्पादन का 40% और निर्यात का 36% 32 लाख पंजीकृत लघु उद्योग इकाईयों में लगभग एक करोड 80 लाख लोगों को सीधे रोजगार प्रदान करता है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विदेशी ऋण

वैश्विक निर्यातों और आयातों में भारत का हिस्सा वर्ष 2000 के क्रमशः 0.7 प्रतिशत और 0.8 प्रतिशत से बढ़ता हुआ वर्ष 2013 में क्रमशः 1.7 प्रतिशत और 2.5 प्रतिशत हो गया। भारत के कुल वस्तु व्यापार में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है जिसका सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सा 2000-01 के 21.8 प्रतिशत से बढ़कर 2013-14 में 44.1 प्रतिशत हो गया।

भारत का वस्तु निर्यात 2013-14 में 312.6 बिलियन अमरीकी डॉलर (सीमा शुल्क आधार पर) तक जा पहुंचा। इसने 2012-13 के दौरान की 1.8 प्रतिशत के संकुचन की तुलना में 4.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की।

2012-13 की तुलना में 2013-14 में आयातों के मूल्य में 8.3 प्रतिशत की गिरावट हुई जिसकी वजह तेल-भिन्न आयातों में 12.8 प्रतिशत की गिरावट रही। सरकार द्वारा किए गए अनेक उपायों के कारण सोने का आयात 2011-12 के 1078 टन से कम होकर 2012-13 में 1037 टन तथा और कम होकर 2013-14 में 664 टन रह गया। मूल्य के संदर्भ में, सोने और चांदी के आयात में 2013-14 में 40.1 प्रतिशत की गिरावट हुई और वह 33.4 बिलियन अमरीकी डॉलर के स्तर पर आ गया। 2013-14 में आयातों में हुई जबरस्त गिरावट और साधारण निर्यात वृद्धि के परिणामस्वरूप भारत का व्यापार घाटा 2012-13 के 190.3 बिलियन अमरीकी डॉलर से कम होकर 137.5 बिलियन

अमरीकी डॉलर के स्तर पर आ गया जिससे चालू व्यापार घाटे में कमी आई।

वर्ष 2003-04 में भारत का कुल व्यापार 140.86 अरब अमरीकी डालर था जो कि सकल घरेलु उत्पाद का 25.6% है। भारत का निर्यात 63.62% अरब अमरीकी डालर था और आयात 77.24 अरब डालर। निर्यात के मुख्य घटक थे विनिर्मित सामान (75.03%) कृषि उत्पाद (11.67%) तथा लौह अयस्क एवं खनिज (3.69%)।

वर्ष 2003-04 में साफ्टवेयर निर्यात, प्रवासी द्वारा भेजी राशि तथा पर्यटन के फलस्वरूप बाह्य अर्जन 22.1 अरब अमेरिकी डॉलर का हो गया।

भारत को आज़ाद हुए 68 साल हो चुके हैं और इस दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था की दशा में ज़बरदस्त बदलाव आया है| औद्योगिक विकास ने अर्थव्यवस्था का हुलिया ही बदल दिया है। आज भारत की गिनती दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में होती है. विश्व की अर्थव्यवस्था को चलाने में भारत की भूमिका बढ़ता जा रहा है । आईटी सेक्टर में पूरी दुनिया भारत का लोहा मानती है । आज भारत का हौवा पूरी दुनिया में क्यों है जवाब जानने के लिए नज़र डालते हैं कुछ आँकड़ों पर । इस साल पेश किए गए आर्थिक सर्वेक्षण में वर्ष में भारत में 8.1 प्रतिशत विकास दर की बात कही गई थी ।

भारतीय रिज़र्व बैंक ने अप्रैल में अपनी वार्षिक नीति पर जारी बयान में भारत में वर्ष में विकास दर 7.5-8.0 फ़ीसदी के बीच रहने की उम्मीद जताई है। 27 अक्तूबर 06 को ख़त्म हुए सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार करीब 167.092 अरब डॉलर तक पहुँच गया। सोने का भंडार 6.202 अरब डालर तक पहुँच गया है। कभी विदेशी संस्थानों से कर्ज़ लेने वाले भारत ने वर्ष 2003 में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष को कर्ज़ देने की घोषणा की। वर्ष में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में 33.8 फ़ीसदी की वृद्धि हुई। हाल ही में संयुक्त राष्ट्र ने भी एक रिपोर्ट जारी की है जिसमें कहा गया है कि अगले दो सालों तक भारत में आठ फ़ीसदी की दर से विकास होता रहेगा औद्योगिक क्षेत्र में आठ तो सेवा क्षेत्र में 8.5 प्रतिशत की विकास दर रहेगी। भारत की अर्थव्यवस्था में सबसे ज़्यादा विकास हुआ है उद्योग और सेवा क्षेत्र में. वर्ष में दसवीं पंच वर्षीय योजना शुरू होने के बाद से इन दोनों क्षेत्रों में सालाना सात फ़ीसदी या उससे ज़्यादा की दर से विकास हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था के मजबुत होने का एक और प्रमाण जानी-मानी अंतरराष्ट्रीय कंसल्टेंसी संस्था प्राइसवाटरहाउस कूपर्स या पीडब्ल्यूसी की एक रिपोर्ट कहती है कि 2005 से 2050 के बीच चीन की अर्थव्यवस्था काआकार दोगुना हो जाएगा। साथ ही इसमें ये भी कहा गया है कि भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना रहेगा। पी डब्ल्यू सी की रिपोर्ट कहती है कि तक भारत और ब्राज़ील जापान और जर्मनी को पीछे छोड़कर दूसरे और तीसरे नंबर की अर्थव्यवस्था बन जाएँगे।

पिछले कुछ सालों में भारतीय अर्थव्यवस्था में काफ़ी तेज़ी आई है। बढ़ती विकास दर के अलावा भारतीय अर्थव्यवस्था से जुड़े कई सकारात्मक पहलू सामने आए हैं। इन सकारात्मक पहलूओं में से एक अहम पहलू है- भारतीय शेयर बाज़ार में जारी मज़बूती का दौर।

भारत में मार्च में शेयर सूचकांक रहा 6493 जोकि मार्च 2006 में 11,280 पर पहुँच गया और इस पर प्रतिफल मिला 73.7 प्रतिशत। वर्तमान मे यह 13,000 के एतिहासिक सतर को पार गया है। शेयर बाज़ार ने सिर्फ़ 16 कार्यदिवसों में ही 11 हज़ार से 12 हज़ार तक की ऊँचाई प्राप्त कर ली। इस अवधि के दौरान भारतीय शेयर सूचकांक ने दुनियां के अन्य शेयर सूचकांकों के मुकाबले अधिक गति प्राप्त की है. आँकड़ों के हिसाब से उभरते हुए शेयर बाज़ारों में भारत का बाज़ार सबसे जोरदार प्रतिफल वाला साबित हो रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था मे एक और

महत्वपूर्ण क्षेत्र बैंकिंग है। भारत के तेज़ी से विकसित होते मध्यवर्ग के चलते बैंकिंग खासे मुनाफ़े का कारोबार हो गई है। कुल ख़रीदी गई कारों की अस्सी फ़ीसदी कारें क़र्ज़ लेकर ख़रीदी जा रही हैं। दस साल पहले मकान मालिक बनने की औसत आयु 45 साल थी लेकिन अब औसतन 32 साल की उम्र में ही मकान मालिक बन जाते हैं किसी बैंक से लिए गए क़र्ज़ की बदौलत. तमाम नई बैंकिंग सुविधाओं का विकास हो रहा है। कुल मिलाकर बैंकिंग क्षेत्र के मुनाफ़े आने वाले कुछ सालों में तेजी से बढ़ेंगे।

भारत में अरबपतियों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है जो यह दिखाता है कि व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में देश तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। प्रतिष्ठित फोर्ब्स पत्रिका में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार अरबपतियो की संख्या मे 15 प्रतिशत की वृद्घि हुई है और अब कुल 793 अरबपति है और एशिया में भारत अग्रणी बनकर उभरा है। विश्व अर्थव्यवस्था में आई उछाल के कारण भारत में अरबपतियो की संख्या में रिकॉर्ड बढोतरी हुई है। इस सर्वे के अनुसार भारत में 23 अरबपति हैं जिनके पास भारतीय सकल घरेलू उत्पाद का 16 प्रतिशत हिस्सा है। इसका यह अर्थ निकाला जा सकता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की सेहत बेहतर हो रही है. इकॉनॉमिक टाइम्स के ब्यूरो चीफ़ एमके वेणु का मानना है कि भारत मे पहले से कहीं ज्यादा अवसर उपलब्ध हैं।

पिछले कुछ सालों में कृषि क्षेत्र में विकास दर दो से तीन प्रतिशत के बीच रही है। वर्ष 2002-03 में कृषि क्षेत्र में विकास दर शून्य से भी कम थी। 2003-04 में इसमें ज़बरदस्त उछाल आया और ये 10 फ़ीसदी हो गई लेकिन 2004-05 में विकास दर फिर लुढ़क गई और ऐसी लुढ़की कि 0.7 फ़ीसदी हो गई. आर्थिक प्रगति में इस विसंगति को केंद्र सरकार भी स्वीकार करती है। केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पवन कुमार बंसल कहते हैं, "कृषि पीछे है इसमें कोई दो राय नहीं. अगर विकास दर को 10 फ़ीसदी करना है तो कृषि में भी चार फ़ीसदी की दर से विकास करना होगा।"

भारत में लोगों को रोज़गार अवसर मुहैया करवाने, किसानों की स्थिति बेहतर बनाने और निर्यात बढ़ाने में बागवानी क्षेत्र का बड़ा हाथ है। वर्ष 2003-04 में फलों और सब्ज़िओं की पैदावार में भारत विश्व में दूसरे नंबर पर था. फलों, फूलों और सब्ज़ियों की खेती में निर्यात में भी काफ़ी संभनाएँ हैं।

वर्ष 2006 के मार्च महीने में ब्रिटेन का आम बजट पेश किया गया। बजट में ब्रितानी वित्त मंत्री के भाषण का एक मुख्य अंश कुछ यूँ था. "भारत और चीन से मिलने वाली कड़ी प्रतिस्पर्धा का मतलब है कि हम हाथ पर हाथ धर कर नहीं बैठे रह सकते" इससे पहले अमरीकी राष्ट्रपति बुश ने भी अपने अहम राष्ट्रीय भाषण में कहा, "हम हाथ पर हाथ धर कर नहीं बैठ सकते. दुनिया की अर्थव्यवस्था में हम भारत और चीन जैसे नए प्रतियोगी देख रहे हैं।"

उद्योगो में मैन्यूफैक्चिरिंग, खनन और बिजली क्षेत्र अग्रणी रहे हैं। जबकि सेवा क्षेत्र की बात करें तो इसमें मोटे तौर पर तीन क्षेत्र आगे हैं- बैंकिंग, बीमा और रीयल ऐस्टेट जिनमें 9.5 फ़ीसदी के दर से विकास हुआ है। लेकिन औद्योगिक विकास के बावजूद इन 59 सालों में एक तथ्य जो नहीं बदला है वो ये कि आज भी भारत के 65 से 70 फ़ीसदी लोग रोज़ी-रोटी के लिए कृषि और कृषि आधारित कामों पर निर्भर हैं।

एक ओर होंगे सेवा क्षेत्र और विदेशी निवेश जैसे पहलू जहाँ माहौल सकारात्मक है। दूसरी तरफ़ है मध्यम वर्ग की अर्थव्यवस्था जिमसें अपार संभावनाएँ हैं लेकिन कई तरह की परेशानियाँ भी हैं और तीसरे स्तर पर है एक ऐसा वर्ग जिसका ऊपर के दो वर्गों से कोई लेना देना नहीं है, उनकी समस्याएँ शायद वैसी की वैसी रहने वाली हैं।

औद्योगिक और सेवा क्षेत्र में विकास की बदौलत भारत में विकास की गाड़ी तेज़ी से दौड़ तो रही है लेकिन अभी भी उसके सामने कई तरह की चुनौतियाँ हैं। भारत में कई जगहों में अब भी सड़क, बिजली, पानी और स्वास्थय जैसी मूलभूत ज़रूरतों की कमी है और ये तस्वीर सिर्फ़ गाँवों की ही नहीं- दिल्ली,बंगलौर और मुम्बई जैसे शहरों की भी है। इन मूलभूत ज़रूरतों के अभाव में उद्योग और सेवा सेक्टर में जारी विकास इतनी ही गति से बरकरार रह पाएगा ये भी एक बड़ा सवाल है।

- भारत की अर्थव्यवस्था कैसी है— मिश्रित अर्थव्यवस्था
- मिश्रित अर्थव्यवस्था का क्या अर्थ है— सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र का साथ-साथ होना
- आर्थिक दृष्टि से भारत कैसा देश है— विकासशील
- भारतीय अर्थव्यवस्था में कौन-से क्षेत्र की हिस्सेदारी सकल राष्ट्रीय उत्पाद में सबसे अधिक है— तृतीयक क्षेत्र
- क्रयशक्ति समता (Purchasing Power Parity-PPP) के आधार पर विश्व में भारतीय अर्थव्यवस्था का कौन-सा स्थान है— तीसरा
- भारत की कुल श्रमशक्ति का कितना भाग कृषि में लगा है— 52%
- भारत में बेरोजगारी के आंकड़े कौन एकत्रित व प्रकाशित करता है— राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ)
- राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान कहाँ स्थित है— हैदराबाद
- संरचनात्मक बेरोजगारी का प्रमुख कारण क्या है— अपर्याप्त उत्पादन क्षमता
- योजना आयोग किसके सवेक्षण के आधार पर गरीबी की रेखा से नीचे के लोगों का आकलन करता है— राष्ट्रीय नमुना सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ)
- अंतोदय कार्यक्रम का उद्देश्य क्या है— गरीबों में से अधिक गरीब की मदद करना
- कुटीर ज्योति योजना क्या है— ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार को निःशुल्क विद्युत सुविधा देना
- वर्ल्ड डवलपमेंट रिपोर्ट किसका वार्षिक प्रकाशन है— विश्व बैंक
- बंद अर्थव्यवस्था का अर्थ क्या है— आयत-निर्यात बंद
- भारत में प्रच्छन्न बेरोजगारी सामान्यतः कहाँ दिखाई पड़ती है— कृषि में
- भारत में निर्धनता के स्तर का आकलन किससे किया जाता है— परिवार के उपभोग व्यय के आधार पर
- हरित सूचकांक किसके द्वारा विकतिस किया गया था— संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम
- भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण का अग्रदूत किसे माना जाता है— डॉ. मनमोहन सिंह
- अर्थव्यवस्था में क्षेत्रों को सार्वजनिक और निजी में किस आधार पर वर्गीकृत किया जाता है— उद्यमों के स्वामित्व के आधार पर
- भारतीय में सर्वप्रथम राष्ट्रीय आय का अनुमान किसने लगाया था— दादाभाई नौरोजी ने
- भारत राष्ट्रीय आय की गणना कौन करता है— केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन
- ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी के आकलन के लिए किस सूचकांक को आधार माना गया है— कृषि श्रमिकों का उपभोक्त मूल्य सूचकांक
- सर्वोदय योजना' के संस्थापक कौन थे— जय प्रकाश नारायण
- 'वैट' किस प्रकार का कर है— अप्रत्यक्ष कर
- भारत में वैट कर कब लागू हुआ— 1 अप्रैल, 2005
- करेंसी नोट प्रेस कहाँ है— नासिक

- नरसिंहम समिति का संबंध किससे है— बैंकिंग सुधार
- 'बुल एंड बीयर' शब्द किससे संबंधित है— शेयर बाजार से
- मुद्रा की मात्रा में कमी क्या कहलाती है— मुद्रा का संकुचन
- जिस नीति को देश का केंद्रीय बैंक परिणात्मक व गुणात्मक उपकरणों के माध्य से लागू करता है, उसे क्या कहते हैं— मौद्रिक नीति
- जब सरकार की आय कम तथा व्यय ज्यादा होता है, उस अर्थव्यवस्था को क्या कहा जाता है— घाटे की अर्थव्यवस्था
- जब किसी आवश्यकता को कीमत, समय, स्थान से प्रस्तुत किया जाता है तो उसे क्या कहते है— माँग
- जब किसी देश की जनसंख्या की जन्म दर में पर्याप्त कमी ना हो तो उसे क्या कहा जाता है— जनसंख्या विस्फोट
- आर्थिक वृद्धि का आधार क्या है— उत्पादन
- भारत में बेरोजगारी के आकड़े कौन एकत्रित व प्रकाशित करता है – एन. एस. एस. ओ.
- राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान कहां स्थित है – हैदराबाद
- अंतोदय कार्यक्रम का उद्देश्य क्या है – गरीबों में से अधिक गरीब की मदद करना
- भारत में निर्धनता के स्तर का आकलन किससे किया जाता है – परिवार के उपभोग व्यय के आधार पर
- भारत में सर्वप्रथम राष्ट्रीय आय का अनुमान किसने लगाया था – दादा भाई नौरोजी ने
- 'वैट' किस प्रकार का कर है – अप्रत्यक्ष कर
- भारत में वैट कर कब लागू हुआ – 1 अप्रैल, 2005
- करेंसी नोट प्रेस कहां है – नासिक
- 'बुल एंड बीयर' शब्द किससे संबंधित है – शेयर बजार से
- आर्थिक वृद्धी का आधार क्या है – उत्पादन
- भारत की मुद्रा की पूर्ती को नियंत्रण कौन करता है – रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया
- नगर निगम की आय का स्त्रोत क्या है – गृह कर
- प्रत्यक्ष कर कौन सा कर है – आयकर
- सरकार द्वारा पुरानी मुद्रा बंद करके नई मुद्रा का चलाना क्या कहलाता है – विमुद्रीकरण
- देश का सबसे बड़ा वाणिज्यिक बैंक कौन सा है – स्टेट बैंक
- भारत में प्रतिभूति विनियम बोर्ड की स्थापना कब हुई – 1988 ई.
- शेयर बाजार का प्रभावपूर्ण नियंत्रण कौन करता है – सेबी
- केंद्र सरकार को सबसे निवल राजस्व की प्राप्ति कहां से होती है – सीमा शुल्क से
- केंद्रीय एगमार्क प्रयोगशाला कहां है – नागपुर
- विश्व में सबसे अधिक सहकारी संस्थाएं किस देश में है – भारत में
- राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी को क्या कहा जाता है – श्वेत पत्र
- कागजी मुद्रा जारी करने का पूर्ण अधिकार किसके पास है – रिजर्व बैंक के पास
- भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कब हुआ – 1949 में
- भारत की राष्ट्रीय आय का प्रमुख स्रोत क्या है – सेवा क्षेत्र
- भारत में राष्ट्रीय आय समकों का आकलन किसके द्वारा किया जाता है – केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन द्वारा

- वह भारतीय राज्य कौन-सा है जिसका वितीय लेनदेन भारतीय रिजर्व बैंक से नहीं होता है – जम्मू-कश्मीर
- भारत में सबसे पुराना स्टॉक एक्सचेंज क्या है – बांबे स्टॉक एक्सचेंज
- राष्ट्रीय विकास परिषद का गठन कब हुआ – 1952 में
- भारत में प्रथम पंचवर्षीय योजना कब प्रारंभ हुई – 1951, नई दिल्ली
- भारत में वितीय वर्ष कब प्रारंभ होता है – 1 अप्रैल
- भारत का केंद्रीय बैंक कौन सा है – रिजर्व बैंक
- पहला पूर्ण भारतीय बैंक कौन सा है – पंजाब नेशनल बैंक
- पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना कब हुई थी – 1984 में
- भारत का पहला मोबाइल बैंक कहां स्थित हुआ – खारगोन, मध्यप्रदेश
- पहले ग्रामिण बैंक की स्थापना कब हुई – 2 अक्टूबर, 1975 ई.
- देश का पहला ग्रामीण बैंक कौन सा है – प्रथम बैंक
- नाबार्ड बैंक का पूरा नाम क्या है – राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामिण विकास बैंक
- भारतीय जीवन बीमा निगम का मुख्यालय कहां है – मुंबई
- भारत में नोट जारी करने के लिए कौन-सी प्रणाली अपनाई जाती है – न्यूनतम आरक्षित प्रणाली
- किसान क्रडिट कार्ड योजना का शुभारंभ कब हुआ – 1998 ई.
- ईसीजीसी का संबंध किससे है – निर्यात वित एवं बीमा
- भारतीय विदेश व्यापार संस्थान कहां स्थित है – नई दिल्ली
- वित आयोग का गठन कौन करता है – राष्ट्रपति
- 'बैंकों का बैंक' किस बैंक को कहा जाता है – भारतीय रिजर्व बैंक को
- भारत में सर्वप्रथम किस राज्य शून्य आधारित बजट तकनीक को अपनाया गया – आंध्र प्रदेश में
- मानव विकास सूचकांक में कौन-कौन से सूचकांक शामिल किए जाते हैं – जीवन प्रत्याशा सूचकांक, शिक्षा सूचकांक तथा सकल घरेलू उत्पाद सूचकांक
- भारत में आर्थिक नियोजन की अवधारणा किस देश के मॉडल पर आधारित है – सोवियत संघ
- भारत में आर्थिक नियोजन प्रणाली शुरू करने का श्रेय किसे दिया जाता है – सर विश्वेश्वरैया

BANK EXAMS Today

भुगोल

वायुमण्डल

क्षोभमण्डल

- यह मण्डल जैव मण्डलीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि मौसम संबंधी सारी घटनाएं इसी में घटित होती हैं।
- प्रति 165 मीटर की ऊंचाई पर वायु का तापमान 1 डिग्री सेल्सियस की औसत दर से घटता है। इसे सामान्य ताप पतन दर कहते है।
- इस मण्डल की सीमा विष्वत वृत्त के ऊपर 18 किमी की ऊंचाई तक तथा ध्रवों के ऊपर लगभग 8 किमी तक है।

समतापमण्डल

- इसकी मोटाई 50 किमी से 55 किमी तक है।
- इस मण्डल में तापमान स्थिर रहता है तथा इसके बाद ऊंचाई के साथ बढ़ता जाता है।
- समताप मण्डल बादल तथा मौसम संबंधी घटनाओं से मुक्त रहता है।

- इस मण्डल के निचले भाग में जेट वायुयान के उड़ान भरने के लिए आदर्श दशाएं हैं।
- इसकी ऊपरी सीमा को 'स्ट्रैटोपाज' कहते हैं।
- इस मण्डल के निचले भाग में ओज़ोन गैस बहुतायात में पायी जाती है। इस ओज़ोन बहुल मण्डल को ओज़ोन मण्डल कहते हैं।
- ओज़ोन गैस सौर्यिक विकिरण की हानिकारक पराबैंगनी किरणों को सोख लेती है और उन्हें भूतल तक नहीं पहुंचने देती है तथा पृथ्वी को अधिक गर्म होने से बचाती हैं।

मध्यमण्डल

- इसका विस्तार 50-55 किमी से 80 किमी तक है।
- इस मण्डल में तापमान ऊंचाई के साथ घटता जाता है तथा मध्यमण्डल की ऊपरी सीमा मेसोपाज पर तापमान 80 डिग्री सेल्सियस बताया जाता है।

आयन मण्डल

- इस मण्डल में ऊंचाई के साथ ताप में तेजी से वृद्धि होती है।
- आयन मण्डल, तापमण्डल का निचला भाग है जिसमें विद्युत आवेशित कण होते हैं जिन्हें आयन कहते हैं
- ये कण रेडियो तरंगों को भूपृष्ठ पर परावर्तित करते हैं और बेतार संचार को संभव बनाते हैं।

बाह्यमण्डल

- इसे वायुमण्डल का सीमांत क्षेत्र कहा जाता है। इस मण्डल की वायु अत्यंत विरल होती है।

मरुस्थल

मरुस्थल पृथ्वी का बड़ा भू-भाग होता है । यह पृथ्वी के भू-भाग का 20% है । यह शुष्क, कम वर्षा वाले रेतीले, अत्यधिक तापमान और विरल वनस्पति वाले क्षेत्र होते है।

1) सहारा मरुस्थल (अफ्रीका)

2) अटाकामा मरुस्थल (चिली)

3) गोभी मरुस्थल (मैगनोलिया)

4) थार मरुस्थल (भारत)

पर्वत

यह पृथ्वी की सतह पर प्राकृतिक उठान (elevation) वाले क्षेत्र होते हैं । इन्हें पंक्तिबद्ध किया जा सकता है, जिसे श्रेणी के रूप में जाना जाता है ।

1) हिमालय पर्वत (एशिया)

2) माउंट किलिमंजारो (अफ्रीका)

3) माउंट फुजियामा (जापान)

4) रॉकी पर्वत (एन अमेरिका)

द्वीप

द्वीप उपमहाद्वीप की जमीन का वह टुकड़ा है जो चारों तरफ पानी से घिरा होता है । द्वीप मूल से ज्वालामुखी या प्रवाल चट्टान (coral reef) से बनते हैं।

सबसे बड़ा द्वीप - ग्रीनलैंड

सबसे बड़ा नदी द्वीप – मजोली (असम)

सबसे बड़ी आबादी वाले द्वीप - जावा (इंडोनेशिया)

3 देशों द्वारा साझा द्वीप - बोर्नियो।

महासागर

महासागर खारे पानी के प्रमुख निकाय है जो पृथ्वी की सतह का 71% भाग पर हैं । लहरें, ज्वार और समुद्र धाराओं समुद्र जल के तीन प्रमुख गतिविधियां हैं। 5 प्रमुख महासागर हैं :

1) प्रशांत महासागर
2) अटलांटिक महासागर
3) हिंद महासागर
4) आर्कटिक महासागर
5) दक्षिणी महासागर

1) प्रशांत महासागर - सबसे बड़ा महासागर है **मेरियाना गर्त**

- पृथ्वी की गहरा भाग जोकि प्रशांत महासागर में स्थित है।

- यह वृत्ताकार आकृति में है ।

- एशिया, ऑस्ट्रेलिया, उत्तर और दक्षिण अमेरिका इसके चारों ओर हैं ।

2. अटलांटिक महासागर-दूसरा सबसे बड़ा महासागर है :

- यह अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर 'S' के आकार का है ।

- इसके पश्चिम में उत्तर और दक्षिण अमेरिका और पूर्व में यूरोप और अफ्रीका है ।

अटलांटिक की तटीय रेखा उबड-खाबड़ (indented) है और यह अनियमित और उबड-खाबड़ (indented) समुद्री तट बंदरगाहों के लिए आदर्श स्थान प्रदान करता है। इसलिए यह वाणिज्यिक दृष्टि से सबसे व्यस्त सागर है।

3. हिंद महासागर-यह एकमात्र सागर है जिसका नाम किस देश के नाम – भारत (हिंद) पर रखा गया है ।

- इसकी आकृति त्रिभुजाकार है

यह उत्तर में एशिया, पश्चिम में अफ्रीका और पूर्व में ऑस्ट्रेलिया तक विस्तारित है ।

4. दक्षिणी महासागर– पांच महासागरों में चौथा सबसे बड़ा महासागर दक्षिणी महासागर है ।

दक्षिणी महासागर बड़ा दक्षिणी महासागर, अंटार्कटिक महासागर और दक्षिण ध्रुवीय महासागर के रूप में भी जाना जाता है ।

5. आर्कटिक महासागर– यह उत्तरध्रुवीय वृत के भीतर और उत्तर ध्रुव के चारों ओर स्थित है ।

- "प्रशांत महासागर के साथ उथले पानी की एक संकरे स्रोत से जुड़ा हुआ है जिसे बेरिंग जलडमरूमध्य 'के रूप में जाना जाता है ।

- उत्तर अमेरिका और यूरेशिया के उत्तरी तटों से जुड़ा हुआ है ।

भारत का भूगोल

प्राचीन काल में आर्यों की भरत नाम की शाखा द्वारा हिमालय पर्वत के दक्षिणी भाग के अनार्यों अथवा आर्यो को पराजित करके उस भूभाग का नाम भरत शाखा के नाम पर ही भारतवर्ष रखा गया तथा इसके उत्तर-पश्चिम में प्रवाहित होने वाली नदी को सिन्धु नाम दिया गया। कालान्तर में ईरानियों ने इसे हिन्दू तथा देश को हिन्दुस्तान कहा, जबकि यूनानियों ने सिन्धु नदी को इन्डस और उस देश को, जहां यह नदी प्रवाहित होती है। 'इण्डिया' नाम दिया। वर्तमान समय में यही देश विश्व में 'भारत' एवं 'इण्डिया' दोनों नामों से जाना जाता है।

भारत के मुख्य भूभाग में चार क्षेत्र हैं, नामत: महापर्वत क्षेत्र, गंगा और सिंधु नदी के मैदानी क्षेत्र और मरूस्थली क्षेत्र और दक्षिणी प्रायद्वीप। हिमालय की तीन शृंखलाएँ हैं, जो लगभग समानांतर फैली हुई हैं। इसके बीच बड़े - बड़े पठार और घाटियाँ हैं, इनमें कश्मीर और कुल्लू जैसी कुछ घाटियाँ उपजाऊ, विस्तृत और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हैं। संसार

की सबसे ऊंची चोटियों में से कुछ इन्हीं पर्वत शृंखलाओं में हैं। अधिक ऊंचाई के कारण आना -जाना केवल कुछ ही दर्रों से हो पाता है, जिनमें मुख्य हैं -

- चुंबी घाटी से होते हुए मुख्य भारत-तिब्बत व्यापार मार्ग पर जेलेपला और नाथुला दर्रा
- उत्तर-पूर्व दार्जिलिंग
- कल्पना (किन्नौर) के उत्तर - पूर्व में सतलुज घाटी में शिपकी ला दर्रा

पर्वतीय दीवार लगभग 2,400 कि.मी. की दूरी तक फैली है, जो 240 किमी से 320 किमी तक चौड़ी है। पूर्व में भारत तथा म्यांमार और भारत एवं बांग्लादेश के बीच में पहाड़ी शृंखलाओं की ऊंचाई बहुत कम है। लगभग पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई गारो, खासी, जैंतिया और नगा पहाडियाँ उत्तर से दक्षिण तक फैली मिज़ो तथा रखाइन पहाडियों की शृंखला से जा मिलती हैं।

मरुस्थली क्षेत्र को दो भागों में बाँटा जा सकता है बड़ा मरुस्थल कच्छ के रण की सीमा से लुनी नदी के उत्तरी ओर आगे तक फैला हुआ है। राजस्थान सिंध की पूरी सीमा इससे होकर गुजरती है। छोटा मरुस्थल लुनी से जैसलमेर और जोधपुर के बीच उत्तरी भूभाग तक फैला हुआ बड़े और छोटे मरुस्थल के बीच का क्षेत्र बिल्कुल ही बंजर है जिसमें चूने के पत्थर की पर्वत माला द्वारा पृथक किया हुआ पथरीला भूभाग है।

पर्वत समूह और पहाड़ी शृंखलाएँ जिनकी ऊँचाई 460 से 1,220 मीटर है, प्रायद्वीपीय पठार को गंगा और सिंधु के मैदानी क्षेत्रों से अलग करती हैं। इनमें प्रमुख हैं अरावली, विंध्य, सतपुड़ा, मैकाला और अजन्ता। इस प्रायद्वीप की एक ओर पूर्व घाट दूसरी ओर पश्चिमी घाट है जिनकी ऊँचाई सामान्यत: 915 से 1,220 मीटर है, कुछ स्थानों में 2,440 मीटर से अधिक ऊँचाई है। पश्चिमी घाटों और अरब सागर के बीच एक संकीर्ण तटवर्ती पट्टी है जबकि पूर्व घाट और बंगाल की खाड़ी के बीच का विस्तृत तटवर्ती क्षेत्र है। पठार का दक्षिणी भाग नीलगिरी पहाड़ियों द्वारा निर्मित है जहाँ पूर्वी और पश्चिमी घाट मिलते हैं। इसके आगे इलायची की पहाडियाँ पश्चिमी घाट के विस्तारण के रुप में मानी जा सकती हैं।

भूगर्भीय संरचना

भूवैज्ञानिक क्षेत्र व्यापक रुप से भौतिक विशेषताओं का पालन करते हैं और इन्हें तीन क्षेत्रों के समूह में रखा जा सकता है:

- हिमालय पर्वत शृंखला और उनके संबद्ध पर्वत समूह।
- भारत-गंगा मैदान क्षेत्र।
- प्रायद्वीपीय क्षेत्र।

उत्तर में हिमालय पर्वत क्षेत्र और पूर्व में नागालुशाई पर्वत, पर्वत निर्माण गतिविधि के क्षेत्र है। इस क्षेत्र का अधिकांश भाग जो वर्तमान समय में विश्व का सार्वधिक सुंदर पर्वत दृश्य प्रस्तुत करता है, 60 करोड़ वर्ष पहले समुद्री क्षेत्र में था। 7 करोड़ वर्ष पहले शुरू हुए पर्वत-निर्माण गतिविधियों की शृंखला में तलछटें और आधार चट्टानें काफ़ी ऊँचाई तक पहुँच गई। आज हम जो इन पर उभार देखते हैं, उनको उत्पन्न करने में अपक्षय और अपरदक ने कार्य किया। भारत-गंगा के मैदानी क्षेत्र एक जलोढ़ भूभाग हैं जो दक्षिण के प्रायद्वीप से उत्तर में हिमाचल को अलग करते हैं।

प्रायद्वीप सापेक्ष स्थिरता और कभी-कभार भूकंपीय परेशानियों का क्षेत्र है। 380 करोड़ वर्ष पहले के प्रारंभिक काल की अत्याधिक कायांतरित चट्टानें इस क्षेत्र में पायी जाती हैं, बाक़ी क्षेत्र गोंदवाना के तटवर्ती क्षेत्र से घिरा है, दक्षिण में सीढ़ीदार रचना और छोटी तलछटें लावा के प्रवाह से निर्मित हैं।

भौगोलिक स्थिति

पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध में 804' उत्तरी आक्षांश 3706 उत्तरी अक्षांश तथा 6807' पूर्वी देशान्तर से 97025' पूर्वी देशान्तर के बीच 32,87,782 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर विस्तृत भारत हिन्द महासागर के उत्तरी में स्थित है। इस प्रकार इसका अक्षांशीय तथा देशान्तरीय विस्तार लगभग 300 है।

भारत की मुख्य भूमि से दूर अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह का दक्षिणतम बिन्दु 'इन्दिरा प्वाइंट' 6030′ उत्तरी अक्षांश पर ग्रेट निकोबार में स्थित है।

8201/2 पूर्वी देशान्तर इसके लगभग मध्य से होकर गुजरती है, जो कि देश का मानक समय भी है। पूर्व से पश्चिम तक इसकी लम्बाई 2,933 किमी तथा उत्तर से दक्षिण तक लम्बाई 3,214 किमी है। इसकी स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी तथा द्वीप सहित जलीय सीमा की लम्बाई 7516,6 किमी है। मुख्य धरातलीय भाग की समुद्री सीमा की लम्बाई 6100 किमी है। यदि अंडमान-निकोबार तथा लक्षद्वीप द्वीप समूहों को भी सम्मिलित किया जाए तो भारत की तटीय सीमा 7516.6 किमी हो जाती है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व का सातवाँ बड़ा देश है। इससे बड़े 6 देश हैं - रूस, कनाडा, चीन, संयुक्त राज्य अमरीका, ब्राजील तथा आस्ट्रेलिया। इसके विपरीत भारत पाकिस्तान से 4 गुना, फ्रांस से 6 गुना, जर्मनी से 9 गुना तथा बांग्लादेश से 23 गुना बड़ा है। भारत का धुर दक्षिणी भाग भूमध्य रेखा से मात्र 876 किमी दूर है।

भू-आकृति

विश्व में क्षेत्रफल एवं जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़े महाद्वीपीय एशिया में स्थित भारत की आकृति पूर्णतः त्रिभुजाकार न होकर चतुष्कोणीय हे एवं यह भूमध्यरेख के उत्तर में स्थित है। कर्क रेखा इसके लगभग मध्य भाग से होकर गुजरती है। कर्क रेखा जिन प्रदेशों से होकर गुजरती है वे हैं - गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा तथ मिजोरम। देश का मानक समय ग्रीनविच टाइम से 5 घंटें 30 मिनट आगे है।

अरुणाचल प्रदेश तथा सौराष्ट्र के बीच स्थानीय समय का अन्तर 30x40=120 मिनट अर्थात दो घण्टे का है क्योंकि अरुणांचल प्रदेश सौराष्ट्र के पूर्व में है, इसलिए सूर्योदय वहाँ पहले होगा। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।

भारत में उत्तर-पश्चिम में इन्दिरा कॉल पर देश की स्थलीय सीमा अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान, तजाकिस्तान और चीन से मिलती है जबकि सुदूर उत्तरी-पूर्वी कोने पर भारतीय सीमा के साथ चीन और म्यांमार की सीमाएँ आपस में मिलती हैं। इसका सबसे दक्षिणी बिन्दु अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में स्थित है, जिसको वर्तमान में इन्दिरा प्वाइंट के नाम से जाना जाता है। इसके पूर्व नाम हैं - ला हि चिंग, पिगमेलियम प्वॉइण्ट तथा पारसन प्वॉइण्ट। द्वीपों समेप देश की समुद्री सीमा की कुल लम्बाई 7516,6 किमी. है।

देश सम्प्रति 28 राज्यों तथा 7 केन्द्र शासित प्रदेशों का एक संघ है। इसकी प्रादेशिक जल सीमा आधार पर रेखा से मापे गये 12 समुद्री मील की दूरी तक है जबकि संलग्न क्षेत्र की दूरी प्रादेशिक जल सीमा के आगे 24 समुद्री मील तक है। इस क्षेत्र में भारत को स्वच्छता का प्रबन्ध करने, सीमा शुल्क की वसूली करने आदि का अधिकार प्राप्त है। देश का एकान्तिक आर्थिक क्षेत्र संलग्न क्षेत्र के आगे 200 समुद्री मील तक हैं, जिसमें वैज्ञानिक शोधकार्यों को करने तथा कृत्रिम द्वीपों का निर्माण एवं प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन करने की छूट मिली हुई है।

BANK EXAMS

क्षेत्रफल

यद्यपि देश का क्षेत्रफल विश्व के कुल क्षेत्रफल का मात्र 2.42 प्रतिशत ही है, किन्तु यहाँ पर विश्व की लगभग 16 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। यहाँ की प्राकृतिक बनावट, संसाधन क्षमता आदि को देखते हुए जार्ज बी. क्रैंसी. ने अपनी भौगोलिक पुस्तक 'एशिया की भूमि एवं निवासी' में लिखा है कि 'भारत को महाद्वीप कहलाने का उतना ही अधिकार है जितना कि यूरोप को।'

देश की सीमाएँ

देश की सीमाएँ प्राकृतिक एवं मानव निर्मित दोनों प्रकार की है। भारत की स्थलीय सीमाएं उत्तर में तजाकिस्तान, चीन व नेपाल, उत्तर पश्चिम में अफ़ग़ानिस्तान, पश्चिम में पाकिस्तान, पूर्व में बांग्लादेश एवं म्यांमार तथा उत्तर-पूर्व में भूटान से मिलती है। पश्चिम में पाकिस्तान और पूर्व में बांग्लादेश के साथ भारत की सीमाएं कृत्रिम अथवा मानव निर्मित हैं जबकि अन्य 6 देशों - अफ़ग़ानिस्तान, तजाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान तथा म्यांमार के साथ

भारत की सीमाएं प्राकृतिक हैं। ये प्राकृतिक सीमाएं सामान्यतः ऊंची पर्वत शृंखलाओं के रूप में है। उत्तर में हिमालय पर्वत हमारी सीमा बनाता है। इसकी मुस्ताघ, अगोल, कुनलुन तथा काराकोरम श्रेणियाँ जम्मू कश्मीर की सीमा पर है। यहाँ पर एशिया के चार प्रमुख देशों:

1. चीन
2. भारत
3. अफ़ग़ानिस्तान
4. पाकिस्तान की सीमा आकार मिलती है।

भारत के पूर्व की ओर उच्च हिमालय का भाग है जो भारत तथा चीन के बीच अंतर्राष्ट्रीय सीमा का कार्य करता है। इसे मैकमोहन रेखा के नाम से जाना जाता है। भारत के सुदूर उत्तरी पूर्वी कोने पर उत्तरी-पूर्वी त्रिसन्धि है जहाँ पर भारत, चीन तथा म्यांमार की सीमाएँ आपस में मिलती है। पाकिस्तान एवं भारत की सीमा को स्पर्श करने वाले भारतीय राज्य हैं - जम्मू-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान तथा गुजरात; जबकि अफ़ग़ानिस्तान की सीमा मात्र जम्मू कश्मीर राज्य को स्पर्श करती है। भारत एवं चीन की सीमा से सटे राज्य हैं - जम्मू कश्मीर राज्य को स्पर्श करती है। भारत एवं चीन की सीमा से सटे राज्य हैं - जम्मू-कश्मीर राज्य को स्पर्श करती है। भारत एवं चीन की सीमा से सटे राज्य हैं - जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम तथा अरुणाचल प्रदेश। अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर तथा मिजोरम की सीमाएँ उत्तर-पूर्व में स्थित म्यांमार को स्पर्श करती हैं। बांग्लादेश एवं भारत की सीमा से लगे भारतीय राज्य हैं - मिजोरम, त्रिपुरा, असम, मेघालय तथा पश्चिम बंगाल।

वर्तमान में भारत के 9 राज्यों व 5 केन्द्रशासित प्रदेशों की सीमाएँ समुद्री तटरेखा से लगे हैं। ये राज्य हैं - कर्नाटक, महाराष्ट्र, गोवा, केरल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल। केन्द्रशासित प्रदेशों में पुदुचेरी, लक्षद्वीप, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दादरा एवं नगर हवेली तथा दमन एवं दीव की सीमाएं भी समुद्र से लगती है। भारत की सबसे लम्बी सीमा स्थलीय सीमा चीन के साथ लगती है जबकि सबसे छोटी स्थलीय सीमा भूटान के साथ संलग्न है। इस प्रकार भारत की स्थिति काफ़ी महत्त्वपूर्ण है एवं हिमालय पर्वतमाला तथा हिन्द महासागर के शीर्ष पर भारत की केन्द्रीय स्थिति है। भारत के निकटतम पड़ोसी देश हैं - पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, चीन, नेपाल, म्यांमार तथा बांग्लादेश। पाक जलसन्धि द्वारा अलग हुआ श्रीलंका भी हिन्द महासागर में स्थित पड़ोस देश है। भूटान जैसा पड़ोसी देश एक विशेष सन्धि द्वारा भारत पर निर्भर करता है एवं इसकी प्रतिरक्षा, विकास आदि कार्यों का उत्तरदायित्व भारत पर है। समुद्र पार भारत का सबसे निकटतम पड़ोसी श्रीलंका है, जिसे पाक जलडमरूमध्य भारत से पृथक करता है। इसी प्रकार भारत का दूसरा सबसे निकटतम पड़ोसी देश इंडोनेशिया है। इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप और भारत के ग्रेट निकोबार द्वीप को ग्रेट चैनल पृथक करता है। मालदीव भारत का एक अन्य पड़ोसी देश है जो लक्षद्वीप के दक्षिण में स्थित है।

भौतिक स्वरूप

भारत का विशाल क्षेत्र भौतिक दृष्टि से सर्वत्र समान नहीं है बल्कि इसके उच्चावचन में काफ़ी विविधता पायी जाती है। इसमें कहीं पर तो उच्च पर्वत श्रेणियां हैं और कहीं पर विशाल मैदान। नदी घांटियाँ एवं पठारी भाग भी देश में विद्यमान हैं। यदि उत्तर में हिमालय जैसी नवीन पर्वत मालाएं स्थित हैं; तो अरावली, सतपुड़ा, विन्ध्याचल जैसी प्राचीन पर्वत श्रेणियाँ भी हैं। देश के कुल क्षेत्रफल के 10.7 प्रतिशत भाग पर उच्च पर्वत श्रेणियों का विस्तार पाया जाता है, जिनकी ऊंचाई समुद्र तट से 2,135 मी. या इसके अधिक है। समुद्र तट से 305 से 2,135 मी. तक की ऊंचाई वाली पहाड़ियाँ भी देश के 18.6 प्रतिशत भाग पर फैली हैं। इस प्रकार कुल पर्वतीय भाग 29.3 प्रतिशत है। समुद्र तट से 305 से 915 मीं तक ऊंचाई वाले पठारी भाग का विस्तार भी देश के 27.7 प्रतिशत क्षेत्र पर है, जबकि शेष 43.0 प्रतिशत पर विस्तृत मैदान पाये जाते हैं। उच्चावचन की दृष्टि से भारत को सामान्यतः चार प्राकृतिक या भौतिक भागों में वर्गीकृत किया जाता है, जो हैं:

1. उत्तर का पर्वतीय एवं पहाड़ी प्रदेश
2. उत्तर का विशाल मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठारी भाग

4. समुद्र तटीय मैदान। पुनः थार का विशाल मरुस्थल तथा सागरीय भाग में स्थित द्वीप भी एक विशेष प्रकार का भौतिक स्वरूप प्रस्तुत करते हैं।

उत्तर का पर्वतीय एवं पहाड़ी प्रदेश

इस प्रदेश का हिमालय पर्वतीय प्रदेश के रूप में भी जाना जाता है, जो देश की उत्तर सीमा पर एक चाप के आकार में 2400 किमी. की लम्बाई में फैला है। इसका क्षेत्रफल लगभग 5 लाख वर्ग किमी है। इसका उद्गम पामीर की गाँठ से हुआ है। इसकी उत्पत्ति वस्तुतः एक भू-द्रोणी, जिसे टेथिस सागर कहते हैं, से हुई है। हिमालय पर्वत श्रेणी की कुल लम्बाई मकरान तट पर स्थित ग्वाडर से लेकर पूर्व में मिजों पहाड़ियों तक 2,400 किमी. है, जबकि इसकी चौड़ाई पश्चिम में 400 किमी और पूरब में 160 किमी. तक है। हिमालय की स्थलाकृतियों में मुख्यतः तीन लंबी और घुमावदार श्रेणियां हैं, जिनकी ऊंचाई दक्षिण से उत्तर की ओर क्रमशः बढ़ती जाती है। मंद गति के कारण इन्हें वर्तमान ऊंचाई को प्राप्त करने में 70 लाख वर्ष लगे हैं। भौतिक दृष्टि से हिमालय मे चार समान्तर श्रेणियां मिलती हैं जिनमें, सबसे उत्तर में ट्रांस अथवा तिब्बत हिमालय, उसके दक्षिण में क्रमशः महान अथवा आन्तरिक हिमालय, लघु अथवा मध्य हिमालय तथा उप अथवा शिवालिक श्रेणी स्थित हैं।

ट्रान्स अथवा तिब्बत हिमालय श्रेणी सबसे उत्तर में स्थित हैं। इसकी खोज सन् 1906 स्वैन महोदय ने की थी। इसकी लम्बाई 100 किमी. तथा चौड़ाई पूर्वी तथा पश्चिमी किनारों पर 40 किमी एवं बीच में 225 किमी तक पायी जाती है। इस श्रेणी की औसत ऊंचाई 3,100 से 3,700 मी तक पायी जाती है। इस श्रेणी की औसत ऊंचाई 3,100 से 3,700 मीं तक है एवं शीत कटिबन्धीय जलवायु के कारण इस पर वनस्पतियों का पूर्ण अभाव पाया जाता है। यह श्रेणी बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों तथा उत्तर दिशा में भू-आवेष्ठित झीलों से निकलने वाली नदियों के बीच जल विभाजक की भूमिका निभाती है।

हिमालय तीन समानांतर पर्वत श्रंखलाओं में अवस्थित है जो पश्चिम में सिंधु गार्ज से पूर्व में ब्रह्मपुत्र गार्ज तक विस्तृत है। कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश तक हिमालय पर्वत श्रंखला का विस्तार 2500 किमी. है। इस पर्वत शृंखला की पूर्व में चौड़ाई 150 किमी. तथा पश्चिम में 500 किमी तक है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हिमालय पर्वत श्रेणी को तीन वृहत् भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

महान (वृहत्) अथवा आंतरिक हिमालय

महान अथवा आन्तरिक हिमालय ही हिमालय पर्वतमाला की सबसे प्रमुख तथा सवोच्च तथा सर्वोच्च श्रेणी है, जिसकी लम्बाई उत्तर में सिंधु नदी के मोड़ से पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी के मोड़ तक 2,500 किमी. है। इसकी चौड़ाई 120 से 190 किमी. तक तथा औसत ऊंचाई 6,100 मीं. है। अत्यधिक ऊंचाई के कारण हिमालय साला भर बर्फ़ से ढंका रहता हैं, अतः इसे हिमाद्रि भी कहते हैं। इस श्रेणी में विश्व की सर्वोच्च पर्वत चोटियाँ पाई जाती हैं, जिनमें प्रमुख हैं - माउण्ट एवरेस्ट (8,848 मी.), कंचनजंगा (8,598 मीं.), मकालू (8,481 मीं.), धौलागिरी (8,172 मी.), मनसालू (8156 मी.), नंगा पर्वत (8,126 मीं.), अन्नापूर्णा (8,078 मी.), गोवाई थान (8,013 मी.), नन्दा देवी (7,817 मी.), नामचाबरवा (7,756 मी.), हरामोश (7,397 मी.), आदि। इस श्रेणी में उत्तर पश्चिम की ओर जास्कर श्रेणी के उत्तर-दक्षिण में देवसाई तथा रूपशू के ऊंचे मैदान मिलते हैं। सिन्धु, सतलुज, दिहांग, गंगा, यमुना तथा इनकी सहायक नदियों की घाटियाँ इसी श्रेणी में स्थित है।

लघु अथवा मध्य हिमालय श्रेणी

यह महान हिमालय के दक्षिण के उसके समानान्तर विस्तृत है। इसकी चौड़ाई 80 से 100 किमी. तक औसत ऊंचाई 1,828 से 3,000 के बीच पायी जाती है। इस श्रेणी में नदियों द्वारा 1,000 मीं. से भी अधिक गहरे खड्डों अथवा गार्जों का निर्माण किया गया है। यह श्रेणी मुख्यतः छोटी-छोटी पर्वत श्रेणियों जैसे - धौलाधार, नागटीवा, पीरपंजाल, महाभारत तथा मसूरी कासम्मिलित रूप है। इस श्रेणी के निचले भाग में देश के प्रसिद्ध पर्वतीय स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान

- शिमला, मसूरी, नैनीताल, चकराता, रानीखेत, दार्जिलिंग आदि स्थित है। वृहत तथा लघु हिमालय के बीच विस्तृत घाटियां हैं जिनमें कश्मीर घाटी तथा नेपाल में काठमांडू घाटी प्रसिद्ध है। इस श्रेणी के ढालों पर मिलने वाले छोटे-छोटे घास के मैदानों को जम्मू-कश्मीर में मर्ग (जैसे-सोनमर्ग, गुलमर्ग आदि) तथा उत्तराखण्ड में बुग्याल एवं पयार कहा जाता हे।

उप हिमालय या शिवालिक श्रेणी

यह हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी है एवं इसको 'वाह्म हिमालय' के नाम से भी जाना जाता है। यह हिमालय पर्वत की दक्षिणतम श्रेणी है जो लघु हिमालय के दक्षिण में इसके समानांतर पूर्व-पश्चिम दिशा में फैली हुई है। इसकी औसत ऊंचाई 900 से 12,00 मीटर तक औसत चौड़ाई 10 से 50 किमी है। इसका विस्तार पाकिस्तान के पोटवार पठार से पूर्व में कोसी नदी तक है। गोरखपुर के समीप इसे डूंडवा श्रेणी तथा पूर्व की ओर चूरियामूरिया श्रेणी के स्थानीय नाम से भी पुकारा जाता है। यह हिमालय पर्वत का सबसे नवीन भाग है। लघु तथा वाह्म हिमालय के बीच पायी जाने वाली विस्तृत घाटियों को पश्चिम में 'दून' तथा पूर्व में 'द्वार' कहा जाता है। देहरादून, केथरीदून तथा पाटलीदून और हरिद्वार इसके प्रमुख उदाहरण है।

हिमालय पर्वत श्रेणियों की दिशा में असम से पूर्व से उत्तर पूर्व हो जाती है। नामचाबरचा के आगे यह श्रेणियाँ दक्षिणी दिशा में मुड़कर पटकोई, नागा, मणिपुर, लुशाई, अराकानयोमा, आदि श्रेणियों के रूप में स्थित हैं जो भारत एवं म्यान्मार के मध्य सीमा बनाती है।

शिवालिक को जम्मू में जम्मू पहाड़ियाँ तथा अरुणाचल प्रदेश में डफला, गिरी, अवोर और मिशमी पहाड़ियों के नाम से भी जाना जाता है। अक्साईचीन, देवसाई, दिषसंग तथा लिंगजीतांग के उच्च तरंगित मैदान इन पर्वतों के निर्माण से पहले ही क्रिटेशश काल में बन चुके थे जो अपरदन धरातल के प्रमाण हैं।

उत्तर का विशाल मैदान

हिमालय पर्वत की उत्पत्ति के पश्चात उसके दक्षिण तथा प्राचीन शैलों से निर्मित प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर में, दोनों उच्च स्थलों से निकलने वाली नदियों, सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र, आदि द्वारा जमा की गई जलोढ़ मिट्टी के जमाव से उत्तर के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है। इस मैदान को सिंधु-गंगा ब्रह्मपुत्र का मैदान भी कहते हैं। यह मैदान धनुषाकार रूप में 3200 किमी. की लम्बाई में देश के 7.5 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र पर विस्तृत हैं। इसकी चौड़ाई पश्चिम में 480 किमी तथा पूर्व में मात्र 145 किमी है। प्रादेशिक दृष्टि से उत्तरी राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा तथा असम में इसका विस्तार हैं। इन मैदान को पश्चिमी तथा पूर्वी दो भाग में बांटा जाता है। पश्चिमी मैदान का अधिकांश भाग वर्तमान पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत में पड़ता है, जबकि इसका कुछ भाग पंजाब व हरियाणा राज्यों में भी मिलता है। इसका निर्माण, सतजल, व्यास तथा रावी एवं इनकी सहायक नदियों द्वारा किया गया है। पूर्वी मैदान का विस्तान उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिम बंगाल राज्यों में हैं, जिसका क्षेत्रफल 3.57 लाख वर्ग किमी. है। इस मैदान में धरातलीय भू-आकृति के आधार पर बांगर तथा खादर नामक दो विशेष भाग मिलते हैं। बांगर प्राचीनतम संग्रहीत पुरानी जलोढ़ मिट्टी के उच्च मैदानी भाग हैं, जहाँ कभी नदियों की बाढ़ का पानी नहीं पहुंच पाता। खादर की गणना नवीनतम कछारी भागों के रूप में की जाती है। यहाँ पर प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी पहुंचने एवं नयी मिट्टी का जमाव होने से काफ़ी ऊपजाऊ माने जाते हैं।

उत्तर के विशाल मैदान का प्रादेशिक विभाजन

उत्तर के विशाल मैदान को अनेक उपविभागों में बाँटा गया है, जिनमें प्रमुख हैं - पंजाब, हरियाणा का मैदान, राजस्थान का मेदान, गंगा का मैदान एवं ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी। गंगा के मैदान को हरिद्वार से अलीगढ़ तक ऊपरी दोआब तथा अलीगढ़ से इलाहाबाद तक मध्य दोआब के नाम से जाना जाता है। गंगा तथा यमुना दोआब के ऊत्तरी-मध्य उत्तर प्रदेश में स्थित भाग को रूहेलखण्ड का मैदान कहा जाता है।

इस मैदान पर राम गंगा, शारदा तथा गोमती नदियाँ प्रवाहित होती है। उत्तर प्रदेश के उत्तरी पूर्वी भाग में अवध का मैदान स्थित हैं, जिसमें घाघरा, राप्ती तथा गोमती नदियाँ बहती है। गंगा के मैदान के उत्तरी-पूर्वी भाग में असम तक ब्रह्मपुत्र नदी का मैदान स्थित है, जो कि गारो पहाड़ी, मेघालय पठार तथा हिमालय पर्वत के बीच लम्बे एवं पतले रूप में फैला है। इसकी चौड़ाई मात्र 80 किमी. है। ब्रह्मपुत्र नदी घाटी की अवनतीय संरचना मे जमा किये गये अवसादों से इस मेदान में मियाण्डर, गोखुर झील, आदि का निर्माण हो गया है। इस मैदान के ढाल की दिशा दक्षिण-पश्चिम की ओर है तथा इसकी सीमा पर तराई एव अर्द्ध-तराई क्षेत्र मिलते हैं, जो दलदलो एवं सघन वनों से अच्छादित हैं

उत्तर के विशाल मैदान से सम्बन्धित दो प्रमुख शब्दावलियाँ हैं - भावर तथा तराई। ये अवसादी जमाव की विशेषताओं की परिचारक भी हैं।

भावर

यह क्षेत्र हिमालय तथा गंगा के मैदान के बीच पाया जाता है। जिसमें पर्वतीय भाग से नीचे आने वाली नदियों ने लगभग 8 किमी की चौड़ाई में कंकड़ों एवं पत्थरों का जमाव कर दिया है। यही गंगा मैदान की सबसे उत्तरी सीमा भी है। इस पथरीले क्षेत्र में हिमालय से निकलने वाली नदियाँ प्रायः विलीन हो जाती है और केवल कुछ बड़ी नदियों की धारा ही धरातल पर प्रवाहित होती हुई दिखती है।

तराई

यह क्षेत्र भावर के नीचे उसके समानान्तर स्थित है, जिसकी चौड़ाई 15 से 30 किमी तक पायी जाती हैं। भावर प्रदेश में विलीन हुई नदियों का जल तराई क्षेत्र में ऊपर आ जाता हे। यह वास्तव में निम्न समतल मैदानी क्षेत्र हैं, जहाँ नदियों का जल इधर-उधर फैल जाने से दलदलों का निर्माण हो गया है। वर्तमान में यहां की सघन वनस्पतियों को काटकर तथा दलदलों को सुखाकर कृषि कार्य के लिए उपयोगी बना लिया गया है।

बांगर

बांगर प्रदेश भी उत्तर के विशाल मैदान की एक विशेषता है। यह प्रदेश पुरानी जलोढ़ मिट्टी का बना होता है जहां नदियों की बाढ़ का जल नहीं पहुंचता है। इस प्रदेश में चूनायुक्त संग्रथनों की अधिकता होने के कारण यह कृषि के लिए अधिक उपयुक्त नहीं होता है। पंजाब में मिलने वाले बांगर को धाया कहा जाता है।

खादर

बांगर के विपरीत खादर प्रदेश में नदियों की बाढ़ का जल प्रतिवर्ष पहुंचता है। इस प्रदेश का निर्माण नवीन जलोढ़ मिट्टी द्वारा होता है क्योंकि बाढ़ के जल के साथ नवीन मिट्टी यहां प्रति वर्ष बिछती रहती है। यह प्रदेश कृषि के लिए अत्यधिक उपयुक्त होती है। पंजाब में मिलने वाले खादर को 'बेट' कहा जाता है।

डेल्टा

उत्तरी विशाल मैदान में गंगा तथा सिंधु नदी के डेल्टा मिलते हैं। गंगा का डेल्टा राजमहल की पहाड़ियों में सुन्दरवन के किनारे तक 430 किमी की लम्बाई में विस्तृत है। इसकी चौड़ाई 480 किमी है। सिंधु नदी का डेल्टा 960 किमी लम्बा और 160 किमी चौड़ा है।

प्रायद्वीपीय पठारी भाग

गंगा के विशाल मैदान के दक्षिण से लेकर कश्मीर से कन्याकुमारी तक त्रिभुजाकार आकृति में लगभग 16 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र पर प्रायद्वीपीय पठारी भाग फैला हुआ है। यह भाग दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु एवं केरल राज्यों में फैला है। यह देश का सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला तथा प्राचीन भौतिक प्रदेश है। यह देश का सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला तथा प्राचीन भौतिक प्रदेश है। इस पर प्रवाहित होने वाली नदियों ने इसका कई छोटे-छोटे पठारों में विभाजित कर दिया है। इसकी लम्बाई

राजस्थान से कुमारी अन्तरीप तक लगभग 1,700 किमी. तथा गुजरात से पश्चिम बंगाल तक चौड़ाई 1,400 किमी है। इस पठार की औसत ऊँचाई समुद्र तल से 600 मीटर तक है। इसकी उत्तरी सीमा पर अरावली, कैमूर तथा राजमहल पहाड़ियाँ स्थित है। पूर्व में पूर्वी घाट तथा पश्चिम में पश्चिमी घाट पहाड़ी इसकी सीमा बनाते हैं। यह क्षेत्र विच्छिन्न पहाड़ियों, शिखर मैदानों गभीरकृत, संकरी एवं अधिवर्धित घाटियों, शृंखलाबद्ध पठारों, समप्राय मैदानों एवं अवशिष्ट खण्डों का एक प्राकृतिक भूदृश्य है। पूर्वी एवं पश्चिमी घाट का मिलन जिस स्थान पर होता है, वहां अन्नामलाई पहाड़ियाँ स्थित है। नर्मदा नदी के उत्तर में मालवा पठार स्थित है। यह पठार लावा निर्मित होने के कारण काली मिट्टी का समप्रायः बन गया है, जिसका ढाल विशाल मैदान की ओर है। इस पर बेतवा, पार्वती, नीवज, काली सिन्ध, चम्बल तथा माही नदियाँ बहती है। मालवा पठार की उत्तरी तथा उत्तरी पूर्वी सीमा पर बुन्देलखण्ड तथा बघेलखण्ड के पठार स्थित हैं जबकि कैमूर तथा भारनेर श्रेणियों के पूर्व में बघेलखण्ड का पठार है। इस पठार के उत्तर में सोनपुर पहाड़ियाँ तथा दक्षिण में रामगढ़ की पहाड़ियाँ स्थित है।

समुद्रतटीय मैदान

दक्षिण के प्रायद्वीपीय पठारी भाग के दोनों ओर पूर्वी घाट तथा पश्चिमी घाट पर्वतमालाओं एवं सागर तट के बीच समुद्रतटीय मैदानों का विस्तार है। यह तटीय मैदान देश के अन्य प्राकृतिक विभाग से स्पष्ट भिन्नता रखता है। स्थित के आधार पर इन्हे पश्चिमी तथा पूर्वी तटीय मैदानों में विभाजित किया जाता है।

पश्चिमी समुद्र तटीय मैदान का विस्तार गुजरात में कच्छ की खाड़ी से लेकर कुमारी अन्तरीप तक पाया जाता है। इसकी औसत चौड़ाई 64 किमी. है। इस मैदान की सर्वाधिक चौड़ाई नर्मदा तथा ताप्ती नदियों के मुहानों के समीप 80 किमी तक मिलती है। इस मैदान का ढाल पश्चिम की ओर अत्यधिक तीव्र हैं, जिस पर तीव्रगामी एवं छोटी नदियाँ प्रवाहित होती है। इस मैदान को पाँच उपखण्डों में विभाजित किया गया है:

1. कच्छ प्रायद्वीपीय तटीय मैदान जो कि शुष्क एवं अर्द्धशुष्क रेतीला मैदान है। इसके मध्य में गिरनार पहाड़ियाँ स्थित हैं।
2. गुजरात का मैदान, जिसका विस्तार कच्छ एवं सौराष्ट्र के पूर्व में हैं। इस पर माही, साबरमती, नर्मदा तथा ताप्ती नदियाँ प्रवाहित होते हुए अरब सागर में मिलती हैं।
3. कोंकण का मैदान दमन से गोवा तक 500 किमी लम्बा हैं। इस पर साल, सागौन आदि के वनों की अधिकता हैं।
4. कनारातटीय मैदान गोवा से मंगलोर तक पाया जाता है। इसका निर्माण प्राचीन कायान्तरित शैलों से हुआ है। इस पर बालुआ स्तूपों का जमाव पाया जाता है। यह तट गरम मसालों, सुपारी, केला, आम, नारियल, आदि की कृषि के लिए प्रसिद्ध हैं।
5. मालाबार तटीय मैदान केरल का तटीय मैदान हैं, जो कि मंगलोर से कन्याकुमारी तक 500 किमी की लं. में फैला है। इस पर लैगून (कयाल) नामक छोटी-छोटी तटीय झीलें पायी जाती हैं। इस मैदान के तटीय भागों में मत्स्ययन किया जाता है।

पूर्वी समुद्र तटीय मेदान पश्चिम बंगाल से लेकर कुमारी अन्तरीप तक मिलता है। इसकी चौड़ाई पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा अधिक हैं। इस मैदान पर प्रवाहित होने वाली नदियों- महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि ने विस्तृत डेल्टा का निर्माण किया है। इस पर चिल्का तथा पुलीकट जैसी विस्तृत लैगून झीलें भी पायी जाती हैं। इस मैदान के उत्तरी भाग को उत्तरी सरकार तथा दक्षिण भाग को कोरामण्डल तट के नाम से जाना जाता है। इसके तीन प्रमुख उप विभाग हैं:

1. उत्कल का मैदान जो कि उड़ीसा तट के सहारे लगभग 400 किमी की लम्बाई में फैला है। इस मैदान पर महानदी का डेल्टा, चिल्का झील तथा विशाखापट्नम बन्दरगाह स्थित हैं।
2. आन्ध्र का मैदान आन्ध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्र में स्थित हैं जिस पर गोदावरी एवं कृष्णा नदियों ने अपने डेल्टा का निर्माण किया है। इन दोनों डेल्टाओं के बीच कोलेरू झील स्थित हैं।

3. तमिलनाडु के मैदान का विस्तार तमिलनाडु तथा पाण्डिचेरी के तटीय क्षेत्र में हैं। पुलीकट झील से कुमारी अन्तरीप तक इसकी लम्बाई 675 किमी है। इसकी औसत चौड़ाई 100 किमी है। पुलीकट एक लैगून झील है जिसके आगे श्रीहरिकोटा द्वीप स्थित है। यह मैदान सबसे लम्बा है।

नदियाँ

भारत की नदियों को चार समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे :-

- हिमाचल से निकलने वाली नदियाँ
- दक्षिण से निकलने वाली नदियाँ
- तटवर्ती नदियाँ
- अंतर्देशीय नालों से द्रोणी क्षेत्र की नदियाँ

हिमालय से निकलने वाली नदियाँ

हिमालय से निकलने वाली नदियाँ बर्फ़ और ग्लेशियरों के पिघलने से बनी हैं अत: इनमें पूरे वर्ष के दौरान निरन्तर प्रवाह बना रहता है। मॉनसून माह के दौरान हिमालय क्षेत्र में बहुत अधिक वृष्टि होती है और नदियाँ बारिश पर निर्भर हैं अत: इसके आयतन में उतार चढ़ाव होता है। इनमें से कई अस्थायी होती हैं। तटवर्ती नदियाँ, विशेषकर पश्चिमी तट पर, लंबाई में छोटी होती हैं और उनका सीमित जलग्रहण क्षेत्र होता है। इनमें से अधिकांश अस्थायी होती हैं। पश्चिमी राजस्थान के अंतर्देशीय नाला द्रोणी क्षेत्र की कुछ नदियाँ हैं। इनमें से अधिकांश अस्थायी प्रकृति की हैं।

हिमाचल से निकलने वाली नदी की मुख्य प्रणाली सिंधु और गंगा ब्रह्मपुत्र मेघना नदी की प्रणाली की तरह है।

सिंधु नदी

विश्व की महान, नदियों में एक है, तिब्बत में मानसरोवर के निकट से निकलती है और भारत से होकर बहती है और तत्पश्चात् पाकिस्तान से हो कर और अंतत: कराची के निकट अरब सागर में मिल जाती है। भारतीय क्षेत्र में बहने वाली इसकी सहायक नदियों में सतलुज (तिब्बत से निकलती है), व्यास, रावी, चिनाब, और झेलम है।

गंगा

ब्रह्मपुत्र मेघना एक अन्य महत्वपूर्ण प्रणाली है जिसका उप द्रोणी क्षेत्र भागीरथी और अलकनंदा में हैं, जो देवप्रयाग में मिलकर गंगा बन जाती है। यह उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश, बिहार और प.बंगाल से होकर बहती है। राजमहल की पहाडियों के नीचे भागीरथी नदी, जो पुराने समय में मुख्य नदी हुआ करती थी, निकलती है जबकि पद्मा पूरब की ओर बहती है और बांग्लादेश में प्रवेश करती है।

यमुना, रामगंगा, घाघरा, गंडक, कोसी, महानदी, और सोन; गंगा की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ है। चंबल और बेतवा महत्वपूर्ण उप सहायक नदियाँ हैं जो गंगा से मिलने से पहले यमुना में मिल जाती हैं। पद्मा और ब्रह्मपुत्र बांग्लादेश में मिलती है और पद्मा अथवा गंगा के रुप में बहती रहती है।

ब्रह्मपुत्र

ब्रह्मपुत्र तिब्बत से निकलती है, जहाँ इसे सांगणो कहा जाता है और भारत में अरुणाचल प्रदेश तक प्रवेश करने तथा यह काफ़ी लंबी दूरी तय करती है, यहाँ इसे दिहांग कहा जाता है। पासी घाट के निकट देबांग और लोहित ब्रह्मपुत्र नदी से मिल जाती है और यह संयुक्त नदी पूरे असम से होकर एक संकीर्ण घाटी में बहती है। यह घुबरी के अनुप्रवाह में बांग्लादेश में प्रवेश करती है।

सहायक नदियाँ

भारत में ब्रह्मपुत्र की प्रमुख सहायक नदियाँ सुबसिरी, जिया भरेली, घनसिरी, पुथिभारी, पागलादिया और मानस हैं। बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र तिस्त आदि के प्रवाह में मिल जाती है और अंतत: गंगा में मिल जाती है। मेघना की मुख्य नदी बराक नदी मणिपुर की पहाडियों में से निकलती है। इसकी महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ मक्कू, ट्रांग, तुईवई, जिरी,

सोनई, रुक्वी, कचरवल, घालरेवरी, लांगाचिनी, महुवा और जातिंगा हैं। बराक नदी बांग्लादेश में भैरव बाज़ार के निकट गंगा-ब्रह्मपुत्र के मिलने तक बहती रहती है।

दक्कन क्षेत्र में अधिकांश नदी प्रणालियाँ सामान्यत पूर्व दिशा में बहती हैं और बंगाल की खाड़ी में मिल जाती हैं।

गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, महानदी, आदि पूर्व की ओर बहने वाली प्रमुख नदियाँ हैं और नर्मदा, ताप्ती पश्चिम की बहने वाली प्रमुख नदियाँ है। दक्षिणी प्रायद्वीप में गोदावरी का दूसरी सबसे बड़ी नदी का द्रोणी क्षेत्र है जो भारत के क्षेत्र 10 प्रतिशत भाग है। इसके बाद कृष्णा नदी के द्रोणी क्षेत्र का स्थान है जबकि महानदी का तीसरा स्थान है। डेक्कन के ऊपरी भूभाग में नर्मदा का द्रोणी क्षेत्र है, यह अरब सागर की ओर बहती है, बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं दक्षिण में कावेरी के समान आकार की है और परन्तु इसकी विशेषताएँ और बनावट अलग है।

कई प्रकार की तटवर्ती नदियाँ हैं जो अपेक्षाकृत छोटी हैं। ऐसी नदियों में काफ़ी कम नदियाँ-पूर्वी तट के डेल्टा के निकट समुद्र में मिलती है, जबकि पश्चिम तट पर ऐसी 600 नदियाँ है।

राजस्थान में ऐसी कुछ नदियाँ है जो समुद्र में नहीं मिलती हैं। ये खारे झीलों में मिल जाती है और रेत में समाप्त हो जाती हैं जिसकी समुद्र में कोई निकासी नहीं होती है। इसके अतिरिक्त कुछ मरुस्थल की नदियाँ होती है जो कुछ दूरी तक बहती हैं और मरुस्थल में लुप्त हो जाती है। ऐसी नदियों में लुनी और मच्छ, स्पेन, सरस्वती, बानस और घग्गर जैसी अन्य नदियाँ हैं।

सामान्य विज्ञान

BANK EXAMS Today

न्यूटन का गति का प्रथम नियम

जब एक वस्तु गति में है तो वो गति में बनी रहेगी जब तक उस पर कोई बाह्य बल ना लगे.

न्यूटन का गति का द्वितिय नियम

वस्तु पर आरोपित बल उसके द्रव्यमान व त्वरण के गुणनफल के बराबर होता है.

न्यूटन का गति का तृतीय नियम

प्रत्येक क्रिया के फलस्वरूप एक प्रतिक्रिया होती है.

केप्लर का नियम

प्रत्येक ग्रह सूर्य के चारों और एक दीर्घवृतीय कक्षा में गति करता है जबकि सूर्य स्थिर रहता है.

चुम्बकत्व

चुम्बकत्व के आधार पदार्थों को तीन भागों में बांटा जा सकता है - प्रतिचुम्बकीय, अनुचुम्बकीय व लौहचुम्बकीय.

प्रतिचुम्बकीय- वे पदार्थ जिन्हे अगर चुम्बकीय क्षेत्र में रखा जाये तो वे चुम्बक के विपरीत दिशा में गति करते हैं.

अनुचुम्बकीय- वे पदार्थ जिन्हे अगर चुम्बकीय क्षेत्र में रखा जाये तो वे चुम्बक की दिशा में धीमी गति करते हैं.

लौहचुम्बकीय- वे पदार्थ जिन्हे अगर चुम्बकीय क्षेत्र में रखा जाये तो वे चुम्बक की दिशा में तेजी से गति करते

हैं.

कोयला

बिटुमिंस- काला, कठोर, धुआंयुक्त कोयला

लिग्नाइट - अत्यधिक नमीयुक्त कोयला

पिट - न्यून गुणवत्ता वाला कोयला

एंथ्रासाइट- सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता वाला कोयला

जीव विज्ञान

- जीव विज्ञान का पिता- एरिस्टोटल
- कोशिका की खोज रॉबर्ट हुक ने 1965 में की थी
- लाईसोसोम को आत्महत्या की थैली कहा जाता है
- माईट्रॉकॉड्रिया को कोशिका का शक्तिगृह कहा जाता है
- राईबोसोम को प्रोटीन की फैक्ट्री कहा जाता है
- क्लोरोप्लास्ट को कोशिका का किचन कहा जाता है
- माईक्रोप्लाज्मा गेलोसेप्टीकम सबसे छोटी व शुतुरमुर्ग का अण्डा सबसे बडी कोशिका है

कार्य व ऊर्जा

बल व विस्थापन के गुणनफल को कार्य कहते हैं वही कार्य करने की दर को ऊर्जा कहते हैं.
कार्य की ईकाई न्यूटन या जूल है.

महत्वपूर्ण वैज्ञानिक यंत्र

1) अल्टीमीटर → उंचाई सूचित करने हेतु वैज्ञानिक यंत्र
2) अमीटर → विद्युत् धारा मापन
3) अनेमोमीटर → वायुवेग का मापन
4) ऑडियोफोन → श्रवणशक्ति सुधारना
5) बाइनाक्युलर → दूरस्थ वस्तुओं को देखना
6) बैरोग्राफ → वायुमंडलीय दाब का मापन
7) क्रेस्कोग्राफ → पौधों की वृद्धि का अभिलेखन
8) क्रोनोमीटर → ठीक ठीक समय जान्ने हेतु जहाज में लगायी जाने वाली घड़ी
9) कार्डियोग्राफ → हृदयगति का मापन
10) कार्डियोग्राम → कार्डियोग्राफ का कार्य में सहयोगी
11) कैपिलर्स → कम्पास
12) डीपसर्किल → नतिकोण का मापन
13) डायनमो→ यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत् उर्जा में बदलना
14) इपिडियास्कोप → फिल्मों का पर्दे पर प्रक्षेपण
15) फैदोमीटर → समुद्र की गहराई मापना
16) गल्वनोमीटर → अति अल्प विद्युत् धारा का मापन
17) गाड्गरमुलर → परमाणु कण की उपस्थिति व् जानकारी लेने हेतु
18) मैनोमीटर → गैस का घनत्व नापना
19) माइक्रोटोम्स → किसी वस्तु का अनुवीक्षनीय परिक्षण हेतु छोटे भागों में विभाजित करता है।
20) ओडोमीटर → कार द्वारा तय की गयी दूरी बताता है।
21) पेरिस्कोप → जल के भीतर से बाहरी वस्तुएं देखि जाती हैं।
22) फोटोमीटर → प्रकाश दीप्ति का मापन
23) पाइरोमीटर → अत्यंत उच्च ताप का मापन
24) रेडियोमीटर → विकिरण द्वारा विकरित उर्जा का मापन
25) सीज्मोमीटर → भूकंप की तीव्रता का मापन
26) सेक्सटेंट → ग्रहों की उंचाई जानने हेतु
27) ट्रांसफॉर्मर → प्रत्यावर्ती धारा की वोल्टता में परिवर्तन करने हेतु
28) टेलीप्रिंटर → टेलीग्राफ द्वारा भेजी गयी सूचनाओं को स्वतः छापने वाला यंत्र
29) टैक्सीमीटर → टैक्सीयों में किराया दर्शाने वाला यंत्र
30) टैकोमीटर → मोटरबोट व् वायुयान का वेगमापक
31) टेलीस्कोप → दूरस्थ वस्तुओं को देखने में सहायक यंत्र
32) जाइरोस्कोप → घूमती वस्तु की गतिकी का अध्ययन
33) ग्रेवीमीटर → जल में उपस्थित तेल क्षेत्रों का पता लगाना
34) ग्रामोफोन → रिकार्ड पर उपस्थित ध्वनि को पुनः सुनाने वाला यंत्र
35) कायमोग्राफ → रक्तदाब, धडकन का अध्ययन
36) कायनेस्कोप→ टेलीविजन स्क्रीन के रूप में
37) कैलिपर्स → छोटी दूरियां मापने वाला यंत्र
38) कैलोरीमीटर → ऊष्मामापन का कार्य

BANK EXAMS

39) कार्ब्युरेटर → इंजन में पेट्रोल का एक निश्चित भाग वायु में भेजने वाला यंत्र
40) कम्पास → दिशा ज्ञान हेतु प्रयुक्त
41) कम्प्यूटेटर → विद्युत्धारा की दिशा बताने वाला यंत्र
42) एपिकायस्कोप → अपारदर्शी चित्रों को पर्दे पर दिखाना
43) एपिडोस्कोप → सिनेमा में पर्दे पर चित्रों को दिखाना
44) एस्केलेटर → चलती हुई यांत्रिक सीढियां
45) एक्सियरोमीटर → वायुयान का वेगमापक
46) एक्टियोमीटर → सूर्य किरणों की तीव्रता मापने का यंत्र
47) एयरोमीटर → गैसों का भार व् घनत्व मापक
48) एक्युमुलेटर → विद्युत् उर्जा संग्राहक
49) ओसिलोग्राफ → विद्युत् अथवा यांत्रिक कम्पन सूचित करने हेतु
50) स्टेथोस्कोप → ह्रदय व् फेफड़े की गति के अध्ययन हेतु
51) स्फिग्नोमैनोमीटर → धमनियों में रक्तदाब की तीव्रता ज्ञात करना।।
52) जीटा → शून्य उर्जाताप नाभिकीय संयोजन
53) डेनियल सेल → परिपथ में विद्युत् उर्जा प्रवाहित करने हेतु
54) डिक्टाफोन → बातचीत रिकार्ड करके पुनः सुनाने वाला यंत्र
55) डायलिसिस → गुर्दे खराब होने पर रक्त शोधन हेतु
56) थर्मामीटर → ताप मापन हेतु
57) थर्मोस्टेट → ताप स्थाई बनाये रखने हेतु

58) हिप्सोमीटर → समुद्र तल से उंचाई ज्ञात करने हेतु
59) हाइड्रोफोन → पानी के भीतर ध्वनि अंकित करना
60) स्पेक्ट्रोमीटर →प्रकाश का अपवर्तनांक ज्ञात करना
61) हाइड्रोमीटर → द्रवों की आपेक्षिक आर्द्रता ज्ञात करना
62) हाइग्रोमीटर → वायु की आपेक्षिक आर्द्रता ज्ञात करना
63) स्टीरियोस्कोप → फोटो को पर्दे पर त्रिविमीय रूप में दिखाना
64) वानडीग्राफ जनरेटर → उच्च विभवान्तर उत्पन्न करना
65) वोल्टामीटर → विभवान्तर मापना
66) लैक्टोमीटर → दूध की शुद्धता मापना
67) रिफ्रैक्टोमीटर → माध्यमों के अपवर्तनांक ज्ञात करना।
68) रेन गेज → वर्षा की मात्रा का मापन
69) रेडिएटर → वाहनों के इंजन को ठंडा रखना
70) रेफ्रिजरेटर ;:: विशेषतः खाद्य पदार्थों को ठंडा रखना
71) राडार → वायुयान की स्थिति ज्ञात करना
72) माइक्रोमीटर → अति लघु दूरियां नापना
73) मेगाफोन → ध्वनि को दूरस्थ स्थानों पर ले जाना
74) बैटरी → विद्युत् उर्जा का संग्रहण
75) बैरोमीटर → वायुदाब का मापन

सामान्य विज्ञान प्रश्न

1. SI पद्धति में लेंस की शक्ति की इकाई क्या है? – डायोप्टर
2. एक स्वस्थ मनुष्य के शरीर का ताप होता है? – 37° सेल्सियस
3. ध्वनि तरंगें किसके कारण प्रतिध्वनि उत्पन्न करती हैं? – परावर्तन
4. प्रकाश का रंग निश्चित किया जाता है? – तरंगदैर्ध्य द्वारा
5. फैराडे का नियम किस प्रक्रिया से सम्बन्धित है? – इलेक्ट्रोलाइसिस
6. लोहा का क्यूरी ताप होता है? – 780°C
7. पहले तापायनिक बल्ब का आविष्कार किसने किया था? – जे. ए. फ्लेमिंग ने
8. टेलीविजन का आविष्कार किसने किया था? – जे. एल. बेयर्ड
9. किसी द्रव में एक कोलॉइडी तन्त्र एक द्रव में परिक्षेपित करने पर कहलाता है? – विलय (सॉल)
10. परमाणवीय नाभिक किसने खोजा था? – रदरफोर्ड
11. सूर्य से ऊर्जा उत्सर्जित होती है? – नाभिकीय संलयन से
12. उदासीनीकरण क्रिया में बनता है? – लवण तथा जल
13. सभी गैसों आयतन प्राप्त करते हैं जब तापक्रम है? – -273°C
14. यदि किसी क्रिया में कोई उत्पाद उत्प्रेरक का कार्य करता है, तो उसे कहते हैं? – स्व-उत्प्रेरक
15. प्रत्येक आवर्त का प्रथम सदस्य होता है? – एक क्षार धातु
16. नीला थोथा (Blue Vitriol) का रासायनिक सूत्र है? – $CuSO_4 . 5H_2O$
17. वायु में किसकी अधिकता होने पर पेड़ों की पत्तियाँ

काली होकर गिर जाती है? – SO2

18. शीरा अति उत्तम कच्चा माल है? – ऐसीटिक अम्ल के लिए

19. तितलियों का अध्ययन कहलाता है? – लैपीडेटेरियोलॉजी

20. 'नेचुरल सलेक्शन' का सिद्धान्त किसने बनाया? – डार्विन

21. दाँत का शिखर किसका बना होता है? – इनमेल

22. आनुवंशिकता के जनक कहे जाते हैं? – मेंडल

23. विकास की प्रक्रिया में मनुष्य का निकटतम प्राणी है? – बन्दर

24. मलेरिया रोग का कौन-सा वाहक (Vector) है? – मादा ऐनोफिलिज

25. निषेचन की क्रिया कहाँ होती है? – अण्डवाहिनी में

26. विटानिम E का रासायनिक नाम है? – टोकोफेरॉल

27. एग्रोस्टोलॉजी (Agrostology) में अध्ययन होता है? – घासों का

28. एण्टीबायोटिक्स अधिकांशतया प्राप्त होते है? – जीवाणुओं से

29. नाशपाती (Pear) का कौन-सा भाग खाया जाता है? – गूदेदार पुष्पासन

30. नर-पुष्प और मादा दोनों को जन्म देने वाला पादप कहलाता है? – उभयलिंगाश्रयी

31. बैंगन किस कुल का पौधा है? – सोलेनेसी

32. फल पकाने वाला हार्मोन है? – इथीलिन

33. चाय में लाल रस्ट रोग किसके कारण होता है? – हरे शैवाल

34. पादपों में बना खाद्य पदार्थ पौधे के विभिन्न अंगों में किसके द्वारा पहुँचता है? – फ्लोएम

35. जीन्स (Genes) बने होते हैं? – DNA के

36. कोशिका को एक निश्चित रूप प्रदान करती है? – कोशिक भित्ति

37. जैविक वातावरण के दो घटक हैं? – पादप एवं जन्तु

38. महान् वैज्ञानिक आर्किमिडीज किस देश से सम्बन्धित थे? – जर्मनी

39. विद्युत् केतली में पानी गर्म होता है? – संवहन के कारण

40. ध्वनि के वेग का मान सबसे कम होता है? – गैस में

41. यदि किसी ऐनक के लेन्स का पावर +2 डायोप्टर हो, तो इसके फोकस की दूरी होगी? – 50 सेमी

42. समान आवेशों में होता है? – विकर्षण

43. विषुवत् रेखा पर नति कोण का मान होता है? – 0°

44. क्यूरी किसकी इकाई का नाम है? – रेडियोऐक्टिवधर्मिता

45. दूरबनी का आविष्कार किया था? – गैलीलियो ने

46. किसी तत्त्व के रासायनिक गुण कौन तय करता है? – इलेक्ट्रॉनों की संख्या

47. अनिश्चितता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया? – हाइजेनबर्ग

48. पृथ्वी की आयु का आकलन किया जाता है? – यूरेनियम डेटिंग से

49. सोडियम क्लोराइड में होता है? – वैद्युत् संयोजक बंधन

50. अमोनियम क्लोराइड का जलीय विलयन होता है? – क्षारीय

51. उत्प्रेरक (Catalyst) की खोज किसने की? – बजीलियस

52. गोबर गैस में मुख्यतक्र होता है? – मिथेन

53. आधुनिक आवर्त नियम के प्रवर्तक हैं? – मोसले

54. हाइड्रोलिथ (Hydrolith) का अणु सूत्र होता है? – CaH2

55. फॉस्फोरस का सबसे स्थायी अपरूप है? – लाल फॉस्फोरस

56. प्राकृतिक रबड़ एक बहुलक है? – आइसोप्रीन का

57. मधुमक्खियों का पालना कहलाता है? – एपीकल्चर

58. बायोलॉजी के जन्मदाता के रूप में कौन जाने जाते हैं? – अरस्तू

59. ऊँट का कूबड़ किस ऊतक का बना होता है? – वसामय ऊतक का

60. मनुष्य में द्विगुणित क्रोमोसोस की संख्या होती है? – 23

61. 'दि ऑरिजिन ऑफ स्पीशिज' नामक पुस्तक लिखी गई है? – डार्विन द्वारा

62. मलेरिया बुखार पैदा करने वाला प्रोटोजोआ है? – प्लाज्मोडियम

63. प्रतिवर्ती क्रियाओं का नियंत्रण केन्द्र कहाँ पर है? – कशेरूक रज्जू में

64. विटामिन D का रासायनिक नाम है? – कैल्सिफेरॉल

65. जन्तु विज्ञान (Zoology) के जनक कहलाते हैं? – अरस्तू

66. जीवाणुओं में अभाव होता है? – माइटोकॉण्ड्रिया का

67. नारियल का खाने योग्य भाग होता है? – भ्रूणपोष

68. वर्तिका और वर्तिकाग्र उपयोगी उत्पाद होते हैं? – केसर में
69. प्रकाश संश्लेषण में पर्णहरित की भूमिका है? – प्रकाश का अवशोषण
70. पादप रोगों का सबसे उत्तरदायी कारक कौन है? – फफूंदी
71. अंतःप्रद्रव्य जालक की खोज की? – पोर्टर ने
72. किसी श्रृंखला में प्राथमिक उपभोक्ता होते हैं? – शाकाहारी
73. न्यूटन की गति का प्रथम नियम क्या कहलाता है? – जड़त्व का नियम
74. जल का क्वथनांक (Boiling Point)? – 100°C होता है
75. ध्वनि तरंगें नहीं चल सकतीं? – निर्वात में
76. दाढ़ी बनाने के लिये काम में लेते हैं? – अवतल दर्पण
77. तड़ित चालक बनाये जाते हैं? – ताँबे के
78. पृथ्वी का चुम्बकीय क्षेत्र लगभग कितना है? – 1 गॉस
79. X-किरणें किसको पार नहीं कर सकतीं? – अस्थि
80. रेक्टिफायर का प्रयोग किया जाता है? – AC को DC में बदलने के लिये
81. नाभिक के धनावेशित होने की खोज की थी? – रदरफोर्ड
82. रेडियोसक्रियता किसका गुण है? – नाभिक का
83. नीले लिटमस पत्र को लाल कर देता है? – अम्ल
84. रॉकेट की चलाने में प्रयुक्त ईंधन कहलाते हैं? – प्रणोदक
85. आवर्त सारणी का लम्बा रूप निर्भर करता है – परमाणु संख्या पर
86. मोती (Pearl) मुख्य रूप से बना होता है? – कैल्सियम कार्बोनेट
87. तत्त्व जो उर्वरक में नहीं पाया जाता है? – क्लोरीन
88. इथिलीन का IUPAC नाम है? – इथीन
89. जनसंख्या का अध्ययन कहलाता है? – डेमोग्राफी
90. आधुनिक ऐन्टीसेप्टिक सर्जरी की जनक कौन है? – लिस्टर
91. मनुष्य के शरीर में सबसे लम्बी कोशिका होती है? – तंत्रिका कोशिका
92. कोशिका में पाया जाने वाला आनुवंशिक पदार्थ है? – DNA
93. मेढ़क में फर्टीलाइजेशन की प्रकृति होती है? – बाह्य
94. मानव त्वच का रंग किसके कारण बनता है? – मेलानिन से
95. मानव शरीर रचना के सन्दर्भ में एण्टीबॉडीज होते है? – प्रोटीन्स
96. जीवाश्म वनस्पति विज्ञान में अध्ययन किया जाता है? – जीवाश्मों का
97. संसार के सबसे लम्बे पौधे सम्बन्धित है? – जिम्नोस्पर्म से
98. किस पौधे का फल भूमि के नीचे पाया जाता है? – मंगूफली
99. फलों के मीठे स्वाद का कारण है? – फ्रक्टोस
100. पत्तियों की हरिमहीनता किसकी कमी से होता है? – Mg

समसामयिकी(करेंट अफेयर्स)

राष्ट्रीय

- राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग ने केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री थावर चंद गहलोत को वर्ष 2014 - 2015 की अपनी वार्षिक रिपोर्ट सौंपी हैं। अधिकारों के संरक्षण, सुनिश्चित जोखिम भत्ता, प्रभावी वित्तपोषण योजनाओं के क्रियान्वयन तथा सफाई कर्मचारियों के पुनर्वास के लिए निश्चित योजनाएं बनायीं जाएं।
- केंद्र सरकार की ओर से केंद्रीय गृह मंत्रालय ने 'ऑपरेशन स्माइल-द्वितीय' देश भर में शुरू करने की 14 दिसंबर 2015 को घोषणा की। इसके तहत 'ऑपरेशन स्माइल-द्वितीय' देश भर में 01 जनवरी 2016 से प्रारंभ किया जाएगा। यह ऑपरेशन स्माइल' का दूसरा चरण होगा। केंद्रीय गृह मंत्रालय के अनुसार, लापता बच्चों के बचाव/पुनर्वास से जुड़े पिछले

अभियान के बाद आगे की पहल के रूप में 'ऑपरेशन स्माइल-द्वितीय' का शुभारंभ किया जा रहा है, जिसे देश भर में शुरू किया जाएगा।

- पंजाब सरकार ने बीटा नवीकरणीय, नोवोजाय्म्स एवं सीवीसी इंडिया इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं| इसका उद्देश्य राज्य में 950 करोड़ रुपये की लागत से बायोएथेनॉल रिफाइनरी स्थापित करना है|
- विकलांगो का पहला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टीवल नई दिल्ली में 1 से 3 दिसम्बर 2015 के बीच आयोजित होगा। इसकी घोषणा सामाजिक न्याय व उत्थान मंत्रालय ने 2 नवंबर को की थी।
- 11वॉ राष्ट्रीय जनजातीय मेला 'आदिशिल्प - 2015' नई दिल्ली में आयोजित हो रहा हैं। इसका शुभारम्भ जनजातीय मंत्री जुएल उरांव ने किया। मेले के इस सत्र का आयोजन जनजातीय फेडरेशन व भारतीय विकास लिमिटेड द्वारा किया जा रहा हैं। देश भर में करीब 90 आदिवासी कलाकार इसमें भाग लेंगे।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वर्ण योजनाओं का शुभारंभ किया है| इसके तहत प्रधानमंत्री ने गोल्ड मोनेटाइजेशन, गोल्ड सोवरीन बॉन्ड, गोल्ड कॉइन और गोल्ड बुलियन योजनाएं लॉन्च की है|

  गोल्ड मोनेटाइजेशन योजना के तहत जमा की जाने वाली राशि की न्यूनतम कीमत 995 शुद्धता वाले 30 सोने के मूल्य के बराबर होगी, जबकि डिपोजिट की अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं की गई है| बैंकों द्वारा जमा किए गए सोने के लिए 995 शुद्धता के आधार पर सर्टिफिकेट जारी किया जाएगा| निर्धारित बैंक न्यूनतम एक से तीन वर्ष की अवधि के लिए सोना जमा करेंगे|

  गोल्ड मोनेटाइजेशन योजना मौजूदा गोल्ड डिपोजिट योजना की जगह लागू की जाएगी| हालांकि गोल्ड डिपोजिट योजना के तहत जमा राशि अवधि पूरी होने तक या जमाकर्ता द्वारा अपनी पूरी जमा राशि निकाल लेने तक जारी रहेगी|
- देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध एवं अनुसंधान कार्यों का रोड मैप तैयार करने और इसे जनता से जोड़ने के लिए राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इंप्रिंट इंडिया योजना का शुभारम्भ किया है| 'इम्प्रिंट इंडिया' भारत के लिए प्रासंगिक दस तकनीकी क्षेत्र की प्रमुख इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी चुनौतियों से निपटने के लिए अनुसंधान का खाका विकसित करने हेतु आईआईटी और आईआईएससी की संयुक्त पहल है|
- वित्त मंत्रालय ने उन सभी सेवाओं पर 0.5 फीसदी स्वच्छ भारत उपकर लगाने का निर्णय किया जिन पर वर्तमान में सेवा कर अदा किया जाता है| यह निर्णय 15 नवम्बर 2015 से प्रभावी होगा| सरकारी विज्ञप्ति के अनुसार, इस उपकर से प्राप्त राशि का उपयोग विशिष्ट रूप से स्वच्छ भारत पहल के लिए किया जाएगा| इससे कर योग्य सेवाओं पर प्रत्येक सौ रुपये पर केवल 50 पैसे का कर अदा करना होगा| सरकार ने बजट में सेवा कर से 2.09 लाख करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य रखा है| यह 4,000 करोड़ रुपये का उपकर इसके अतिरिक्त होगा|
- 'योग शोध एवं इसके उपयोग की सीमाएं' पर 21वां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन (इंकोफायरा) 3 से 7 जनवरी 2016 के बीच प्रशांति कुटिरम, बंगलुरु आयोजित किया जाएगा| यह सम्मेलन विवेकानंद योग अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित किया जाएगा| 21वां इंकोफायरा पारंपरिक और आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था को एक साथ लाएगा| इस सम्मेलन का विषय 'समेकित स्वास्थ्य व्यवस्था में योग' है| इस सम्मेलन का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेगे|
- केंद्रीय विद्यालयों (केवी) में अतिरिक्त भाषा के रूप में अब जर्मन भी पढ़ाई जाएगी। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय और जर्मनी के संघीय विदेश मंत्रालय के बीच इस आशय के संयुक्त घोषणा पत्र को मंजूरी दे दी।
- दिल्ली सरकार ने जन लोकपाल विधेयक को मंजूरी दे दी जिससे अब भ्रष्टाचार विरोधी संस्था की स्थापना का रास्ता साफ हो जाएगा। सरकार ने दावा किया कि जन लोकपाल ठीक उसी तरह का होगा जैसा मशहूर अन्ना आंदोलन के दौरान प्रस्ताव किया गया था। दिल्ली सरकार जल्द ही जन लोकपाल विधेयक विधान सभा में पेश करेगी।
- बिहार विधानसभा चुनाव में महा गठबंधन की ऐतिहासिक जीत के बाद पटना के गांधी मैदान में नीतीश कुमार ने बिहार के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। नीतीश कुमार पांचवी बार बिहार के मुख्यमंत्री बने हैं। उनके बाद आर जे डी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के बेटे तेजस्वी यादव ने शपथ ली।

- ब्रिटेन और तुर्की की पांच दिवसीय यात्रा समाप्त करके प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारत के लिये रवाना हो गए हैं। इस यात्रा के दौरान उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ एकीकृत वैश्विक लड़ाई का आह्वान किया। मोदी ने इस दौरान ब्रिक्स देशों के नेताओं की बैठक में भी हिस्सा लिया। ब्रिक्स की बैठक में उन्होंने आतंकवादियों की वित्त पोषण आपूर्ति और संचार के स्रोतों को खत्म करने के लिए प्रभावकारी कदम उठाने पर जोर दिया। तुर्की से पहले वे ब्रिटेन गए थे, जहां उन्होंने प्रधानमंत्री डेविड कैमरन से द्विपक्षीय वार्ता की।
- केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री श्रीमती हरसिमरत कौर बादल ने तेलंगाना के निजामाबाद जिले के नंदीपट मंडल में पहले मेगा फूड पार्क की आधारशिला रखी। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय ने तेलंगाना के खम्मम एवं महबूब नगर जिलों में दो और मेगा फूड पार्क की स्थापना को मंजूरी दी है।
- इंटेल इंडिया ने ग्रामीण भारत के डिजिटलीकरण की रूपरेखा तैयार करने के उद्देश्य से सरकार के साथ काम करने के लिए 'एक कदम उन्नति की ओर' नाम से एक पहल करने की घोषणा की है।
- मानव संसाधन मंत्रालय (एचआरडी) ने 13 सदस्यों वाली एक विशेषज्ञ समिति बनाई है। स्मृति ईरानी की अगुवाई वाले मंत्रालय ने समिति से कहा है कि वह ऐसे उपाय सुझाए जिनके जरिए संस्कृत को गणित, भौतिकी, रसायन, मेडिकल साइंस और कानून जैसे विषयों के साथ पढ़ाया जा सके। इसे संस्कृत भाषा को लोकप्रिय बनाने के उपाय सुझाने का काम दिया गया है। समिति का प्रमुख पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एन. गोपाल स्वामी को बनाया गया है। वह इन दिनों तिरुपति में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति हैं।
- उत्तर प्रदेश की महत्वाकांक्षी योजना स्वच्छ यूपी - हरित यूपी को गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल किया गया हैं। इस योजना में एक दिन में आठ घंटो के अन्दर 10 लाख वृक्ष लगाये गये थे।
- आपदा प्रबंधन पर द्वितीय विश्व सम्मलेन (डब्ल्यूसीडीएम) 22 नवंबर 2015, को विशाखापत्तनम आंध्र प्रदेश में संपन्न हो गया।
- राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे की मौजूदगी में 'रिसर्जेंट राजस्थान पार्टनरशिप समिट' के तहत राजस्थान और दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया के बीच 'सिस्टर-स्टेट रिलेशनशिप' के महत्वपूर्ण एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। उल्लेखनीय है कि ऑस्ट्रेलिया रिसर्जेंट राजस्थान पार्टनरशिप समिट-2015 का पार्टनर कंट्री है।
- दिल्ली यातायात पुलिस द्वारा सड़क सुरक्षा पर तीन सदस्यीय समिति की सिफारिशों को लागू करने के बाद देश में दिल्ली ऐसा पहला राज्य बन गया है।
- केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, राजस्थान स्मार्ट सिटी प्रस्ताव पेश करने वाला भारत का पहला राज्य है
- सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर में 2000 सीसी से ज्यादा की डीजल गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन पर फिलहाल बैन लगा दिया है।
- पर्यटन एवं संस्कृति राज्यं मंत्री (स्वसतंत्र प्रभार) महेश शर्मा ने 'भारत-लाओस: अंतर-सांस्कृतिक संबंध' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन किया है। , नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया गया।
- भारत के दो शहरों वाराणसी एवं जयपुर को संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा पहली बार क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क में शामिल किया गया है। वाराणसी को सिटी और म्यूजिक (संगीत) और जयपुर को सिटी ऑफ़ क्राफ्ट एवं फोक आर्ट (शिल्प कला एवं लोक कला) श्रेणी में शामिल किया गया है।
- भारत दौरे पर आए जापानी पीएम शिंजो अबे और पीएम मोदी के बीच मुंबई और अहमदाबाद के बीच बुलेट ट्रेन चलाने के लिए दोनों देशों के बीच समझौता हुआ है
- सरकारी एयरपोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (AAI) ने सिंगापुर के चांगी एयरपोर्ट इंटरनैशनल जयपुर और अहमदाबाद के एयरपोर्ट्स को मैनेज और ऑपरेट करने के लिए किया गया है।

- महाराष्ट्र देश का पहला ऐसा राज्य बन गया है जिसके विधान मंडल सदस्य प्रश्नों को ऑनलाइन माध्यम से पूछ सकते हैं।
- विश्व में स्वच्छ ऊर्जा क्रांति को गति देने के लिए "मिशन इनोवेशन" का शुभारंभ किया गया है। मिशन का शुभारंभ पेरिस ले बर्जत, फ्रांस में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन 2015 सीओपी- 21 (COP-21) के मंच से भारत सहित 20 प्रतिभागी देशों द्वारा शुरू किया गया है।

- भारतीय रेल ने दिल्ली-लख्ननऊ तथा दिल्ली-जम्मु मार्ग के प्रतीक्षारत यात्रियों के लिये 'विकल्प' एप्प लांच किया
- दिल्ली मेट्रो ISO प्रमाणित होने वाला देश का पहला रेल्वे बना
- नई शिक्षा नीति बनाने के लिये मानव संसाधन मंत्रालय ने टीएसआर सुब्रमण्यम कमेटी का गठन किया
- विकलांगो का पहला फिल्म फेस्टिवल नई दिल्ली में आयोजित
- नेत्रहीनों का पहला रेल्वे स्टेशन मैसूर में स्थापित
- 7 वां परमाणु ऊर्जा कॉन्क्लेव नई दिल्ली में आयोजित
- जम्मु कश्मीर के चंहुमुखी विकास के लिये प्रधानमंत्री ने 80,000 के पैकेज की घोषणा की
- सरकार ने सभी सेवाओं पर 0.50 फीसदी स्वच्छ भारत कर लगाया
- आर्थिक सहयोग व विकास संगठन के अनुसार भारत चालु वित्त वर्ष में 7.2 फीसदी की दर से वृद्धि करेगा
- असम,छतिसगढ ओडिषा पश्चिम बंगाल व मध्य प्रदेश की सडकों के निर्माण हेतू भारत व एशियाई विकास बैंक के बीच 273 मिलियन डॉलर का करार
- 'लिंग समानता पर वैश्विक कॉफ्रेंस' केरल में आयोजित
- नरेन्द्र मोदी ने ईंगलैंड में बसवेश्वर के पुतले तथा अम्बेडकर मेमोरियल का उदघाटन किया
- भारत-रूस संयुक्त सैन्य अभ्यास 'इन्द्र' बीकानेर में संपन्न
- 35 वां अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला दिल्ली में आयोजित
- बिहार में 1 अप्रैल 2016 से शराबबन्दी
- 'आधार' बना सर्वाधिक संख्या वाला पहचान-पत्र। संख्या लगभग 92 करोड़।
- 'ट्राई' ने '112' को 'एकमात्र आपात नम्बर' घोषित किया।
- रेल मंत्रालय ने 'नॉलेज पोर्टल' की शुरूआत की।
- भारत एवं श्रीलंका का संयुक्त सैन्याभ्यास 'मित्र शक्ति' पुणे में सितंबर माह में संपन्न।
- 800 शीर्ष संस्थाओं के 'टाइम्स' सूची में 17 भारतीय संस्थाएँ शामिल।
- भारतीय रिजर्व बैंक ने रेपो दर में 0.50 आधार अंको की कटौती की।
- भारत के 500 रेलवे स्टेशनों पर वाई-फाई उपलब्ध कराएगा गूगल।
- नाल्को द्वारा नए परियोजनाओं में 65000 करोड़ का निवेश किया जाएगा।
- चुनाव आयोग ने 'नोटा' के लिए जारी किए संकेत।
- ओ.एन.जी.सी. व आइल इंडिया से लिए गए 60 छोटे व सीमान्त तेल क्षेत्रों की नीलामी निजी कंपनियों को करेगी भारत सरकार।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र के उच्च स्तरीय शांति स्थापना सम्मेलन में भाग लिया।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने की अमेरीका में G-4 सम्मेलन की मेजबानी। अन्य मेजबानों में शामिल थे जर्मनी की चांसलर एंजेला मार्केल, जापान के प्रधानमंत्री शिंजो अबे एवं ब्राजील के राष्ट्रपति डिलमा राउसेफ।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सिलिकन वैली में विभिन्न कंपनियो के 350 सी.ई.ओ से मुलाकात की जिसमें गूगल फेसबुक व माइक्रोसॉफ्ट के सी.ई.ओ. भी शामिल थे।
- मणिपुर के राज्यपाल सैयद अहमद का मुम्बई में निधन।
- नितिन गडकरी ने 'हरित राजमार्ग नीति 2015' की घोषणा की।
- 'नीति आयोग' की मुख्यमंत्रियों की समिति की अध्यक्षता आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चन्द्र बाबू नायडु द्वारा की गई ।
- गुड़गॉव में प्रत्येक मंगलवार होगा कार-मुक्त दिवस।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'इण्टीग्रेटेड पावर डेवलपमेंट स्कीम' का शुभारंभ किया। इसका उद्देश्य भारत के प्रत्येक घर में निर्बाध बिजली आपूर्ति (24×7) सुनिश्चित करना है।
- खनन-कार्य से प्रभावित लोगों के कल्याण के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री खनिज-क्षेत्र कल्याण योजना का शुभारम्भ किया।
- पश्चिम बंगाल सरकार ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से संबंधित दस्तावेजों को सार्वजनिक किया।
- भारतीय रेलवे ने डिब्रूगढ़ राजधानी में 'हाइब्रिड वैक्यूम टॉयलेट' लगाकर उसका परीक्षण किया।
- नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एवं लाइब्रेरी से महेश रंगराजन का इस्तीफा।
- गोदावरी नदी का पानी विजयवाड़ा के निकट इब्राहिमपट्टनम नामक गॉव में कृष्णा नदी में छोड़ा गया जो कि दोनों नदियों के जुड़ाव को दर्शाता है।
- तमिलनाडु ने घोषणा की कि सभी उच्च इमारतों के पास सौर ऊर्जा उत्पादन सुविधा हो।
- होरमुसजी एन.कामा भारतीय प्रेस ट्रस्ट के नए चेयरमैन बने।
- हरियाणा ने गुटखा, पान-मसाला और अन्य तम्बाकू उत्पादो की बिक्री पर प्रतिबंध लगाया।
- पश्चिम-मध्य रेलवे बना मानवरहित रेलवे क्रासिंग समाप्त करने वाला पहला रेलवे मंडल।
- वदाक्कुन्नाथन मंदिर को संरक्षित करने के लिए भारत ने जीता यूनेस्कों एक्सीलेंस अवार्ड 2015
- पीएम नरेंद्र मोदी ने 1 जुलाई 2015 को अपने सबसे महत्वाकांक्षी योजना 'डिजिटल इंडिया' को लॉन्च किया
- केंद्र सरकार ने शिमला हेतु विश्व बैंक के पेय जल परियोजना के वित्त पोषण को मंजूरी दी है| यह परियोजना कुल 643 करोड़ रूपये की है| इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य सबको स्वच्छ पेय जल उपलब्द कराना है|इस परियोजना के लिए प्रदेश को विश्व बैंक से 514 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता मिलेगी
- केंद्रीय रेलवे मंत्री सुरेश प्रभु ने मुंबई के चार रेलवे स्टेशनों छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (सीएसटी), दादर, कुर्ला तथा लोकमान्य तिलक टर्मिनस (एलटीटी) पर एकीकृत सुरक्षा प्रणाली (आईएसएस) का उद्घाटन किया| आईएसएस का उद्देश्य रेलवे परिसर में सुरक्षा, सुविधाओं में सुधार तथा उन्हें आतंकी हमलों से बचाना भी उद्देश्य है|
- सार्वजनिक क्षेत्र की बिजली उपकरण बनाने वाली कंपनी भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल) ने सूडान में 500 मेगावाट क्षमता का बिजली प्लांट की शुरुआत कर दी है।
- हरियाणा सरकार ने 1 जुलाई 2015 को सक्रिय भागीदारी के साथ चरणबद्ध तरीके से ग्रामीण घरेलू उपभोक्ताओं को 24 घंटे निर्बाध विद्युत आपूर्ति प्रदान करने के उद्देश्य से 'म्हारा गांव-जगमग गांव' योजना का आरंभ किया|
- पंजाब एवं हरियाणा के राज्यपाल तथा केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ के प्रशासक कप्तान सिंह सोलंकी ने 1 जुलाई 2015 को चंडीगढ़ शहर के लिए औद्योगिक नीति–2015 जारी की|
- गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने मध्यप्रदेश में 'वर्ल्ड हैंड वाशिंग डे' एक साथ सबसे अधिक लोगों के हाथ धोने से संबंधित बनाए गए रिकॉर्ड को मान्यता दे दी है।
- सार्वजनिक क्षेत्र की दूरसंचार कंपनी भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) ने अपने उपभोक्ताओं के लिए दो नई सेवाओं बीएसएनएल बज और स्पीडपे की शुरुआत की है।

- लंबी प्रतीक्षा के बाद सरकार ने हाल ही में नया इनकम टैक्स रिटर्न फॉर्म नोटिफाई कर दिया है। इसके तहत अब व्यक्तिगत और अविभाजित हिंदू परिवार वित्त वर्ष 2014-15 के तहत आकलन वर्ष 2015-16 के लिए आयकर रिटर्न फाइल कर सकते हैं।
- उत्तर प्रदेश व्हीकल ट्रैकिंग सिस्टम लागू करने वाला पहला राज्य बना है
- विश्व बैंक ने भारत के ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना कार्य्रकम (मनरेगा) को दुनिया का सबसे बड़ा लोक निर्माण कार्य्रकम आंका गया है। यह कार्य्रकम देश की लगभग 15 प्रतिशत जनसंख्या को सामाजिक सुरक्षा दायरा उपलब्ध कराता है
- भारत और उज़्बेकिस्तान ने दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के लिए तीन समझौतों पर ताशकंद में हस्ताक्षर किए हैं
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा देश भर के 19 कॉलेजों को विशेष धरोहर का दर्जा प्रदान किया गया है| इनमें मुंबई का सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज, पुणे का फर्ग्युसन कॉलेज तथा अन्य कॉलेज शामिल हैं
- कुछ चुनिंदा एशियाई देशों द्वारा बनाए गए क्षेत्रीय संगठन एससीओ का भारत अब पूर्ण सदस्य बन गया है। भारत के साथ पाकिस्तान को भी शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) का सदस्य बनाया गया है।
- भारत के पूर्व राष्ट्रपति स्व. डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम ने 'राष्ट्रीय आविष्कार अभियान' (आरएए) का शुभारंभ किया, इस अभियान का उद्देश्य बच्चों में विज्ञान एवं गणित के लिए उत्सुकता, सृजनता एवं प्रेम की भावना का समावेश करना है
- केंद्रीय महिला और बाल विकास मंत्रालय ने फेसबुक के साथ भारत में सफलता हासिल करने वाली 100 महिलाओं की पहचान के लिए "#100महिलाएं पहल" शुरू की है
- विश्व के प्राचीनतम शहर तथा भारतीय कला व संस्कृति के केन्द्रबिन्दु माने जाने वाले वाराणसी शहर को यूनेस्को की "फील्ड ऑफ एक्सीलेंस"योजना के तहत "सिटी ऑफ म्यूज़िक" घोषित किया गया है।
- शहरी विकास मंत्रालय ने पंजाब स्थित अमृतसर से देश के 12 शहरों के लिए राष्ट्रीय विरासत विकास और संवर्धन योजना (हृदय, HRIDAY) का शुभारंभ किया है, इस योजना से देश में चयनित 12 शहरों की सांस्कृतिक धरोहर को फिर से जीवंत करने का प्रयास किया जायेगा
- हरियाणा सरकार ने बॉलीवुड ऐक्ट्रेस परिणीति चोपड़ा को 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान की ब्रैंड एंबेसडर नियुक्त किया है
- महाराष्ट्र मंत्रिमंडल ने श्यामाप्रसाद मुखर्जी जन वन विकास योजना को मंजूरी प्रदान की है
- नेस्ले ने भारत के प्रबंध निदेशक एटिन्न बेनेट को स्विट्ज़रलैंड, मुख्य कार्यलय में स्थानांतरित किया जा रहा है
- केंद्र सरकार ने अखिल भारतीय खेल परिषद का गठन किया| यह परिषद युवा मामले और खेल मंत्रालय के सलाहकार निकाय रूप में कार्य करेगी
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पटना में विभिन्न अन्य विकास परियोजनाओं के साथ-साथ दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY) का शुभारंभ किया है
- सम्पूर्ण विश्व में 28 जुलाई 2015 को विश्व हेपेटाइटिस दिवस मनाया गया| इस दिवस का लक्ष्य वायरल हैपेटाइटिस के बारे में लोगो को जागरूक करना है, वर्ष 2015 के लिए इस दिवस का विषय है - " प्रिवेंट हेपेटाइटिस इट्स अप टू यू "
- काफी विरोध और गहमागहमी के बाद आखिरकार गुजरात में स्थानीय निकाय चुनाव में वोट देना अनिवार्य हो ही गया। राज्य के विवादास्पद गुजरात स्थानीय प्राधिकरण कानून (संशोधन), ऐक्ट 2009 (2014) के तहत यह प्रावधान लाया गया है
- मुंबई में वर्ष 1993 के श्रृंखलाबद्ध बम धमाकों में मृत्युदंड प्राप्त करने वाले एकमात्र दोषी याकूब मेमन को 30 जुलाई 2015 को नागपुर सेंट्रल जेल में फांसी दी गई

- विश्व के सबसे बड़े पशु बलि महोत्सव के रूप से विख्यात नेपाल के स्थानीय देवी गढ़ीमाई मंदिर ने एक ऐतिहासिक घोषणा की जिसके अनुसार इस महोत्सव में अब पशु बलि पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। प्रत्येक 5 वर्ष के अंतराल पर होने वाला "गढ़ीमाई महोत्सव" नेपाल की को समर्पित गढ़ीमाई मंदिर में आयोजित होता है
- कोच्ची बीजिंग में स्थित वर्ल्ड टूरिज्म फैडरेशन काउंसिल का सदस्य बनने वाला पहला भारतीय शहर बना
- बांग्लादेश घरेलू सौर प्रणाली के लिये सन्युक्त राष्ट्र से धन पाने वाला पहला देश बना
- कोच्ची अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट सौर ऊर्जा से संचालित होने वाला देश का पहला एयरपोर्ट बना
- स्वच्छ भारत रैंकिंग में देश के 476 शहरों में मैसूर प्रथम
- महाराष्ट्र सरकार ने अमिताभ बच्चन व सचिन तेन्दुलकर को 'टाईगर एम्बेसेडर' बनाया
- 'कोर्ट' ऑस्कर पुरस्कारों में भारत की औपचारिक फिल्म के रूप में भेजी जायेगी
- केन्द्र सरकार की प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (पहल) योजना को गिनीज बुक ने प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण की सबसे बडी योजना माना
- सन्युक्त राष्ट्र के अनुसार 2022 तक भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जायेगा

अंतर्राष्ट्रीय

- सउदी अरब के इतिहास में सरकारी स्थानीय निकाय चुनावों के दौरान पहली बार महिलाओं के मतदान देने और चुनाव में खड़े होने पर 20 महिला उम्मीदवारों ने चुनावों में जीत दर्ज की है। चुनाव में विजयी रहने वाली महिलाएं सउदी अरब के दूसरे सबसे बड़े शहर जेद्दा से लेकर छोटे कस्बों एवं देश के विभिन्न हिस्सों की निवासी है।

- ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से निपटने के लिए फ्रांस की राजधानी पेरिस में 195 देशों के बीच क्लाइमेट समझौता का ऐलान हो गया है। ये पहली बार है जब जलवायु परिवर्तन पर समझौते में कार्बन उत्सर्जन में कटौती पर सभी देशों में सहमति बनी है। समझौते में दुनियाभर के टेम्परेचर में वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से कम रखने का टारगेट फिक्स किया गया है।
- दक्षिण पूर्व एशिया के सबसे बड़ा देश म्यांमार ने म्यांमार के शान राज्य में देश के पहले यूनेस्को बायोस्फीयर रिजर्व 'इन्ले झील' का शुभारंभ किया हैं। ज्ञात हो इन्ले झील को वर्ष 2015 के जून माह में पेरिस में 'यूनेस्को बायोस्फीयर रिजर्व' के रूप में नामित किया गया था।
- ब्राजील की अर्थव्यवस्था में अप्रैल-जून की तुलना में जुलाई-सितंबर के दौरान 1.7 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी है। इस संबंध में 1 दिसम्बर 2015 को सरकार की ओर से घोषणा की गयी। जनवरी 2015 से अब तक यह ब्राज़ील की अर्थव्यवथा में लगातार तीसरी गिरावट है जो कि वर्ष 1930 से अब तक की सबसे अधिक दीर्घावधि मंदी है।
- अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) ने ईरान परमाणु कार्यक्रम पर की जा रही 12 वर्ष लम्बी जांच को समाप्त करने की घोषणा की है। एजेंसी को यह आशंका थी की ईरान परमाणु कार्यक्रम का प्रयोग रणनीतिक मामलों के लिए कर रहा है। जाँच समाप्ति के सन्दर्भ में आईएईए के गवर्नर्स बोर्ड ने एक प्रस्ताव पारित किया है। इसके साथ ही एजेंसी ने अधिकृत संस्थाओं को ईरान पर लचर निगरानी के निर्देश भी दिए हैं।

  इससे पूर्व वर्ष 2015 के जुलाई माह में ईरान और पी 5+1 राष्ट्रों के मध्य एक समझौता हुआ था जिसके तहत इरान पर लगाए गए विभिन्न तरह के प्रतिबंधों को समाप्त कर दिया गया था।
- मालदीव के राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन ने देश की सुरक्षा को खतरा बताते हुए 30 दिनों के लिए आपातकाल की घोषणा की है| मालदीव के संविधान

के अनुच्छेद 253 में दिए गये अधिकार के तहत राष्ट्रपति देश में आपातकाल घोषित कर सकता है तथा इससे राष्ट्रपति कुछ नागरिक अधिकार भी रद्द कर सकता है|

- फोर्ब्स द्वारा जारी दुनिया की सबसे ताकतवर हस्तियों की सूची मेंरूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतीन पहले स्थान पर हैं| जर्मनी की चांसलर एजेंला मर्केल को सूची में दूसरा स्थान दिया गया है| अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा को तीसरे, और पोप फ्रांसिस को चौथे और चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग को पांचवें स्थान पर रखा गया हैं| भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फोर्ब्स पत्रिका की वर्ष 2015 की ताकतवर हस्तियों की सूची में नौवें स्थान पर रखा गया है|

- नवम्बर 2015 के पहले सप्ताह में पंजाबी भाषा को कनाडा की संसद की तीसरी आधिकारिक भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है| हाऊस ऑफ कामंस (कनाडा की संसद) में अक्टूबर 2015 को हुए चुनावों में दक्षिण एशियाई मूल के 23 लोगों ने जीत दर्ज की है| इनमें पंजाबी भाषा बोलने वाले 20 सांसद हैं|
- सिंगापुर को हालिया जारी एक रिपोर्ट ने दुनिया का सबसे स्वस्थ शहर घोषित किया हैं। इसमें भारत 103 वें स्थान पर रहा हैं। इस रिपोर्ट के लिये डाटा संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक व विश्व स्वास्थ्य संगठन से लिया गया हैं।सिंगापुर को कुल 89.45% अंक मिले। इटली दूसरे तथा ऑस्ट्रेलिया तीसरे स्थान पर रहे। इस लिस्ट में एशियाई व यूरोपिय देशों का दबदबा रहा। भारत 21.17% के कुल स्कोर के साथ 103वें स्थान पर रहा। ज्यादातर अफ्रीकी देश लिस्ट में नीचे रहे। स्वाजीलैण्ड लिस्ट में 0.26% के साथ सबसे नीचे रहा।
- मालदीव के राष्ट्रपति अब्दुल्ला यामीन की हत्या का प्रयास करने के आरोप में गिरफ्तार उप राष्ट्रपति अहमद अदीब के खिलाफ संसद के अभूतपूर्व सत्र में महाभियोग चलाया गया।
- तंज़ानिया में पहली महिला उपराष्ट्रपति के रूप में सामिया सुलुहू हसन ने शपथ ग्रहणकी है| उन्होंने नवनिर्वाचित राष्ट्रपति जॉन पोम्बे मागुफुली के साथ देश की आर्थिक राजधानी दार एस सलाम में आयोजित समारोह में शपथ ग्रहण की| चामा चा मपिन्दुज़ी (सीसीएम) पार्टी के उम्मीदवार मागुफुली 29 अक्टूबर 2015 को तंज़ानिया में हुए राष्ट्रपति चुनावों में विजेता घोषित किये गये|
- विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा सिएरा लियॉन को एबोला मुक्त घोषित किया है इसकी ख़ुशी के लिए राजधानी एक कार्निवल में बदल गयी| सभी अपना भावनात्मक समर्थन देने के लिए मुक्त शहर की सड़कों पर जमा हुए|
- सियासी मोर्चे पर बढ़ी जबरदस्त भागीदारी के चलते महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में भारत की वैश्विक रैंकिंग सुधरी है। पिछले वर्ष के 114वें स्थान के मुकाबले इस साल वह 108वें स्थान पर पहुंच गया है। अगर आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य क्षेत्र में भी आशातीत प्रदर्शन हुआ होता तो देश की रैंकिंग में और सुधार देखने को मिलता।
  वैसे लिंग भेद खत्म करने यानी महिला-पुरुष गैर बराबरी समाप्त करने के मामले में आइसलैंड पूरी दुनिया में अव्वल है। नारी सशक्तीकरण को लेकर वह संपूर्ण विश्व में पहले स्थान पर है। इसके बाद नार्वे और फिनलैंड का नंबर है।
- आसिआन नेताओं ने यूरोपिय संघ की तरह के आसियान समुदाय की लांचिग की घोषणा की हैं। इस घोषणा को मलेशियाई प्रधानमंत्री नजीब रज्जाक की अगुवाई में दस देशों के राष्ट्राध्याक्षों ने सहमती प्रदान की
- भारत ने फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वां ओलांद को गणतंत्र दिवस पर समारोह में मुख्य अतिथि बनने का न्योता भेजा है। भारत या फ्रांस की ओर से हालांकि इस संबंध में अभी कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है। पिछले साल 26 जनवरी के मौके पर अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा मुख्य अतिथि थे।
- माली के राष्ट्रपति इब्राहिम बौबाकर केइटा ने राजधानी बमाको स्थित एक होटल में हुये आतंकवादी हमले के

बाद 10 दिन के आपातकाल की घोषणा की है। उन्होंने तीन दिन के राष्ट्रीय शोक की घोषणा भी की है। केईटा ने बताया कि होटल पर हुये हमले में 21 लोगों की मौत हुई है, जबकि सात अन्य घायल हुए हैं। उन्होंने बताया कि मरने वालों में दो आतंकवादी भी शामिल हैं।

- श्रीलंका के राष्ट्रपति मैत्रीपाल श्रीसेन ने मटाले स्थित महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय केंद्र का उद्घाटन किया है। भारतीय उच्चायुक्त वाई के सिन्हा भी इस अवसर पर मौजूद थे। इसका आरंभ महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने एवं मानवता के प्रति उनके विचारों को आदर प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया है।
- अर्जेंटीना में कंज़रवेटिव पार्टी के उम्मीदवार मॉरिसियो माकरी ने राष्ट्रपति चुनाव जीत लिया है। सत्ताधारी पेरोनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार डेनियल सियोली ने हार स्वीकार कर ली है। माकरी को क़रीब 52 फ़ीसदी वोट मिले जबकि सियोली को 48 फ़ीसदी वोट मिले।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) ने 20 नवंबर, 2015 को फ्रांस द्वारा प्रायोजित प्रस्ताव 2249 (2015) को सर्वसम्मति से पारित किया। इस प्रस्ताव के तहत सभी देशों से इस्लामिक स्टेट के आतंकवादियों और अन्य कट्टरपंथी समूहों और उनके हमलों को रोकने के लिए अपने प्रयास दोगुने करने तथा इस संबंध में समन्वित कार्रवाई की अपील की गई। यह प्रस्ताव सॉसे, ट्यूनीशिया, अंकारा और तुर्की में इस साल इस्लामिक स्टेट द्वारा किए गए इन हमलों की और पूर्व में भी हुए 'भयानक आतंकवादी हमलों' की 'बेहद कड़े शब्दों में स्पष्ट रूप से आलोचना करता है
- गोवा मूल के एंटोनियो कोस्टा लंबी जद्दोजहद के बाद पुर्तगाल के प्रधानमंत्री बन गए। वे पुर्तगाल सोशलिस्ट पार्टी के नेता हैं। उन्होंने कम्युनिस्टों, ग्रीन्स और लेफ्ट ब्लॉक के साथ मिलकर 11 दिन पुरानी अल्पसंख्यक सरकार को गिराने में सफलता हासिल कर ली।
- पेरू में भूकंप के झटके महसूस किए गए। अमेरिका के भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण में कहा गया कि रिक्टर पैमाने पर भूकंप की तीव्रता 7.5 मापी गई है।
- भारत और सिंगापुर ने मंगलवार को रणनीतिक साझेदारी पर एक साझा घोषणा पत्र और नौद्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर किए।
- 10वां पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) कुआलालंपुर, मलेशिया में आयोजित किया गया है। वर्ष 2015 के शिखर सम्मेलन का विषय हमारे लोग, हमारा समुदाय, हमारा विजन (Our People, Our Community, Our Vision) था। ऑस्ट्रेलिया, चीन, भारत, जापान, न्यूजीलैंड, कोरिया, रूस और अमेरिका के संयुक्त राज्य अमेरिका के शासनाध्यक्षों ने शिखर सम्मेलन में भाग लिया है।
- जापान ने तानेगासिमा अंतरिक्ष केंद्र (टीएससी) से संशोधित रॉकेट एच-2ए की सहायता से कनाडा की टेलीसैट कंपनी का टेलस्टार 12वी उपग्रह प्रक्षेपित किया है। इसके साथ ही जापान ने राष्ट्रीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के तहत पहले व्यावसायिक उपग्रह का प्रक्षेपण किया है।
- सऊदी अरब ने महिलाओंको वोट देने व चुनाव में हिस्सा लेने का अधिकार दे दिया है| सऊदी अरब में 12 दिसंबर को होने वाले स्थानीय निकाय चुनावों में 900 से अधिक महिलाएं हजारों पुरुषों के साथ खड़ी होंगी|
- जी-20 सम्मेलन अंतिल्या,तुर्की में संपन्न
- नरेन्द्र मोदी ने मलेशिया में स्वामी विवेकानन्द की प्रतिमा का अनावरण किया
- 13 वां आसिआन सम्मेलन कुआलालंपुर में संपन्न
- 2018 का G-20 सम्मेलन नई दिल्ली में
- भारत ने इजराइल व वियतनाम के साथ दोहरे कराधान से बचाव के लिये सन्धि की
- नाटो ने करीब 30 देशों की सैन्य टुकडियों के साथ 'ट्राइडेंट जंकचर' नामक सबसे बडे सैनिक अभ्यास की शुरुआत की
- भारत व लिथुआनिया कृषि सहयोग के लिये राजी
- इस्लामिक स्टेट नामक आतंकी संगठन ने सीरिया के पामरिया में 2000 साल पुरानी इमारत जिसे 'रेगिस्तान का मोती' कहते हैं, को ध्वस्त कर दिया
- जर्मन चांसलर एंजला मार्केल की भारत यात्रा के दौरान उन्होनें भारत के साथ 18 सन्धियों पर हस्ताक्षर किये

- मोदी विश्व के सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में 13 वें स्थान पर रहे
- फॉर्ब्स की 50 सबसे अमीर परिवारों की सूची में 14 भारतीय परिवार शामिल, चीन का ली परिवार प्रथम तो भारत का अम्बानी परिवार तीसरे स्थान पर रहा
- भारत ने हांगकांग के साथ कैदियों के आदान-प्रदान हेतू समझौता किया
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने चालू वित्त वर्ष के लिये वैश्विक वृद्धि दर को 3.3 से घटाकर 3.1 फीसदी कर दिया है,वही भारत की जीडीपी वृद्धि दर भी 7.5 से घटाकर 7.3 फीसदी कर दी है
- चीन ने युआन के वैश्विकरण हेतू अंतर्राष्ट्रीय भुगतान सिस्टम लांच किया
- नाटो हंगरी व स्लोवानिया में 2 मुख्यालय स्थापित करेगा
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व विश्व बैंक की पेरु के लिमा में हुई वार्षिक बैठक में पर्यावरण सुरक्षा हेतू V-20 समूह की स्थापना की गई
- नेपाल में संविधान लागू होने के बाद केपी शर्मा ओली नये प्रधानमंत्री बने
- राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी फिलिस्तीन की यात्रा करने वाले पहले भारतीय राष्ट्रपति बने, फिलिस्तीन को दी पांच मिलियन डॉलर की आर्थिक सहायता , रामल्ला में राष्ट्रपति के नाम पर रखा सडक का नाम
- राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी 65 वर्षों में जॉर्डन की यात्रा करने वाले पहले भारतीय राष्ट्रपति बने
- चीन ने ब्रह्मपुत्र पर पनविद्युत परियोजना शुरु की
- भारत, अमेरीका, जापान के बीच मालाबार नामक सैन्य अभ्यास आयोजित
- विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार 15-29 आयु वर्ग में मृत्यु का सबसे बडा कारण सडक दुर्घटना है
- एक रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान 2025 तक दुनिया का पांचवीं सबसे बडी परमाणु शक्ति बन जायेगा
- ब्रिटेन व चीन ने परमाणु सन्धि की
- चीन ने परीक्षा में नकल करने पर सात साल तक सजा का प्रावधान किया
- चीन ने एक दशक पुरानी एक बच्चे की पॉलिसी खत्म की
- एलेक्सिस साइप्रस फिर बने ग्रीस के प्रधानमंत्री
- शेरिफ इस्माइल बने मिस्त्र के प्रधानमंत्री
- नरेन्द्र मोदी 60 वर्षों में आयरलैंड की यात्रा करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री बने, वहां उन्होनें प्रधानमंत्री एंडा केनी से मुलाकात की
- पहली भारत अमेरीकी रणनीतिक वार्ता वाशिंगटन में हुई जिसमे विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने भाग लिया
- 10 वीं विश्व हिन्दी कांफ्रेंस भोपाल में सम्पन्न
- भारत मालदीव का सन्युक्त सैन्य अभ्यास EKUVERIN केरल के त्रिवेन्द्रम में सम्पन्न
- भगवद गीता की प्रासंगिकता को लेकर पहली कांफ्रेंस लन्दन में हुई
- नेपाल ने नया संविधान अंगीकृत किया, गाय को घोषित किया राष्ट्रीय पशु
- मैल्कम टर्नबुल बने ऑस्ट्रेलिया के 29 वें प्रधानमंत्री
- पाकिस्तान के सवौच्च न्यायालय ने उर्दू को आधिकारिक भाषा बनाने के आदेश दिये
- महिलाओं को व्यापार में प्रोत्साहित करने हेतू G20 मीटिंग में W20 समूह बनाने का फैसला किया
- कनाडा की अर्थव्यवस्था में 6 साल में पहली बार मन्दी
- एशियाई विकास बैंक ने भारत के आर्थिक वृद्धि दर अनुमान को 7.8 से घटाकर 7.4 फीसदी किया
- दिल्ली के इन्दिरा गान्धी एयरपोर्ट को 2014 का एयरपोर्ट ऑफ दी ईयर अवार्ड
- विदेशी निवेशकों को आमंत्रित करने हेतू वित्त मंत्री अरुण जेटली ने की सिंगापुर व हांगकांग की यात्रा
- मूडीज ने भारतीय अर्थव्यवस्था के 7 फीसदी की दर से वृद्धि का अनुमान व्यक्त किया है
- इ-वालेट, ईन्टरनेट गेम्स व पोकर के द्वारा विदेशों से अर्जित धन का स्त्रोत अब सरकार को बताना होगा
- नोबेल विजेता बांग्लादेश के मोहम्मद यूनुस अब सूक्ष्म वित्त के बारे में महाराष्ट्र का निर्देशन करेंगे
- भारत ने लन्दन स्थित उस बंगले की अधिकारिता हासिल कर ली है जहां डॉ. भीमराव अम्बेडकर पढाई के दिनों में रहते थे

BANK EXAMS Today

- भारत का बाहरी ऋण 6.6 फीसदी बढकर 475.8 बिलियन डॉलर हो गया है
- जापानी संसद ने एक बिल पास किया है जिसके तहत अब जापानी सैनिक विदेशों में भी लड. सकेंगे
- 'बेघरी' को 'राष्ट्रीय आपदा' घोषित करने वाला पहला शहर बना लास एंजिल्स।
- G-20 के वित्त मंत्रियों तथा केन्द्रीय बैंकों के गवर्नरों का सम्मेलन तुर्की में संपन्न। भारत के वित्त मंत्री श्री अरूण जेटली ने इसमें भाग लिया। अगला G-20 सम्मेलन चीन में होगा।
- अब्देल फतेह अल सिसी ने मिस्त्र के राष्ट्रपति के रूप में ली शपथ। अल सिसी मिस्त्र के पूर्व सेनाध्यक्ष व रक्षा मंत्री हैं।
- उत्तरी अमरीका का सर्वोच्च पर्वत शिखर माउन्ट मैक्किनली का नया नामकरण डेनली। ह्वाइट हाऊस सूत्रों के अनुसार अमरीका के राष्ट्रपति औपचारिक रूप से उत्तरी अमरीका के सर्वोच्च पर्वत शिखर माउन्ट मैक्किनली का नाम बदलकर डेनली करेंगे।
- संयुक्त राष्ट्र संघ के वीटो शक्ति को स्थाई सदस्यों तक सीमित रखने के फ्रांसीसी प्रस्ताव को रूस ने अस्वीकार किया।
- 'आपदा शमन' पर 'दक्षेस' राष्ट्रो का सम्मेलन नई दिल्ली में संपन्न। दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के सहयोग संगठन (दक्षेस) का आपदा शमन पर सम्मेलन 3 सितंबर 2015 को नई दिल्ली में हुआ।
- भारत नेपाल आर्थिक कार्यक्रम के अधीन बाल त्रिपुरा सुन्दरी देवी मंदिर का उद्घाटन।
- जेरेमी कॉर्बिन यूनाइटेड किंगडम के विपक्षी पार्टी 'लेबर पार्टी' के नेता निर्वाचित।
- प्रवासी समस्या को उद्घृत करते हुए हंगरी ने 'आपात स्थिति की घोषणा की।
- अफ्रीकी राष्ट्र बुर्किनाफासो में सैन्य तख्तापलट।
- हज यात्रा में भगदड़ मची; 700 से ज्यादा मौतें।
- ग्रीस अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष(आईएमएएफ) का डिफॉल्टर बनने वाला दुनिया का पहला विकसित देश बन गया है। ग्रीस तय सीमा के अंदर कर्जे का 1.5 बिलियन यूरो आईएमएफ को वापस करने में विफल रहा
- क्यूबा मां से बच्चे को होने वाले एचआईवी संक्रमण को समाप्त करने वाला विश्व का पहला देश बन गया है
- दुनियाभर में विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई 2015 को मनाया गया। वर्ष 2015 के विश्व जनसंख्या दिवस का विषय 'आपात स्थिति में असुरक्षित जनसंख्या' रखा गया|
- ग्रीस संकट पर यूरोजोन के सदस्य देशों के बीच तीसरे बेलआउट पैकेज पर चर्चा के बाद समझौता हो गया है। ग्रीस को 86 अरब यूरो यानी 96 अरब डॉलर का तीसरा बेलाउट पैकेज दिया जाएगा। यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष डोनाल्ड टस्क ने यह जानकारी दी है
- ईरान और छह ग्लोबल शक्तियों के बीच परमाणु करार होने के साथ ही दुनियाभर में तेल की कीमत एक डॉलर से कम हो गई है।इस परमाणु करार के साथ ही ईरान पर लगी परमाणु पाबंदियां कम होने के आसार
- यूरोपीय यूनियन (ईयू) ने औपचारिक रूप से 7.16 अरब यूरो के शॉर्ट टर्म लोन को मंजूरी दे दी है। ग्रीस के लिए पांच साल में यह तीसरा राहत पैकेज है। इसकी मदद से वह दिवालिया होने से बच जाएगा
- दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति तथा नोबेल शांति पुरस्कार विजेता नेल्सन मंडेला (1918-2013) के सम्मान में 18 जुलाई 2015 को विश्वभर में अन्तरराष्ट्रीय नेल्सन मंडेला दिवस मनाया गया
- अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने स्पिट्जर स्पेस टेलीस्कोप की मदद से पृथ्वी के सबसे नजदीक रॉकी एक्सोप्लानेट (चट्टान निर्मित ग्रह) की खोज की पुष्टि की
- विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सदस्यों ने 200 से अधिक उत्पादों को शून्य टैरिफ और शुल्क मुक्त व्यापार की सूची में शामिल करने वाले प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान कर दी है
- जीवित अल्ट्रा हाई नेट वर्थ (यूएचएनडब्ल्यू) इंडीविजुअल्स द्वारा स्थापित दुनिया की सबसे अमीर निजी चैरिटेबल संस्थाओं की लिस्ट में बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन टॉप पर है। हांगकांग के बिजनेसमैन ली का-शिंग द्वारा 1980 में स्थापित ली

का-शिंग दूसरे स्थान पर है। तीसरे स्थान पर गॉर्डन एंड बेट्टी मूरे फाउंडेशन और चौथे स्थान पर ब्लूमबर्ग फिलैन्थ्रोपीज हैं।

- कजाकिस्तान विश्व व्यापार संगठन का 162 वां सदस्य बना
- चीन ने अपनी मुद्रा युआन का 2 फीसदी अवमुल्यन किया

बैंकिंग व अर्थव्यवस्था

- महिंद्रा समूह ने इटली की आटोमोटिव व इंडस्ट्रियल डिजाइन कंपनी पिनिन फैरिना का लगभग पांच करोड़ यूरो (370 करोड़ रुपए) में अधिग्रहण करने की घोषणा की है। इसके लिए दोनों पक्षों में कई माह तक वार्ता हुई। समूह की दो कंपनियों टेक महिंद्रा तथा महिंद्रा एंड महिंद्रा के पास इस कंपनी की क्रमश: 60 और 40 प्रतिशत हिस्सेदारी रहेगी।
- म्यांमार ने नए स्टॉक एक्सचेंज का उद्घाटन किया है। स्टॉक एक्सचेंज नाम का यांगून स्टॉक एक्सचेंज (वाईएसएक्स) रखा गया है। इसे छह कंपनियों के लिए योजनाओं के साथ मार्च 2016 में आरंभ किया जाएगा।
- फ़ोर्ब्स की व्यापार करने के लिए सर्वश्रेष्ठ देशों की सूची में भारत खराबा प्रदर्शन करते हुए घाना व कजाकिस्तान जेसे देशों से भी पीछे 97 वें स्थान पर रहा। सूची में कुल 144 देश शामिल थे।सूची में डेनमार्क प्रथम स्थान पर रहा।

- मोबाइल टेलीफोन कंपनी ओप्पो 2016 से 2020 तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की ग्लोबल पार्टनर होगी। यह समझौता 10 दिसम्बर 2015 को दोनों के बीच दुबई में किया गया है।यह अनुबन्ध चार साल का होगा।
- देश के तीसरे बड़े निजी बैंक एक्सिस बैंक ने एनआरई खाता धारक प्रवासी भारतीय ग्राहकों के लिए डिस्पले आधारित डेबिट कार्ड जारी किया है।
- भरत में निवेश करने के मामले में सिंगापुर, मॉरिशस को पीछे छोडकर प्रथम स्थान पर आ गया है।
- न्यूजीलैंड के वित्त मंत्री बिल इंग्लिश ने न्यूजीलैंड के औपचारिक रूप से एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इनवेस्टमेंट बैंक (एआईआईबी) का सदस्य बनने की घोषणा की है। न्यूजीलैंड के एआईआईबी से जुड़ने से बैंक के संचालन के लिए आवश्यक 50 प्रतिशत हिस्सेदारी पूरा करने में मददगार हो सकता है। एआईआईबी का औपचारिक रूप से संस्थापक सदस्य बनने वाला न्यूजीलैंड नौंवा देश है। न्यूजीलैंड एआईआईबी की स्थापना पर चर्चा में शामिल होने वाला पहला विकसित पश्चिमी देश है। न्यूजीलैंड का पेडअप कैप्टल 125 मिलियन न्यूज़ीलैंड डॉलर होगा जो उसे पाँच वर्षों में देना होगा।

- विश्व बैंक ने महत्वाकांक्षी स्वच्छ भारत मिशन के लिये 1.5 बिलियन डॉलर देने की घोषणा की है। यह मिशन 2019 में सम्पन्न होना है।वर्ल्ड बैंक के अनुसार भारत में करीब 750 मिलियन लोग रहते हैं जो सेनिटेशन की सुविधा से दूर हैं तथा इनमे से 80 फीसदी ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं।
- अरबपति कारोबारी अनिल अंबानी के नेतृत्व वाली रिलायंस कम्यूनिकेशंस ने कहा कि वह रूस के दूरसंचार समूह सिस्तेमा के एमटीएस ब्रांड के तहत परिचालन करने वाले भारतीय मोबाइल टेलीफोनी उद्यम का अधिग्रहण करेगी|
- सोशल नेटवर्क वेबसाइट फेसबुक देश के ग्रामीण हिस्सों में सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी बीएसएनएल के साथ भागीदारी में 100 वाईफाई साइट के प्रायोजन पर हर साल पांच करोड़ रपये खर्च करेगी|
- रिजर्व बैंक ने अपने ग्राहक को जानो (केवाईसी) तथा मनी लांड्रिंग निरोधक नियमों (एएमएल) के उल्लंघन को लेकर धनलक्ष्मी बैंक पर एक करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। केंद्रीय बैंक ने आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ (ईओडब्ल्यू) की चालू खाते की जांच के संदर्भ में केवाईसी और एएमएल दिशानिर्देशों का अनुपालन

नहीं करने को लेकर धनलक्ष्मी बैंक को कारण बताओ नोटिस जारी किया था।

- रिजर्व बैंक ने राज्य सहकारी बैंकों ओर जिला केंद्रीय सहकारी बैंकों को सिर्फ देख सकने वाली सुविधा के लिए इंटरनेट बैंकिंग की पेशकश करने की अनुमति दी। फिलहाल कुछ निश्चित मानदंडों को पूरा करने वाले शहरी सहकारी बैंकों को लेनदेन की सुविधा के साथ इंटरनेट बैंकिंग की पेशकश करने की अनुमति है। इसके लिए उन्हें रिजर्व बैंक की अनुमति लेनी होती है। इसके अलावा सभी शहरी सहकारी बैंकों को व्यू ओनली सुविधा वाली इंटरनेट बैंकिंग सुविधा कुछ शर्तों के साथ देने की अनुमति है। इसके लिए उन्हें रिजर्व बैंक की अनुमति लेने की जरूरत नहीं है।
- प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति (सीसीईए) ने कोल इंडिया लिमिटेड के 10 प्रतिशत प्रदत्त इक्विटी पूंजी के विनिवेश को मंजूरी प्रदान की है। कोल इंडिया में इस विनिवेश से केंद्र सरकार को सरकारी खजाने में करीब 20000 करोड़ रुपये जुटाने की उम्मीद है।
- एशियाई विकास बैंक, बांग्लादेश और भारत केबीच निकट भविष्य में शुरु होने वाली बिजली परियोजना के लिए बिजली संपर्क के विकास के लिए 12 करोड़ डॉलर का ऋण देगा। बांग्लादेश में बैंक के निदेशक कुझिको हिगुची और करोड़ डॉलर के बैंक कर्ज देने पर राजी हो गया है।
- शहरी विकास मंत्री वेंकैया नायडू ने 23 नवंबर, 2015 को नई दिल्ली में कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) का एक ई-कॉमर्स पोर्टल 'ई-लाला' शुरु किया। ई-कॉमर्स पोर्टल 'ई-लाला' को शुरु करने का उद्देश्य देश के करीब 5.77 करोड़ छोटे व्यापारियों के हितों को प्रोत्साहित करना है। ई-लाला उन व्यापारियों को अतिरिक्त आमदनी में सहयोग करेगा, जिनके अपने फिजीकल स्टोर हैं, लेकिन ई-कॉमर्स कंपनियों की वजह से उनके कारोबार को चुनौती मिल रही है।
- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय आयोग (सेबी) ने 22 नवम्बर 2015 को बांग्लादेश के प्रतिभूति और विनिमय आयोग के साथ एक द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किये। इस समझौते के अंतर्गत दोनों देशों के मध्य प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता प्रदान की जाएगी।
- विदेशी बैंक HSBC ने भारत में अपना कारोबार बंद करने का फैसला किया है| बैंक केएक प्रवक्ता ने शुक्रवार को बताया कि वैश्विक निजी बैंकिंग में भारतीय कारोबार की समीक्षा के बाद इसे बंद करने का फैसला लिया गया है|
- रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने विदेशी निवेशकों को ऐसे बॉन्ड्स को खरीदने की मंजूरी दे दी है जो डिफॉल्ट हो चुके हैं। इसके अलावा, विदेशी निवेशक नॉन कंवर्टिबल डिबेंचर में भी इन्वेस्टमेंट कर सकते हैं। विदेशी निवेशकों के लिए इन डिफॉल्ट हुए बॉन्ड या एनसीडी का मैच्योरिटी पीरियड 3 साल या उससे ज्यादा रहेगा। आरबीआई के इस फैसले से बैंकों के एनपीए यानी डूबते कर्ज में कमी आने की उम्मीद है।
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने युआन को रिजर्व मुद्रा बास्केट मेंशामिल किया
- आईसीआईसीआई बैंक कार्डलैस एम-वीसा जारी करने वाला दुनिया का पहला बैंक बना
- भारतीय स्टेट बैंक ने होम लोन की दरें 10 फीसदी की
- देना बैंक विभिन्न प्रकार के लोन हेतू बैंकबाजार डॉट कॉम के साथ अनुबन्ध किया
- टेलिनॉर ने मोबाइल उपभोक्ताओं के लिये मुफ्त बीमा शुरु किया जो 5000 से 50,000 तक का होगा
- भारतीय रिजर्व बैंक ने मार्च 2018 तक अत्तिरिक्त्त 1.2 लाख करोड रुपए जुटाने के लिये विदेशी पॉर्टफोलियो निवेशकों को नियमों में छूट दी है
- भारतीय रिजर्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार सार्वजनिक बैंकों में यूको बैंक के पास सर्वाधिक गैर निष्पादित आस्तियां (Non-Performing Assets) है
- भारतीय रिजर्व बैंक ने यस बैंक को म्यूचूअल फंड शुरु करने की अनुमति प्रदान की
- HDFC बैंक ने 'गो डिजीटल' अभियान चलाया
- भारतीय रिजर्व बैंक ने इम्फाल में नया ऑफिस खोला

- कोटक महिन्द्रा बैंक ने बिना इंटरनेट वाला कोटक भारत एप्प लांच किया जिसके जरीये उपभोक्ता प्रतिदिन 2500 रुपए का लेनदेन कर सकेंगे
- महिन्द्रा कॉम्विवा ने भुगतान बैंक मार्केट में कदम रखा
- बैंक ऑफ बडौदा ने 'चिल्लर एप्प' लांच किया
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नई दिल्ली में आईडीएफसी बैंक का उदघाटन किया
- भारतीय रिजर्व बैंक ने सन्युक्त्त अरब अमीरात की केन्द्रीय बैंक के साथ सूचना के आदान-प्रदान हेतू समझौता किया
- नाबार्ड ने हरियाणा के ग्रामीण विकास हेतू 135 करोड का लोन दिया
- बैंकिंग संवाददाता सेवा कर से मुक्त
- भारतीय रिजर्व बैंक ने स्वर्ण जमा योजना में बैंकों को ब्याज दर खुद तय करने को स्वतंत्र किया
- भारतीय रिजर्व बैंक ने आधार दरें 50 आधार अंक कम की, अब रेपो रेट 6.75% , रिवर्स रेपो रेट 5.75% तथा बैंक दर 7.75% होगी , हालांकि सीआरआर यथावत 4 फीसदी रखा गया है
- यस बैंक ने भुगतान में तेजी लाने हेतू स्नैपडील तथा ब्लू डार्ट के साथ अनुबन्ध किया
- फेडरल बैंक ने मलयालम व हिन्दी में एप्प लांच किया
- जापान ने भारत की पहली बुलेट ट्रेन हेतू लगभग 1 फीसदी ब्याज दर पर करीब 90000 करोड वित्त देने की पेशकश की है
- पेटीएम ने मोबाइल वालेट सेवा उपलब्ध कराने हेतू बैंक ऑफ महाराष्ट्र के साथ अनुबन्ध किया
- भारतीय रिजर्व बैंक ने बांग्लादेश की केन्द्रीय बैंक के साथ सूचना के आदान-प्रदान हेतू समझौता किया
- राष्ट्रीय आरोग्य निधि के तहत अब 2 लाख की जगह पांच लाख की वित सहायता
- भारतीय रिजर्व बैंक ने विदेशी संस्थागत निवेशकों को डेन नेटवर्क में 74 फीसदी निवेश की अनुमति दी
- यस बैंक GIFT CITY (Gujarat International Finance Tec City) में आईएफएससी बैंकिंग इकाई शुरु करने वाला पहला बैंक बना
- मेमोरी चिप बनाने वाली कम्पनी सेनडिस्क को वेस्टर्न डिजीटल ने 19 बिलियन डॉलर में खरीदने की घोषणा की है
- डेल ने इएमसी कॉर्पोरेशन को 67 बिलियन डॉलर मे खरीदने की घोषणा की
- प्लात्स की विश्व की प्रमुख 250 ऊर्जा कम्पनियों मे 14 भारतीय कम्पनियां शामिल
- भारतीय जीवन बीमा निगम भारतीय रेल को सुधार हेतू 2000 करोड देगी
- भारत ने फ्रांस के साथ 36 राफेल एयरक्राफ्ट हेतू 30,000 करोड की डील की है
- भारत व रूस ने 2025 तक द्विपक्षिय व्यापार तिगूना करने का लक्ष्य तय किया
- अदानी समूह ऑस्ट्रेलिया मे 7 बिलियन का कोयला व रेल प्रोजेक्ट शुरु करेगा
- धनलक्ष्मी बैंक ने बजाज एलायंज के साथ बैंकाश्योरेंस हेतू अनुबन्ध किया
- मलेशिया भारत में शहरी विकास हेतू 30 बिलियन डॉलर निवेश करेगा
- भरत ने स्लोवानिया की पिपिस्ट्रेल नामक कम्पनी के साथ 194 हल्के विमानों हेतू 105 करोड की डील की
- इंफोसिस HDFC बैंक को पीछे छोडकर तीसरी सर्वाधिक मूल्यवान कम्पनी बनी
- भारतीय रिजर्व बैंक ने भारतीय स्टेट बैंक व आईसीआईसीआई बैंक को घरेलू व्यवस्थित बैंकों (D-SIB) में शामिल किया
- महाराष्ट्र ने पेट्रोल व डीजल से लोकल बॉडी टैक्स हटाया
- बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज सर्वाधिक लिस्टेड कम्पनियों वाला स्टॉक एक्सचेंज बना
- स्वर्ण मौद्रिकरण व सोवरीन स्वर्ण बॉड योजनायें लांच
- एक्सिस बैंक ने 'लाइम' एप्प लांच किया
- गुजरात भारत में व्यापार में सर्वाधिक आसानी वाला राज्य बना
- भारतीय रिजर्व बैंक ने सहारा वित निगम का लाइसेंस रद्द किया
- भारतीय स्टेट बैंक ने ऑनलाइन शॉपिंग हेतू 'सिम्पली क्लिक' एप्प लांच किया

- भारतीय रिजर्व बैंक ने नेपाल की केन्द्रीय बैंक के साथ सूचना के आदान-प्रदान हेतू समझौता किया
- भारतीय रिजर्व बैंक ने 10 लघू वित बैंको को लाइसेंस दिया
- गूगल 400 भारतीय रेल्वे स्टेशनों पर मुफ्त वाइफाइ प्रदान करायेगा
- मार्क जकरबर्ग 35 वर्ष से कम उम्र के लोगों में सबसे धनी व्यक्ति
- मारुती सुजुकी ने एस-क्रॉस नामक कार लांच की
- आईसीआईसीआई बैंक ने 'स्मार्ट वॉल्ट' एप्प लांच की
- भारतीय स्टेट बैंक ने 'एसबीआइ बडी' एप्प लांच किया
- सिडबी(SIDBI) ने छोटे व्यापारियों के लिये 'स्माइल' योजना शुरु की
- प्रसार भारती ने डिजीटल टेलीविजन रूस के साथ अनुबन्ध किया
- वित्त मंत्रालय ने सार्वजनिक बैंको के सुधार हेतू 'इन्द्रधनुष' योजना शुरु की
- एसोचैम की रिपोर्ट के अनुसार तमिलनाडु रोजगार सर्जन व मेन्युफेक्चरिंग सेक्टर में देश में प्रथम पायदान पर है
- बन्धन बैंक ने 23 जुलाइ को 22 राज्यों मे 501 शाखाओं के साथ शुरुआत की जो किसी भी बैंक के लिये पहले दिन सर्वाधिक है, इस बैंक का मुख्यालय कोलकाता में है
- माइक्रोसॉफ्ट महाराष्ट्र में डिजीटल गांव स्थापित करेगा
- भारतीय स्टेट बैंक ने मेक माइ ट्रिप डॉट कॉम के साथ अनुबन्ध किया
- आन्ध्र प्रदेश में आपदा राहत हेतू भारत ने वर्ल्ड बैंक के साथ अनुबन्ध किया
- भारतीय स्टेट बैंक ने 'तत्काल' प्रोजेक्ट लांच किया
- कॉर्पोरेशन बैंक मुद्रा कार्ड लांच करने वाला पहला बैंक बना
- HDFC ने 'एप्पल वॉच एप्प' लांच किया
- 'न्यू डवलपमेंट बैंक' चीन के शंघाइ में लांच, इसे ब्रिक्स बैंक भी कहते हैं
- HDFC ने धंचायत नामक लघू फिल्म लांच की जो साहूकारों से उधार लेने के नुकसानों के बारे में बताती है
- सेबी ने लगाया पी.ए.सी.एल (PACL) पर रू. 7269 करोड़ का जुर्माना। यह जुर्माना लोगों से गलत तरीके से राशि इकट्ठा (जमा) करने के लिए लगाया गया है।
- साइरस पूनावाला ने रू. 750 करोड़ में खरीदा मुम्बई का प्रतीकात्मक लिंकन हाऊस।
- भारतीय रिजर्व बैंक ने 10 छोटे वित्तीय बैंको को सैद्धान्तिक मंजूरी दी। ये हैं-
  1. ए. यू. फायनेंसर्स
  2. कैपिटल एरिया लोकल बैंक
  3. दिशा माइक्रोफिन
  4. इक्विटस होल्डिंग्स
  5. ई.एस.ए.एफ. माइक्रोफायनेंस
  6. उज्जीवन फायनेंसियल सर्विसेज
  7. उत्कर्ष माइक्रो फायनेंस
  8. जनलक्ष्मी फायनेंसियल सर्विसेज
  9. आर.जी.वी.एन. (उत्तर-पूर्व) माइक्रो फायनेंस
  10. सूर्योदय माइक्रो फायनेंस
- मुद्रा बैंक योजना की शुरूआत 25 सितंबर 2015 को पंडित दीन दयाल उपाध्याय के जन्म-दिवस पर की गई।
- पूर्व राष्ट्रपति एस.राधाकृष्णन के सम्मान में प्रतीकात्मक रू. 125 व रू. 100 के सिक्के जारी।
- केन्द्रीय कैबिनेट ने स्पेक्ट्रम ट्रेडिंग गाइडलाइन को मंजूरी दी जिसके तहत टेलीकॉम कंपनियो को स्पेक्ट्रम के खरीद बिक्री की अनुमति मिली।
- आई.एम.एस.एम.ई. ऑफ इंडिया ने एम.सी.एक्स लिमिटेड के साथ एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए।
- एल.सी.गोयल भारत व्यापार संवर्द्धन संगठन के सी.ई.ओ निर्वाचित।
- लघु, छोटे एवं मध्यम उद्यमों के लिए बौद्धिक सम्पदा अधिकार सहायता केन्द्र की लखनऊ में PHDCCI द्वारा शुरूआत।
- ए.के.झा. होंगे एन.टी.पी.सी. के नए चेयरमैन।
- रतन पी.वटाल भारत सरकार के वित्त सचिव निर्वाचित।

पुरस्कार

- अमेरिका की प्रतिष्ठित खेल पत्रिका स्पोर्ट्स इलस्ट्रेटेड (एसआइ) ने दिग्गज महिला टेनिस खिलाड़ी सेरेना विलियम्स को दिसंबर 2015 में 'स्पोर्ट्स पर्सन ऑफ द ईयर' चुनाद्य। अमेरिका महिला टेनिस खिलाड़ी सेरेना वर्ष 1983 के बाद पहली ऐसी महिला खिलाड़ी हैं जिन्हें इस प्रतिष्ठित पत्रिका ने यह सम्मान दिया है। इससे पहले एसआइ ने मेरी डेकर को इस पुरस्कार से सम्मानित किया था।
- जेनेसिस प्राइज़ फाउंडेशन ने विश्व प्रसिद्ध वायलिन वादक इत्जहक पर्लमैन को वर्ष 2016 के जेनेसिस पुरस्कार विजेता के रूप मे चुना है।

- विश्व की दिग्गज सॉफ्टवेयर कंपनी विप्रो को इंटरनेट (आईओटी) हेतु समाधान विकसित करने के लिए "2015 एजिस ग्राहम बेल पुरस्कार" का विजेता घोषित किया गया हैं। विप्रो को आईओटी समाधान व विकास, यूनिवर्सल डेटा पार्सर (यूडीपी), के कारण इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चुना गया हैं।
- भारत में जन्में लेखक सलमान रुश्दी को लाइफटाइम अचीवमेंट के लिए प्रख्यात मेलर प्राइज़ से सम्मानित किया गया हैं।
- एडिडास इंडिया के वरिष्ठ कानूनी और अनुपालन निदेशक पुलिन कुमार को दिल्ली भारतीय राष्ट्रीय बार एसोसिएशन की ओर से वर्ष के जनरल परामर्श दाता-खुदरा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।
- सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की भारतीय बहुराष्ट्रीय कम्पनी टेक महिंद्रा को दुबई में फोर्ब्स पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। महिंद्रा समूह की बहुराष्ट्रीय कम्पनी टेक महिंद्रा को 'फोर्ब्स टॉप 100 मिडिल ईस्ट - ग्लोबल मीट्स लोकल 2015' पुरस्कार दिया गया है।
- टाइम मैगजीन ने वर्ष 2015 के लिये जर्मनी की चांसलर एंजेला मार्केल को 'पर्सन ऑफ द ईयर' चुना है। उन्हें यह सम्मान यूरोप में विषम परिस्थितियों में उनके द्वारा प्रदान किए गए सराहनीय नेतृत्व के लिए दिया गया है। वर्ष 1927 के बाद से मर्केल केवल चौथी महिला है जो इस सम्मान से सम्मानित की गई हैं।
- नसीरुद्दीनशाह को दुबई में आयोजित दुबई इन्टरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के 12 संस्करण के दौरान लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

- पूर्व अंतरराष्ट्रीय फुटबॉलर स्वर्गीय रामबहादुर क्षेत्री को देवभूमि खेल रत्न, एथलेटिक्स प्रशिक्षक रेनू कोहली को देवभूमि द्रोणाचार्य व वेटलिफ्टिंग कोच हंसा मनराल शर्मा को लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा| यह घोषणा खेल विभाग ने की है|
- विख्यात फिल्म, टीवी व मंच कलाकार विक्रम गोखले को 5 नवम्बर को विष्णुदास भावे पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार उनहें 'मराठी रंगभूमी दिन' के अवसर पर एक समारोह में प्रदान किया गया।
- साल 2015 का इंदिरा गांधी शांति, निशस्त्रीकरण और विकास पुरस्कार संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चा युक्त (यूएनएचसीआर) को दिया जाएगा। इसकी घोषणा गुरुवार को पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की जयंती पर की गई। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार लाखों शरणार्थियों की सहायता में अपार योगदान दे रहे यूएनएचसीआर कार्यालय को दिया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 14 दिसंबर, 1950 को यूएनएचसीआर की स्थापना की थी। उस समय इसका मकसद द्वितीय विश्व युद्ध के चलते विस्थापित हुए लोगों की मदद करना था।
- टेनिस चैंपियन और हॉलीवुड फिल्म निर्माता अशोक अमृतराज को ईस्ट लंदन विश्वविद्यालय द्वारा कला के क्षेत्र में डाक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है। अमृतराज को भारत समेत दुनिया भर के प्रतिभाशाली फिल्म कारों को बढावा देने के लिये सम्मानित किया गया।
- गृह राज्य मंत्री किरन रिजिजू को संयुक्त राष्ट्र कार्यालय द्वारा एशिया में आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए किये गये सराहनीय कार्यों हेतु आपदा जोखिम

न्यूनीकरण एशिया चैंपियन अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान प्राप्त करने वाले रिजिजू पहले भारतीय हैं।

- प्रसिद्ध मराठी अभिनेता प्रशांत दामले को रंगमंच, फिल्म एवं संगीत क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए मास्टर दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार दिया जाएगा। पंडित हृदयनाथ मंगेशकर ने दामले के मराठी नाटक 'करती कलजत घुसली' के 100वें मंचन के मौके पर यह घोषणा की।
- जाने माने पत्रकार कुलदीप नायर को लाइफटाइम एचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। इस बार ये पुरस्कार 2 वर्षों के लिए दिए गए।

- मारुती सुजुकी के चैयरमेन आर सी भार्गव को फॉर्ब्स लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड
- हिन्दी फिल्म 'जुबान' के निर्देशक मोजेज सिह को बुसान फिल्म फेस्टिवल मे सम्मानित किया गया
- इंफोसिस चीन के सीइओ रंगराजन वेल्लामोर को शंघाइ अवार्ड
- यूके सिटी ऑफ कोवेंट्री ने रतन टाटा को सम्मानित किया
- भारतीय जादूगर जेनिया भूमगरा को मर्लिन अवार्ड
- **नोबेल अवार्डस 2015**

व्यक्ति	क्षेत्र
यूयू तु (चीन) विलियम सी केम्पबैल (आयरलैंड) शतोशी ओमुरा (जापान)	चिकित्सा
टॉमस लिंडाल(स्वीडन) पॉल मोद्रिक (अमेरीका) अजीज संकार (तुर्की)	रसायन विज्ञान
तकाकी कजीता (जापान) आर्थर मेक्डोनाल्ड (कनाडा)	भौतिक विज्ञान
स्वेतलाना एलेक्सीविक (बेलारुस)	साहित्य
टयुनिशियाइ राष्ट्रीय डॉयलोग क्वार्टेट	शांति
एंगस डिटन (स्कॉटलैंड)	अर्थशास्त्र

- रैफ बदावी तथा जेम्स फैंटन को पेन पिंटर अवार्ड
- एआर रहमान को हृदयनाथ मंगेशकर अवार्ड
- मलयालवी फिल्मकार आइ वी सासी को जे सी डेनियल अवार्ड
- अभिनेता विक्रम गोखले को विष्णुदास भावे अवार्ड
- लन्दन की इमर्जिंग मार्केट्स नामक पत्रिका ने अरुण जेटली को 'फाईनेंस मिनिस्टर ऑफ दी एशिया' अवार्ड से सम्मानित किया
- जमैका के मर्लोन जेम्स को उनके उपन्यास 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ सेवन किलिंग्स' के लिये मेन बुकर पुरस्कार प्रदान किया गया
- टाटा इस्पात को स्वर्ण मयूर अवार्ड
- भारत वेश्विक स्टार्ट अप स्पेस रैंकिंग में तीसरे स्थान पर
- पुर्तगाल के फुटबालर क्रिस्टियानो रोनाल्डो को चौथी बार गोल्डन बूट अवार्ड
- कैलाश सत्यार्थी को 'हार्वर्ड मानवतावादी' अवार्ड
- फिल्म अभिनेता शाहरुख खान को एडीनबर्ग विश्वविद्यालय ने डॉक्टरेट की उपाधि दी
- ट्रेन की सूचना देने के मामले में दिल्ली मेट्रो प्रथम पायदान पर
- गीतकार प्रसून जोशी को बैंक ऑफ बडौदा ने महाराजा सयाजीराव भाषा सम्मान से नवाजा
- भारतीय फिल्म 'एन ओल्ड डोग'स डायरी को लन्दन फिल्म फेस्टिवल मे सम्मानित किया गया
- अभिनेत्री उर्वशी रौतेला को मिस दिवा पुरस्कार 2015 प्रदान किया गया
- हिन्दुजा ब्रदर्स यूनाइटेड किंगडम के दूसरे सर्वाधिक प्रभावी व्यक्ति बने
- जिम्बाब्वे के राष्ट्रपति रॉबर्ट मुगाबे को चीन का कंफ्यूशियस शांति पुरस्कार 2015

- रैफ बदावी को सखारोव पुरस्कार 2015
- भारतीय फिल्म एंग्री इंडियन गोडेज को रोम फिल्म फेस्टिवल में पीपुल्स चॉइस अवार्ड
- तेजिन्द्र पाल सिंह को ऑस्ट्रेलियन ओफ दी डे अवार्ड
- भारत को केरल स्थित वदक्कुनाथन मन्दिर के संरक्षण हेतू यूनेस्को का उत्कृष्टता पुरस्कार
- अभिनेता अनुपम खेर को ऑनर्ड गेस्ट ओफ टेक्सास अवार्ड
- बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना को सन्युक्त राष्ट्र चैम्पियन्स ऑफ चेंज अवार्ड
- भारतीय मूल की श्वेता प्रभाकरन को चैम्पियंस ऑफ चेंज अवार्ड
- उर्दू विद्वान शमीम हानफी को जनपीठ का जनगरीमा मानद अलंकरण पुरस्कार
- डॉ. कमलकिशोर गोयनका को उनकी कृति 'प्रेमचन्द की कहानियों का काल-क्रमानुसार अध्ययन' के लिये व्यास सम्मान 2014 दिया गया
- इन्दिरा नुइ व शोभना भारतीय को ग्लोबल लीडरशिप अवार्ड
- कर्मचारी भविष्य निधि संगठन को स्कॉच अवार्ड
- कनाडा के जैकब साइमरमेन व भारत के अमलेन्दु कृष्णा को शास्त्र रामानुजम अवार्ड
- काशिनाथ सिंह को भारत भारती साहित्य अवार्ड 2014
- जहाना नेमत्सोव को पौलैंड का एकता अवार्ड
- राघवेन्द्र गडगकर को जर्मनी का क्रॉस ऑर्डेर ऑफ मेरिट अवार्ड
- एम वीरप्पा मोइली को सरस्वती सम्मान 2014 उनकी कृति 'रामायण महांवेष्णम' हेतू प्रदान किया गया
- बांग्लादेश की जिया हैदर रहमान को जेम्स टेट ब्लेक अवार्ड
- बाबा साहेब पुरन्दरे को महाराष्ट्र भूषण अवार्ड
- सीरिया की जैना एरहेम को पीटर मेकलर अवार्ड 2015
- भारत के राजेन्द्र सिंह को स्टॉकहॉम वाटर प्राइज़
- आर पॉल सिंह को विश्व कृषि पुरस्कार
- बांग्लादेश के सर फजल हसन आबेद को वर्ल्ड फूड अवार्ड
- संजीव गलांडे को जीडी बिड़ला पुरस्कार
- जोधपुर फिल्म सोसायटी को प्रतिमान सरकार अवार्ड
- सैयद हैदर रजा को फ्रांस का लीजन ऑफ ओनर अवार्ड
- पीटर हिग्स को रोयल सोसायटी कोप्ले मेडल
- हेलेना ड्युम व जॉर्ज सेम्पाइयो को नेल्सन मंडेला अवार्ड
- रामचन्द्र गुहा को फुकुओका एशियाइ संस्कृति पुरस्कार
- संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त को 2015 का इन्दिरा गांधी शांति पुरस्कार

नियुक्तियां

- केंद्र सरकार ने पूर्व सैनिकों के लिए 'वन रैंक वन पेंशन' (ओआरओपी) योजना के क्रियान्वयन पर गौर करने के लिए सोमवार को एक न्यायिक समिति गठित की है। न्यायिक समिति की अध्यक्षता पटना उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश एल.नरसिम्हा रेड्डी करेंगे। समिति अपनी संस्तुतियों में इसकी सिफारिशों के आर्थिक प्रभाव पर विचार करेगी।
- पूर्व मुंबई पुलिस कमिश्नर अहमद जावेद को वर्ष 2015 के दिसम्बर माह में सउदी अरब में भारत के राजदूत के रूप में नियुक्त किया गया हैं। वह हामिद अली राव का स्थान लेंगे।
- भारतीय इस्पात प्राधिकरण (स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड) सेल के चेयरमैन के रूप में 57 वर्षीय पीके सिंह ने कार्यभार संम्भाल लिया हैं। इससे पहले वे दुर्गापुर इस्पात संयंत्र में वर्ष 2012 से बतौर मुख्य कार्यकारी अधिकारी कार्यरत थे।

- विजय कुमार चौधरी सर्वसम्मति से बिहार की 16वीं विधानसभा के अध्यक्ष निर्वाचित हो गए। उनके निर्वाचन के लिए सभी दलों की ओर से 11 प्रस्ताव पेश हुए, जिसे प्रोटेम स्पीकर सदानंद सिंह ने पारित करते हुए उनके अध्यक्ष बनने की घोषणा की।
- बिजली एवं आटोमेशन प्रौद्योगिकी कंपनी एबीबी इंडिया ने संजीव शर्मा को कंपनी का प्रबंध निदेशक नियुक्त किया है।
- दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति जुमा ने भारतीय मूल के प्रतिष्ठित नेता प्रवीण गोर्धन को नया वित्त मंत्री बनाया है। देश के आर्थिक क्षेत्र में वित्तीय बाजार की उठा-पट के बीच वह एक सप्ताह में वित्त विभाग के तीसरे प्रमुख होंगे।
- इलाहबाद उच्च न्यायालय के सेवा निवृत्त न्यायाधीश वीरेन्द्र सिंह को उत्तर प्रदेश के नए लोकायुक्त के रूप में नियुक्त किया गया है। ज्ञात हो यह देश में पहली बार हुआ है जब उच्चतम न्यायलय ने नियुक्ति का अधिकार अपने हाथ में लेते हुए किसी प्रशासनिक पद पर नियुक्ति की है।
- वरिष्ठ राजस्व सेवा अधिकारी ए के जैन को केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) का मुख्य अधिकारी नियुक्त किया गया है। मुख्य अधिकारी के रूप में उनकी नियुक्ति को प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली मंत्रिमंडल नियुक्ति समिति ने भी स्वीकृति प्रदान की है।
- भारत सरकार ने वरिष्ठ राजनयिक अखिलेश मिश्रा को मालदीव में भारत का उच्चायुक्त नियुक्त किया है। अखिलेश मिश्रा वर्तमान में टोरंटो में भारत के महा वाणिज्य दूत पद पर कार्यरत हैं। मिश्रा राजीव शाहारे की जगह लेंगे, जिन्हें डेनमार्क में भारत का राजदूत बनाया गया है।
- टाटा मोटर्स ने अर्जेंटीना के फुटबालर लियोनल मैसी को ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया
- जस्टिस तीरथ सिंह ठाकुर बने भारत के 43 वें मुख्य न्यायाधिश
- आरबीआई के गवर्नर रघुराम राजन को अंतर्राष्ट्रीय सेटलमेंट बैंक का उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया
- विजय केशव गोखले चीन में भारत के राजदूत नियुक्त
- हर्षवर्धन निओतिया फिक्की के अध्यक्ष बने
- नीतिश कुमार पांचवी बार बिहार के मुख्यमंत्री बने
- अंजु जॉर्ज को टार्गेट ऑलंपिक पोडियम का अध्यक्ष चुना गया
- पंकज सारण रूस में भारत के राजदूत नियुक्त
- अनिल वाधवा इटली में भारत के राजदूत नियुक्त
- पेट्रिशया जेनट राष्ट्रमण्डल की महासचिव नियुक्त
- ओलिवर ब्लुम को पॉर्शे मोटर्स का नया मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया ।
- राजीव लाल आइडीएफसी के एमडी व मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त
- आई.एस. झा बने पावरग्रिड कंपनी के अंतरिम सीएमडी
- आशीष बहुगुणा को भारतीय खाद्य मानक व सुरक्षा प्राधिकरण के सीइओ का अतिरिक्त पदभार, वे भारतीय खाद्य मानक व सुरक्षा प्राधिकरण के चैयरमेन भी है ।
- ई कॉमर्स कंपनी फ्लिपकार्ट ने श्रीराम वैंकटरमन को कंपनी के ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म का सीएफओ नियुक्त किया है। इसके अलावा प्रमोद जैन को कंपनी का वाइस प्रेसिडेंट और टैक्सेशन का प्रमुख नियुक्त किया है।
- ट्विटर के स्थायी सीईओ के रूप में जैक डोर्सी नियुक्त: लोकप्रिय माइक्रो ब्लॉगिंग साइट ट्विटर ने 5 अक्टूबर 2015 को जैक डोर्सी को अपना स्थायी मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) नियुक्ति किया।
  वे मोबाइल भुगतान कंपनी स्क्वायर के सीईओ भी है, डोर्सी की नियुक्ति, ट्विटर के सीईओ के रूप में दूसरी नियुक्ति है। वे एक ही समय में दोनों नौकरियों को संभालेंगे। पूर्व में डोर्सी ने अंतरिम मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में कार्य किया है।
- मनमोहन भनोट सीरियाई अरब गणराज्य में भारत के अगले राजदूत के रूप में नियुक्त

- हयुसंग ली बने आइपीसीसी के चैयरमेन, वे यौन उत्पीडन मे फंसे राजीव पचौरी का स्थान लेंगे
- 5 अक्टूबर 2015 को सेशेल्स के अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (ICCS) में आयोजित भारत उत्सव के दौरान भारतीय संगीतकार, गायक, गीतकार, अल्लाह रक्खा रहमान (A.R. Rahaman) को सेशेल्स के लिए दूसरा सांस्कृतिक राजदूत नामित किया गया।
- ध्यातव्य है कि रहमान से पहले वर्ष 2014 में प्रसिद्ध भारतीय फिल्म निर्माता एवं संगीत निर्देशक इलैया राजा को सेशेल्स ने अपना प्रथम सांस्कृतिक राजदूत नामित किया था।
- बॉलीवुड के नवोदित अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा को 'न्यूजीलैंड पर्यटन' का भारतीय दूत नियुक्त किया गया है। वर्ष 2012 में प्रदर्शित फिल्म 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर' से बॉलीवुड में अपने अभिनय-जीवन की शुरूआत करने वाले 30 वर्षीय अभिनेता सिद्धार्थ मल्होत्रा 'टूरिज्म न्यूजीलैंड' के पहले भारतीय दूत हैं।
- गुजरात कैडर के 1982 बैच के आईएएस अधिकारी तपन रे को सचिव कारपोरेट मामलों भारत के पूंजी बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड मे नियुक्त किया गया है।
- शेखर बसु परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष नियुक्त
- मैथियास मुलर जर्मन कार कंपनी फॉक्सवैगन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) 25 सितंबर 2015 को नियुक्त किए गए। मैथियास मुलर ने फॉक्सवैगन उत्सर्जन घोटाले में फॉक्सवैगन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी पद से इस्तीफा देने वाले मार्टिन विंटरकोर्न का स्थान ग्रहण किया। मैथियास मुलर वर्तमान में पोर्शे यूनिट के अध्यक्ष और फॉक्सवैगन एजी के बोर्ड के सदस्य है।
- वीबीएचसी वैल्यू होम्स के पूर्व चीफ एग्जीक्यूटिव पी एस जयकुमार ने बैंक ऑफ बड़ौदा के नए एमडी और सीईओ का चार्ज संभाल लिया है।
- जीओजी कोनरोते को फिजी का राष्ट्रपति चुना गया।
- रिवा गांगुली दास अल्बानिया तथा माल्दोवा मे भारत के राजदूत नियुक्त
- लियो पुरी भारतीय म्यूचुअल फंड के अध्यक्ष नियुक्त
- गुरजीत सिह जर्मनी मे भारत के नये राजदूत
- ओंसारी घार्ती मागर बनी नेपाल की पहली महिला स्पीकर
- जस्टिन ट्रूडो कनाडा के 23वे प्रधानमंत्री, उन्होने स्टीफन हार्पर को अपदस्थ किया
- वीके मल्होत्रा अखिल भारतीय खेल परिषद के अध्यक्ष बने
- जस्टिस रेवा खेत्रपाल बनी दिल्ली की लोकायुक्त
- आलोक रावत राष्ट्रीय महिला आयोग के पहले पुरुष सदस्य बने
- टीवी कलाकार जिम्मी मोराल्स ग्वाटेमाला के राष्ट्रपति चुने गये
- पीके गुप्ता बने भारतीय स्टेट बैंक के प्रबन्ध निदेशक
- जॉन मगुफुली बने तंजानिया के राष्ट्रपति
- राघव चन्द्रा बने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अध्यक्ष
- मनिष सिसोदिया को दिल्ली के कानून मंत्री क अतिरिक्त पदभार
- राजीव महर्षि बने गृह सचिव
- एल सी गोयल बने भारतीय व्यापार संवर्धन संगठन के सीएमडी
- ए के झा राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम लिमिटेड के अंतरिम अध्यक्ष व प्रबन्ध निदेशक नियुक्त
- जे मंजुला डीआरडीओ की पहली महिला निदेशक बनी
- राकेश शर्मा केनरा बैंक के प्रबन्ध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त

- होरमुसजी एन कामा भारतीय प्रेस ट्रस्ट के चैयरमेन बने
- स्तुती नारायण कक्कड राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की चैयरपर्सन नियुक्त
- आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चन्द्रबाबू नायडू नीति आयोग की स्वच्छ भारत अभियान कमेटी के अध्यक्ष नियुक्त
- सौरव गांगुली बंगाल क्रिकेट संघ के अध्यक्ष नियुक्त
- अरविन्द पनगडिया G-20 सम्मेलन मे शेरपा नियुक्त
- मैथियास मूलर वॉक्सवेगन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त
- वी. षनमुगनाथन को मणिपुर के राज्यपाल का अतिरिक्त पदभार,उन्हे सैय्यद अहमद का निधन हो जाने के कारण यह जिम्मेदारी दी गई है।
- अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारतीय मूल के तीन अमरीकियों को सलाहकार समिति में नामित किया।
- नवतेज सरना होंगे लन्दन में भारत के उच्चायुक्त। वर्तमान में वे भारतीय गृह मंत्रालय में सचिव (पश्चिम) हैं।
- सैयद अकबरूद्दीन संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थाई प्रतिनिधि होंगे।
- गौतम बम्बावले पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त निर्वाचित।
- रामनाथ कोविन्द बिहार के राज्यपाल नियुक्त
- सुन्दर पिचाइ गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त
- सुधाकर शेट्टी भारतीय जिम्नास्टिक फैडरेशन के अधयक्ष नियुक्त
- ओम प्रकाश रावत 13 अगस्त 2015 को भारत के निर्वाचन आयुक्त बने
- किशोर पिराजी खारट आईडीबीआई बैंक के प्रबन्ध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त
- अश्वनी लोहानी एयर इन्डिया के अध्यक्ष बने
- अमोल पालेकर भारतीय ऑस्कर फिल्म फेडरेशन के चैयरमेन नियुक्त
- गिरीश साहनी वैज्ञानिक व उद्योग अनुसन्धान आयोग के निदेशक बने
- सर्बिया के टेनिस खिलाडी नोवाक जोकोविक यूनिसेफ के सदभावना दूत नियुक्त

विज्ञान व तकनीकी

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने सिंगापुर के छह उपग्रहों को प्रक्षेपित किया है| इसरो ने ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी- सी-29) द्वारा श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से सिंगापुर के छह उपग्रहों को प्रक्षेपित किया है|

- भारत और रूस के मध्य द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास विशाखापत्तनम में आरंभ हुआ है। यह भारत और रूस की नौसेनाओं के बीच द्विपक्षीय सामुद्रिक अभ्यास और दोनों देशों के बीच सामरिक संबंधों का प्रतीक है। आईएनडीआरए (इंद्रा) नेवी का 8वां संस्करण बंगाल की खाड़ी में 12 दिसम्बर 2015 तक आयोजित किया जाएगा।

- गोल्डनरीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) कोलकाता द्वारा निर्मित (लैंडिंग क्रॉफ्ट यूटिलिटी) 'एलसीयू - एल 55' पांचवां युद्ध पोत भारतीय नौसेना के वाइस एडमिरल के सुपुर्द किया गया है। युद्ध पोत एलसीयू एमके 4 परियोजना का हिस्सा है। वाइस एडमिरल ए वी सुभेदार ने पोत का विधिवत जलावतरण कराया।

- भारतीय तटरक्षक बल ने बंगाल की खाड़ी में पांडिचेरी और दक्षिण तमिलनाडु तट के पास अपनी निगरानी बढ़ाने के उद्देश्य से इंटरसेप्टर बोट 'आईसीजीएस सी-

422' को शामिल किया है|आईसीजीएस सी-422 तटरक्षक बल के लिए बनाया गया 36वां इंटरसेप्टर है| यहबोट कराईकल पर तैनात की जाएगी और एक अधिकारी सहित 11 आईसीजीएस कर्मी इस परसवार रहेंगे|

- गार्डनरीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) द्वारा निर्मित दूसरीपनडुब्बी (लड़ाकू जलपोत) 'कदमत' औपचारिक रूप से कोलकाता में भारतीय नौसेना को सौंप दी गयी है| इसे शीघ्र ही पूर्वी बेड़े में शामिल किया जाएगा|
- पूर्णरूप से स्वदेशी तौर पर विकसित अग्नि-1 मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया। अग्नि-1 परमाणु आयुध ले जाने में सक्षम और 700 किलोमीटर तक कीदूरी पर स्थित लक्ष्य को भेदने की क्षमता रखती है।
- परमाणु सक्षम धनुष मिसाइल का उड़ीसा के पुरी तट से बंगाल की खाड़ी में सफल परीक्षण किया गया है। यह परीक्षण, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा आयोजित किया गया है। यह उन पाँच मिसाइलों में से एक है जिसका निर्माण रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन द्वारा एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (आईजीएमडीपी)के अन्तर्गत किया गया है। सतह से सतह मारक क्षमता युक्त यह मिसाइल पृथ्वी-द्वितीय मिसाइल का नौसैनिक संस्करण है। यह मिसाइल 500 किलोग्राम भार वाले पारंपरिक और परमाणु पेलोड ले जाने में सक्षम है।
- पोखरण फील्ड फायरिंग रेंज से ब्रह्मोस मिसाइल का सफल परीक्षण किया गया। "फायर एंड फॉरगेट" मिसाइल के पास उंचे और नीचे पथ पर उड़ान भर कर शत्रु की हवाई सुरक्षा प्रणालियों से बचते हुए सतह आधारित लक्ष्यों को निशाना बनाने की क्षमता है। इस मिसाइल की रेंज 290 किमी है और इसकी गति 2.8 मैक है। इसे भूमि, समुद्र, सब...सी और हवा से समुद्र तथा भूमि में लक्ष्यों पर दागा जा सकता है। ब्रह्मोस भारत के डीआरडीओ तथा रूस के एनपीओएम का संयुक्त उपक्रम है।
- दक्षिणी नौसैनिक कमान के फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ वाइस एडमिरल सुनील लांबा द्वारा 1 नवंबर 2015 को कोच्चि में नौसेना बेस पर आयोजित एक समारोह में भारतीय तटरक्षक जहाज (आईसीजीएस) अरिजंय का जलावतरण किया गया है|यह जहाज कमांडर तटरक्षक क्षेत्र (उत्तर पश्चिम) के प्रशासनिक और परिचालन नियंत्रण में ओखा बेस पर स्थित होगा| जहाज की कमान कमांडेंट एके मुद्गल के हाथों में होगी|
- ब्रह्मोस मिसाईल के अत्याधुनिक वर्जन का भारत ने परीक्षण किया हैं। इसे नौसेना पोत आईएनएस कोच्ची से प्रक्षेपित किया गया।
- ऑस्ट्रेलिया ने स्काइ मस्टर नामक संचार उपग्रह लांच किया
- नासा ने पृथ्वी का पहला लघु उपग्रह 'क्यूबसेट' लांच किया
- रोचे ने भारत में स्तन कैंसर की नयी दवा लांच की
- डीआरडीओ ने विश्व का सबसे ऊंचा क्षेत्रिय अनुसन्धान केंद्र लदाख में स्थापित किया जिसकी ऊंचाइ 17,600 फीट है
- चीन ने दूरसन्वेदी वाणिज्यिक उपग्रह लांच किया
- आइएनएस अश्त्रधारिणी को विशाखापतनम में जलावतरित किया गया

- नासा के अंतरिक्ष यान ने प्लूटो पर नीला आसमान व बर्फ खोजा
- भारतीय रेल ने अनारक्षित टिकट बुक कराने हेतू एप्प लांच किया
- भारत में मोबाइल में यूसी तथा कम्प्यूटर में गूगल क्रोम सर्वाधिक प्रयोग होने वाले ब्राउजर
- भारत ने 'एस्ट्रोसेट' नामक वैधशाला का सफल प्रक्षेपण किया
- 24 सितम्बर 2015 को भारत के मंगल मिशन ने एक साल पूरा किया
- भारत ने मध्यप्रदेश से टैंकरोधी मिसाइल अमोघ का परीक्षन किया
- इसरो ने केरल में टाइटेनियम स्पंज प्लांट शुरु किया
- भारत ने सतीश धवन अंतरीक्ष केन्द्र से GLSV-D6 लांच किया
- भारत ने सतीश धवन अंतरीक्ष केन्द्र से पांच ब्रिटिश उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण किया
- भारत ने GAGAN (GPS Aided Geo Augmented Navigation) सिस्टम लांच किया
- इसरो ने क्रायोजेनिक इंजन का परीक्षण किया
- सरफेस टू एयर सुपरसोनिक मिसाइल 'आकाश' इंडियन एयरफोर्स का हिस्सा बन गई। ग्वालियर के महाराजपुरा एयरबेस पर डिफेंस मिनिस्टर मनोहर परिकर ने एयर चीफ मार्शल अरुप राहा को मिसाइल की चाबी सौंपी।
- ब्रह्मोस मिसाइल का आइएनएस कोच्ची से परीक्षण

खेल

- मेरिलबोन क्रिकेट क्लब (एमसीसी) ने श्रीलंका के पूर्व खिलाड़ी महेला जयवर्धने को मानद आजीवन सदस्यता से सम्मानित किया है। महेला जयवर्धने इस क्लब में शामिल होने वाले श्रीलंका के 14वें खिलाड़ी हैं।

- ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने भारत के सबसे तेज़ 150 विकेट लेने वाले गेंदबाज बनने का कीर्तिमान स्थापित किया है| अश्विन ने अपने करियर के 29वें मैच में यह कीर्तिमान स्थापित किया|
- भारतीय महिला क्रिकेट टीम आइसीसी रैंकिंग मे चौथे स्थान पर पहुंची, ऑस्ट्रेलिया पहले स्थान पर कायम
- इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के नौवें संस्करण में दो नई टीमें पुणे और राजकोट हिस्सा लेंगी। ये टीमें दो साल का निलंबन झेल रही चेन्नई और राजस्थान रॉयल्स की जगह लेंगी।
- भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने भारत तथा दक्षिण अफ्रिका सीरिज शुरु होने से पहले टॉस के लिये एक विशेष सिक्का जारी किया जिस पर महात्मा गान्धी व नेल्सन मन्डेला की तस्वीरे अंकित है।
- शशांक मनोहर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के नये अध्यक्ष नियुक्त
- दक्षिण अफ्रीका ने भारत को एकदिवसिय तथा टी-टवेंटी सीरिज मे हराया
- वीरेन्द्र सहवाग तथा जहीर खान ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से सन्यास लिया
- विराट कोहली सभी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट टीमों के खिलाफ वनडे शतक बनाने वाले पांचवें खिलाडी बने, अन्य चार खिलाडी - सचिन तेन्दुल्कर, रिकी पोंटिंग, हर्शल गिब्स तथा हाशिम आमला हैं ।

- भारत ने श्रीलंका को टेस्ट सीरिज मे हराया ।विराट कोहली की कप्तानी में यह जीत श्रीलंका की धरती पर 22 साल मिली है ।
- ऑस्ट्रेलिया के शेन वाटसन ने टेस्ट क्रिकेट से सन्यास लिया
- अजिंक्या रहाणे व सानिया मिर्जा को क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया की आजीवन सदस्यता
- ऑस्ट्रेलिया के कप्तान माइकल क्लार्क ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से सन्यास लिया। उनकी कप्तानी मे टीम ने इसी साल विश्व कप जीता था
- एबी डिविलियर्स सौरव गांगुली को पीछे छोडकर वनडे क्रिकेट मे सबसे तेज 8000 रन बनाने वाले खिलाडी बन गये है । जहां गांगुली ने इसके लिये 200 पारियां खेली वहीं डिविलियर्स ने मात्र 182 पारियां खेली
- दक्षिण अफ्रीका के कगिसो रबाडा अपने पहले ही वनडे मैच मे तिकडी बनाने वाले दुनिया के दूसरे खिलाडी बन गये हैं, उनसे पहले बांग्लादेश के ताइजुल इस्लाम ने यह कारनामा किया था
- बांग्लादेश ने पहली बार दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ वन डे सीरिज जीती
- आर अश्विन सबसे तेज 150 विकेट लेने वाले भारतीय गेंदबाज बने
- वसीम जाफर रणजी ट्रोफी में 10000 रन बनाने वाले पहले खिलाडी बने
- ऑस्ट्रेलिया के मिचेल जॉनसन ने सन्यास लिया
- पहला डे-नाइट टेस्ट ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैण्ड के बीच एडिलेड में खेला गया
- वेस्ट इंडिज के गेंदबाज सुनिल नरैन संदिग्ध एक्शन के चलते प्रतिबंधित
- भारतीय टेनिस तारिका सानिया मिर्जा और स्विट्जरलैंड की मार्टिना हिंगिस की शीर्ष वरीयता प्राप्त जोड़ी ने अपना विजय अभियान जारी रखते हुए सीधे सेटों में जीत दर्ज करके डब्ल्यूटीए फाइनल्स का युगल खिताब जीता जो इन दोनों का इस सत्र में कुल नौवां खिताब है।

- पुराने प्रतिद्वंद्वी स्पेन के राफेल नडाल को हराकर स्विट्जरलैंड के रोजर फेडरर ने स्विस इंडोर टेनिस टूर्नामेंट का फाइनल जीत लिया। फेडरर ने नडाल को 6-3, 5-7, 6-3 से पराजित किया।

- चेक गणराज्य ने प्राग में रुस को 3-2 से हराकर वर्ष 2015 के फेड कप का खिताब जीता है।चेक गणराज्य की टेनिस खिलाड़ी कैरोलीना प्लिस्कोवा ने महिला एकल और फिर बारबरा स्त्रीकोवा के साथ युगल मैच जीतकर चेक गणराज्य को पांच वर्षों में चौथी बार टेनिस का फेड कप खिताब जिताने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है|

- विश्व के नंबर 1 टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने एटीपी विश्व टूर के फाइनल मुकाबले में रोजर फेडरर को 6-3,6-4 से हराया।
- सानिया - हिंगिस की जोडी ने चीन ओपन जीता, यह इस जोडी का साल का आठवां खिताब है
- भारत की सानिया मिर्जा तथा स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस ने वुहान ओपन जीता, यह इस जोडी का साल का सातवां खिताब है
- वीनस विलियम्स ने वुहान ओपन महिला एकल का खिताब जीता
- डेविड फेरर ने मलेशियाई ओपन जीता
- नोवाक जोकोविक ने शंघाइ ओपन जीतकर साल का 9 वां खिताब जीता
- साकेत मायनेनी ने वियतनाम ओपन जीता
- यूकी भाम्भरी शीर्ष 100 खिलाडियों की सूची मे पहुंचे, 2010 के बाद ऐसा करने वाले पहले भारतीय बने
- लिएंडर पेस व मार्टिना हिंगिस कि जोडी ने यूएस ओपन मिक्सड डबल खिताब जीता

2015 यूएस ओपन टेनिस

- पुरुष एकल: सर्बिया के नोवाक जोकोविच स्विस खिलाड़ी रोजर फेडरर को हराया
- महिला एकल: इटली की फ्लाविया पेनेटा ने इटली की रोबर्टा विंसी को हराया
- महिला युगल:सानिया मिर्जा (भारत) और मार्टिना हिंगिस (स्विट्जरलैंड) ने केसी डेल्लाक्वा (ऑस्ट्रेलिया) और यारोस्लावा श्वेदोवा (कजाखस्तान) को हराया पुरुष युगल पियरे ह्यूगस हर्बर्ट और निकोलस माहुत की फ्रांसीसी जोड़ी ने जेमी मुर्रे (यूनाइटेड किंगडम) और जॉन साथियों (ऑस्ट्रेलिया) को हराया
- भारत की सानिया मिर्जा तथा स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस ने ग्वांग्जू ओपन जीता, यह इस जोडी का साल का छ:वां खिताब है
- एंडी मरे ने रोजर्स कप जीता
- सानिया मिर्जा को राजीव गान्धी खेल रत्न अवार्ड
- सर्बिया के नोवाक जोकोविच ने विम्बलडन पुरुष एकल खिताब जीता
- सुनिल नागल ने जुनियर विम्बलडन पुरुष एकल खिताब जीता
- लिएंडर पेस व मार्टिना हिंगिस कि जोडी ने विम्बलडन मिक्सड डबल खिताब जीता
- भारत की सानिया मिर्जा तथा स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस ने विम्बलडन महिला युगल जीता
- सेरेना विलियम्स ने विम्बलडन महिला एकल खिताब जीता
- फ्रांस की एमेली मोरेस्मो टेनिस हॉल ऑफ फेम मे शामिल
- ओलंपिक पदक विजेता विजय कुमार ने 59वीं राष्ट्रीय निशानेबाजी चैंपियनशिप के 12वें दिन 13 दिसंबर 2015 को पुरुषों की 25 मीटर सेंटर फायर पिस्टल में स्वर्ण पदक जीता है।
- केरल की खिलाड़ी एलिज़ाबेथ सुसान कोशी ने नई दिल्ली स्थित करणी सिंह शूटिंग रेंज में आयोजित 59 वीं राष्ट्रीय शूटिंग चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीता हैं।
- अपूर्वी चंदेला ने नई दिल्ली स्थित डॉ. कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में 59वीं राष्ट्रीय निशानेबाजी चैंपियनशिप के अंतिम दिन महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता हैं।रियो ओलिंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुकी अपूर्वी ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए यह पदक जीता। राजस्थान की अपूर्वी ने कुल 207.8 अंकों के साथ स्वर्ण पदक जीता।

- भारतीय निशानेबाज जीतू राय ने 13वीं एशियन निशानेबाजी चैंपियनशिप में रजत जीता है। भारत की ओर से सीनियर वर्ग में यह पहला पदक है।
- दीपिका कुमारी व जयंत तालुकदार ने मिश्रित युगल आर्चरी चैम्पियनशिप में चीन को 5 - 3 से हराकर कांस्य पदक जीता हैं।
- भारतीय महिला निशानेबाज हिना सिद्धू ने कुवैत में आयोजित 13वीं एशियाई निशानेबाजी चैंपियनशिप के चौथे दिन 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्णपदक अर्जित किया है|
- 8 वीं एशियाइ एयरगन चैम्पियनशीप: एक नजर
- स्थान-डा. करणी सिह शूटिंग रेंज, नइ दिल्ली
- भारत तालिका मे 17, जिन मे 6 स्वर्ण पदक शामिल पदक जीतकर शीर्ष पर रहा
- 36 वीं राष्ट्रीय आर्चरी चैम्पियनशीप मेरठ मे आयोजित हुई
- अभिषेक वर्मा व दीपीका कुमारी ने आर्चरी विश्व कप मे रजत पदक जीते
- भारत मे आयोजित होगा 2017 का राइफल विश्व कप
- रजत चौहान ने वर्ल्ड आर्चरी चैम्पियनशिप मे रजत पदक जीता
- फीफा की हालिया जारी रैंकिंग में बेल्जीयम पहली बार प्रथम स्थान पर आ गया हैं।टीम ने अर्जेंटिना व विश्व चैम्पियन जर्मनी को पछाड़कर टॉप पर कब्जा किया।

- फीफा ने अध्यक्ष सैप ब्लेटर को बर्खास्त किया
- फीफा ने कुवैत फुटबाल संघ को बर्खास्त किया
- चिली ने अर्जेंटिना को हराकर कोपा अमेरीका कप जीता
- अमेरीका की महिला टीम ने फीफा महिला फुटबाल विश्व कप जीता
- गुरप्रीत सिंह यूरोपिय क्लब के लिये खेलने वाले पहले फुटबालर बने
- चीन के शीर्ष बैडमिंटन खिलाड़ी चेन लांग को विश्व बैडमिंटन महासंघ (बीडब्ल्यूएफ) के पुरुष वर्ग में और स्पेन की कैरोलिना मारिन को महिला वर्ग में प्लेयर ऑफ दि ईयर का खिताब मिला है।

- भारत की पीवी सिंधू ने मकाउ ओपन ग्रांड प्रिक्स गोल्ड टूर्नामेंट में हैट्रिक दर्ज की। मौजूदा चैम्पियन सिंधु ने वुमन सिंगल के फाइनल में जापान मिनात्सु मितानी को हराकर 20,000 डॉलर इनामी टूर्नामेंट जीता। सिंधु नेइस जीत के साथ इसी साल जापान में मितानी से हार का बदला भी ले लिया।
- चीन की ली जुइरुइ ने जीता डेनमार्क ओपन
- अजय जयराम ने डच ओपन जीता
- अजय जयराम कोरिया ओपन में रजत पदक जीतने वाले पहले भारतीय बने
- साइना नेहवाल ने जकार्ता मे वर्ल्ड बेडमिंटन चैम्पियनशिप मे रजत पदक जीता
- अपने कैरियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए भारतीय गोल्फर अनिर्बान लाहिड़ी ने सेनटोसा में एक टूर्नामेंट शेष रहते 15 दिसम्बर 2015 को एशियनटूर ऑर्डर ऑफ मेरिट खिताब अपने नाम कर लिया। दुनिया में 41वें नंबर के गोल्फर लाहिड़ी चौथे भारतीय हैं, जिन्होंने एशियन टूर अपने नाम किया।
- 2016 गोल्फ वर्ल्ड कप मेलबर्न मे होगा
- अनिर्बाण लाहिडी को एशियाइ टूर गोल्फर ऑफ द मंथ अवार्ड
- भारत नोमुरा कप मे 9 वें स्थान पर रहा
- डेनमार्क की एमिली पेडरसन ने हीरो इंडिया ओपन जीता
- अनिर्बाण लाहिडी प्रेसिडेंट्स कप के लिये क्वालिफाइ करने वाले पहले भारतीय बने
- पंजाब नेशनल बैंक ने बेटन कप जीता
- ग्रेट ब्रिटेन ने जोहर कप जीता
- हॉकी इंडिया ने भारतीय खेल प्राधिकरण के साथ किया करार
- भारतीय वायु सेना ने बाबा फरीद कप जीता
- भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने यूरोपियन सीरिज जीती
- भारतीय महिला हॉकी टीम ने रियो ओलम्पिक 2016 के लिये क्वालीफाइ किया
- ऑस्ट्रेलिया ने बेल्जीयम को हराकर हॉकी वर्ल्ड लीग जीती
- ड्रैगफ्लिकर हरमनप्रीत सिंह के हैट्रिक सहित चार गोलों की बदौलत भारत ने पाकिस्तान को आसानी से 6-2 से हराते हुए तीसरी बार जूनियर एशिया कप हॉकी टूर्नामेंट जीत लिया।
- लुइस हैमिल्टन ने यूएस ग्रांड प्रिक्स जीती
- दक्षिण एशियाइ गेम्स 2016 गुवाहाटी व शिलोंग मे होंगे
- भारतीय साइक्लिस्ट होराल्ड देबोरा ने ताइवान कप में पांच पदक जीतकर इतिहास रचा
- अर्जुन अवार्ड विजेता बॉक्सर जय भगवान को रिश्वत लेने के कारण निलंबित किया
- पंकज आडवाणी ने वर्ल्ड बिलियर्डस कप जीता
- 2022 के एशियाइ खेल चीन के हेंगजाउ मे होंगे
- दुनिया के शीर्ष बॉक्सर फ्लायड मेवेदर ने सन्यास लिया
- लुइस हैमिल्टन ने जापान ग्रांड प्रिक्स जीती
- सेबेस्टीयन वेटेल ने सिंगापुर ग्रांड प्रिक्स जीती
- लुइस हैमिल्टन ने इटालियन ग्रांड प्रिक्स जीती

- 2022 के राष्ट्रमंडल खेल दक्षिण अफ्रीका के डरबन मे होंगे
- जमैका के उसेन बोल्ट ने बीजिंग मे आयोजित वर्ल्ड चैम्पियनशिप मे 100 मीटर रेस जीती
- यू मुम्बा ने प्रो कबड्डी खिताब जीता
- 2022 के शीतकालीन ओलम्पिक चीन के बीजिंग मे होंगे
- भारत ने दक्षिण एशियाइ बास्केटबाल चैम्पियनशीप जीती
- लुइस हैमिल्टन ने ब्रिटिश ग्रांड प्रिक्स जीती
- सेबेस्टीयन वेटेल ने हंगरी ग्रांड प्रिक्स जीती
- अमितोज छाबडा ने यूएस पावरलिफ्टिंग चैम्पियनशीप जीती
- निको रोसबर्ग ने मेक्सिको ग्रांड प्रिक्स जीती
- पूर्व भारतीय लंबी कूद महिला खिलाड़ी अंजू बॉबी जॉर्ज को टार्गेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) योजना का चेयरपर्सन नियुक्त किया गया है।

- भारत के सबसे सफल क्यू खिलाड़ी पंकज आडवाणी ने चीन के झुआ शिंतोंग को हराकर आईबीएसएफ विश्व स्नूकर चैम्पियनशिप जीत ली। यह उनके करियर का 15वां विश्व खिताब है।

- मिशेल पेन 6.2 मिलियन ऑस्ट्रेलियाई डॉलर राशि वाली मेलबोर्न कप जीतने वाली पहली महिला जॉकी बनीं| पेन ने प्रिंस ऑफ पेनजेंस (थोरोगब्रेड) घोड़े पर सवार होकर ऑस्ट्रेलिया की सबसे प्रतिष्ठित घुड़दौड़ मेलबोर्न कप में जीत प्राप्त की है|
- न्यूज़ीलैंड ने ऑस्ट्रेलिया को फ़ाइनल में 34-17 से हराकर लगातार दूसरी बार रग्बी विश्व कप जीत लिया है। ऑल ब्लैक्स के नाम से मशहूर न्यूज़ीलैंड दुनिया की पहली टीम है जिसने रग्बी विश्व कप का अपना ख़िताब बरकरार रखा है।साथ ही वह तीन बार रग्बी जीतने वाली विश्व की पहली टीम भी बन गई है।
- यूनियन साइकिलिस्ट इंटरनेशनल द्वारा जारी वर्ल्ड एलीट वीमेन रैंकिंग में देबोरा हेरल्ड को चौथा स्थान प्राप्त हुआ हैं। वे भारत की पहली साइकिलिस्ट हैं जिन्हें यह स्थान प्राप्त हुआ।

BANK EXAMS Today

महत्वपूर्ण दिवस

जनवरी	
दिनांक	**दिवस**
9	भारतीय प्रवासी दिवस
10	विश्व हिंदी दिवस, विश्व हास्य दिवस
15	थल सेना दिवस (भारत)
26	अन्तर्राष्ट्रीय कस्टम दिवस, गणतंत्र दिवस(भारत)
30	कुष्ठ रोग निवारण दिवस (भारत)
फरवरी	
4	विश्व केंसर दिवस
20	अरुणाचल दिवस
28	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस
मार्च	
8	अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस
21	रंगभेद उन्मूलन हेतु अन्तर्राष्ट्रीय दिवस
23	विश्व मौसम विज्ञान दिवस
मार्च का तीसरा रविवार	विश्व विकलांग दिवस
अप्रैल	
7	विश्व स्वास्थ्य दिवस
14	अग्नि शमन दिवस, अम्बेडकर जयन्ती
18	विश्व विरासत दिवस
22	विश्व पृथ्वी दिवस
मई	
1	विश्व मजदूर दिवस
8	विश्व रेडक्रास दिवस
17	विश्व दूर संचार दिवस
24	राष्ट्रमंडल दिवस
जून	
5	विश्व पर्यावरण दिवस
21	विश्व योग दिवस
26	अन्तर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य निषेध दिवस
जुलाई	
11	विश्व जनसंख्या दिवस

अगस्त	
20	सद् भावना दिवस(भारत)
सितम्बर	
5	शिक्षक दिवस(भारत)
8	विश्व साक्षरता दिवस
14	हिन्दी दिवस (भारत)
27	विश्व पर्यटन दिवस
अक्टूबर	
अक्टूबर का पहला सोमवार	विश्व आवास दिवस
8	वायु सेना दिवस(भारत)
9	विश्व डाक दिवस
15	विश्व छात्र दिवस
16	विश्व खाद्य दिवस
21	विश्व शांति दिवस
24	संयुक्त राष्ट्र दिवस
नवम्बर	
14	बाल दिवस
26	भारतीय संविधान दिवस
दिसम्बर	
1	विश्व एडस दिवस
3	विश्व विकलांग दिवस
4	नौसेना दिवस(भारत
10	मानवाधिकार दिवस
11	यूनिसेफ दिवस
14	राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
25	सुशासन दिवस (भारत)

करंट अफेयर्स

- थाईलैंड के मंत्रिमंडल ने राजा के लिए युवराज के नाम की सिफारिश की
- Xenophobia बना डिक्शनरी डॉट कॉम का वर्ड ऑफ दी ईयर
- उत्तर प्रदेश में एशिया का पहला साइकिल हाईवे खुला
- लद्दाख में मनाया जा रहा है नव वर्ष का प्रतीक लोसर पर्व
- आरबीएल बैंक, बजाज फाइनेंस ने को ब्रांडेड क्रेडिट कार्ड लांच किया
- फॉर्च्यून की बिजनैसपर्सन ऑफ दी ईयर सूची 4 भारतीय मूल के सीईओ

- आईआईएससी 2017 के टाइम्स विश्वविद्यालय रैंकिंग में शीर्ष 15 में शामिल
- सातवीं विश्व आयुर्वेद कांग्रेस 2-4 दिसम्बर को कोलकाता में
- इसरो जनवरी 2017 में एक साथ 83 उपग्रह प्रक्षेपित करेगा
- सीमा पार व्यापार में भारत 102वें स्थान पर
- विश्व एड्स दिवस: 1 दिसंबर
- जावडेकर ने की 'वित्तीय साक्षरता अभियान' की शुरुआत
- ओडिशा के मुख्यमंत्री ने टाटा स्टील के गोपालपुर फेरो क्रोम संयंत्र काउद्घाटन किया
- हिमाचल राजभवन ने अपनाया कैशलैस सिस्टम
- ओबीसी सूची में 15 नई जातियों को शामिल करने की मंजूरी
- निहोनियम बना पीरियॉडिक टेबल के तत्वों में एशिया से पहली खोज
- अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग जन दिवस
- पाकिस्तान-चीन के बीच सीधी रेल एवं मालवहन सेवा शुरु
- डीसीबी बैंक ने अपना 'सिप्पी' वॉलेट लांच किया
- भारत की वृद्धि दर 2016-17 में 7.6 प्रतिशत रहने का अनुमान
- राष्ट्रपति ने अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव – 2016 का उद्घाटन किया
- कोंकण 16 अभ्यास शुरु
- आरबीआई ने एमएसएस की सीमा बढ़ाकर 6 लाख करोड़ की
- केपीएमजी, माइक्रोसॉफ्ट ने डिटिजल सेवाओं के लिए मिलाया हाथ
- अमेज़न ने भारत में 'अमेजन लांचपैड' की पेशकश की
- नीति आयोग हर जिले को 5 लाख रुपये ट्रांसफर करेगा
- जल दिवस के रूप में मनाया जाएगा डॉ.अम्बेडकर का जन्मदिन
- नायडू ने 'एपी पर्स' लांच किया
- महाराष्ट्र सरकार महा-वॉलेट शुरु करेगी
- स्वर्ण सिक्कों को बेचने के लिए एमएमटीसी का एसबीआई के साथ समझौता
- पीसा परीक्षण: वैश्विक शिक्षा रैंकिंग में सिंगापुर शीर्ष पर
- पीएसएलवी-सी36 द्वारा रिसोर्ससैट -2ए रिमोट सेंसिंग उपग्रह का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण
- भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ -2016) का उद्घाटन
- रिजर्व बैंक ने नीतिगत ब्याज दरों में नहीं किया बदलाव
- अबू धाबी के नेशनल बैंक और फर्स्ट गल्फ बैंक के विलय को मंजूरी
- अमेरिका ने भारत को दिया 'प्रमुख रक्षा साझेदार' का दर्जा
- भारत आतंकवाद के शिकार देशों में सातवें स्थान पर
- सूचना और प्रसारण मंत्री एम वेंकैया नायडू सिमकॉन 2016 की अध्यक्षता करेंगे
- नाबार्ड हर गांव में दो पीओएस लगायेगा
- पाकिस्तान ने भारतीय कपास से हटाया 'अघोषित' प्रतिबंध
- अल-अजहर विश्वविद्यालय में उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करेगा भारत

- केरल के मुख्यमंत्री ने हरित केरलम अभियान की शुरुआत की
- एसबीआई ने एसबीआई लाइफ में 3.9 प्रतिशत हिस्सेदारी 1,794 करोड़ रुपयेमें बेची
- भारत, वियतनाम ने परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किये
- बेंगलुरु में बना देश का पहला हेलीकॉप्टर पायलट संस्थान
- भ्रष्टाचार के खिलाफ केरल सरकार ने मोबाइल अनुप्रयोग का शुभारंभ किया
- मोटेरा को मिलेगा दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम का खिताब
- राष्ट्रपति ने '100 मिलियन के लिए 100 मिलियन' अभियान आरंभ किया
- कश्मीर में पहली बार चली चिल्ड्रन स्पेशल ट्रेन 'वादी की सैर'
- दक्षिण कोरिया की राष्ट्रपति पर महाभियोग
- फोर्ब्स की रईस अमेरिकी उद्यमियों की लिस्ट में दो NRI
- सातवां भारत-मालदीव संयुक्त सैन्य अभ्यास 15 से शुरू होगा
- भारत-रूस की नौसेना का संयुक्त युद्धाभ्यास 'इंद्र नेवी'
- देश की पहली पानी में चलने वाली बस पंजाब में शुरू
- भारत रक्षा पर चौथा सबसे ज्यादा खर्च करने वाला देश
- पीएनबी का मोबाइल वॉलेट किटी लॉन्च
- रेल्वे एसबीआई के बीच 10000 पीओएस लगाने के लिये समझौता
- फोर्ब्स सूची में दुनिया के 9वें सबसे ताकतवर व्यक्ति नरेंद्र मोदी
- मैडोना की बायोपिक 2016 की बेस्ट अनप्रोड्यूस्ड स्क्रिप्ट
- कतर ने 'काफला' श्रम प्रणाली समाप्त की
- पांचवां भारत-अरब साझेदारी सम्मेलन मस्कट में संपन्न
- भारत नवाचार चार्ट में एशिया में सबसे आगे
- नीति आयोग ने कैशलेस अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए दो योजनाओं का ऐलान किया
- ई-पर्यटक वीजा 161 देशों के नागरिकों को
- राजस्थान में 'अन्नपूर्णा रसोई' की शुरुआत
- टाटा अस्पताल मुंबई ने 100% 'कैशलेस' लेनदेन किया
- डिजिटल भुगतान के लिये आरबीआई ने एमडीआर घटाया
- बिपिन रावत होंगे नए सेना प्रमुख, धनोआ वायुसेना प्रमुख
- राजीव जैन होंगे नए IB प्रमुख
- कोयंबटूर नगर निगम को डिजिटल इंडिया सिल्वर अवार्ड
- मणिपुर के मुख्यमंत्री ओकराम इबोबी ने दो और जिलों का उद्घाटन किया
- थावरचन्द गहलोत ने 'सांझी सांझ' अखबार का विमोचन किया
- सरकार कॉल ड्राप के लिये टॉल फ्री नंबर 1955 शुरू करेगी
- घर पर पैसे पहुंचाने के लिये यस बैंक ने ओला कैब्स के साथ साझेदारी की
- प्रॉविडेंट फंड खातों (PF) पर ब्याज दर घटाकर 8.65% की गई
- प्रियंका बनीं राज्य पर्यटन की ब्रैंड ऐंबैसडर

- रेलवे ने दोगुना किया रेल हादसों के पीड़ितों का मुआवजा
- पीयूष गोयल ने वेब पोर्टल 'कोल मित्र' लांच किया
- राष्ट्रीय शिक्षुता प्रशिक्षण योजना
- मानवता, पावर और आध्यात्मिकता पर 9वां विश्व संगम
- दिल्ली के उप-राज्यपाल नजीब जंग ने दिया इस्तीफा
- 2016 में दिल्ली रहा भारत का सबसे ज़्यादा पढ़ने वाला शहर: अमेज़न
- आधार के जरिए भुगतान को आसान बनाने के लिए केंद्र सरकार ऐप शुरू करेगी
- अमेरिकन टूरिस्टर ने विराट कोहली को ब्रांड एम्बेसडर नियुक्त किया
- बांग्ला कवि और आलोचक शंख घोष को मिलेगा 52वां ज्ञानपीठ पुरस्कार
- सनी लियोनी बनी 'पेटा पर्सन ऑफ द ईयर'
- मोबाइल एप 'स्मार्ट कंज्यूमर' और ओसीएमसी शुरू
- राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस: 24 दिसंबर
- सुशासन दिवस: 25 दिसम्बर
- राष्ट्रीय किसान दिवस: 23 दिसंबर
- विदेश मंत्रालय ने लॉन्च किया 'ट्विटर सेवा' ऐप
- भारत में दूसरी पीढ़ी की प्रथम एथनॉल जैव-रिफाइनरी बठिंडा में स्थापित कीजाएगी
- अग्नि-5 मिसाइल का सफल परीक्षण
- मिथुन चक्रवर्ती ने राज्यसभा से दिया इस्तीफा
- रेलवे ने 'फोग अलर्ट' की शुरुआत की
- ओडिशा में चलेगा मलेरिया उन्मूलन अभियान 'दमन'